आपकी अपनी साहित्यिक पत्रिका

संपर्क भाषा भारती

samparkbhashabharati@gmail.com

वर्ष 1990 से नई दिल्ली से प्रकाशित
साहित्य-समाज को समर्पित राष्ट्रीय मासिकी,
अगस्त–2024, RNI-50756
वर्ष-33, अंक-405 मूल्य 150/-

अपनी बात...

प्रिय समस्त!

अगस्त मास भारतीयता के विभिन्न रंग और आयाम ले कर उपस्थित होता है। उच्चतम ग्रीशम के बाद प्रतीक्षित बादलों का आगमन होता है। प्रकृति और जन-जीव आनंदित हो उठते हैं। चारों ओर हरियाली..... प्रकृति का विशाल वैभव निमंत्रित करता डोलता है। नदियों की अथाह जल राशि किसी मुदित बालक की तरह चारों ओर घुटने के बल किलकारी करता हुआ दौड़ लगाने लगता है।

इसी अगस्त मास में हम हिन्दी साहित्य के तीन पुरोधाओं को स्मरण कर रहे हैं।

स्वर्गीय विष्णु प्रभाकर की स्मृतियों की लेखिका हैं प्रख्यात रचनाकर एवं साप्ताहिक हिंदुस्तान की पूर्व संपादक शीला झुनझुनवाला जी का जिसे कि उनकी फेसबुक पोस्ट से लिया है।

श्री राम दरश मिश्र जी शतक लगा चुके हैं। उनके दीर्घ जीवन की शुभकामना है। उन पर केन्द्रित आलेख को आप सब केलिए विशेषरूप से तैयार किया है उनके ही परिचित, उनके ही ग्राम के निवासी श्री शशि बिन्दु मिश्र ने।

स्वर्गीय मनोहर श्याम जोशी के साहित्यिक अवदान से कौन परिचित नहीं है। अल्मोड़ा में जन्मे, लखनऊ की सरजमीं पर अल्प अवधि को टिके, फिर मुख्यरूप से दिल्ली बसे मनोहर श्याम जोशी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनको स्मरण कर रहे हैं , भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी एवं वर्तमान में अहमदाबाद सर्कल के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव।

जैसा कि आप सब को विदित ही है संपर्क भाषा भारती मासिक पत्रिका का प्रकाशन वर्ष 1990 से आप सब के सहयोग से निरंतर किया जा रहा है।

पत्रिका कोविड पूर्व प्रिंट रूप में निकलती थी किन्तु कोविड के दौरान व्याप्त वितरण अव्यवस्था के कारण से इसे डिजिटल ही निकाला जाता है। तथैव, पत्रिका के प्रति पाठकों का लगाव न केवल बराबर बना हुआ है बल्कि उसमें वृद्धि भी हुई है।

पत्रिका प्रत्येक माह अपने 5000 पाठकों तक ईमेल माध्यम से पीडीएफ़ रूप में निरंतर पहुँच रही है। इसके साथ ही पत्रिका के समस्त अंक पाठकों की सुविधा केलिए www.newzlens.in पर भी बराबर उपलब्ध रहते हैं और देश-विदेश के पाठकों द्वारा पढे जाते हैं।

संपर्क भाषा भारती की इस अभूतपूर्व सफलता में आप सब का महती योगदान है।

आप से अनुरोध है कि आप सब अपना सहयोग इसी प्रकार बनाए रखें।

सादर,

सुधेन्दु ओझा
(संपादक)

संपर्क भाषा भारती : प्रधान संपादकीय कार्यालय : सुधेन्दु ओझा (संपादक), ग्राम : मकरी, पोस्ट भुइंदहा, पृथ्वीगंज, प्रतापगढ़-230304
पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, दिल्ली पत्र व्यवहार का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

"संपर्क भाषा भारती" हिन्दी साहित्य की आपकी परिचयिका...

संपर्क भाषा भारती

मुख्य संपादक : सुधेन्दु ओझा
प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

संपर्क भाषा भारती क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में संबद्धता के लिए पत्रिकाओं का स्वागत

आप अपनी रचनाएँ,

गोष्ठी/सम्मान समारोह संबंधी सूचना फोटो सहित

स्वयं www.newzlens.in पर सब्मिट कर सकते हैं ...

सभी पत्रिकाएँ डाऊनलोड के लिए www.newzlens.in पर उपलब्ध हैं...

अगस्त-2024

क्रम:	शीर्षक	लेखक:	पृष्ठ संख्या
1	संपादकीय		2
2	साहित्यिक समाचार		6
3	कविता	डॉ वीरेंद्र प्रसाद	9
4	लघुकथा/कविता	दीपक कुमार/वंदना सहाय	10
5	लघुकथा	सीताराम गुप्त/प्रिय देवांगन	13
6	दो कवितायें	संजय वर्मा 'दृष्टि'/कृष्ण चन्द्र	14
7	कविता	विकास कुमार शर्मा	15
8	कविता	विकास तिवारी/विनोद वर्मा	15
9	पाश्चात्य संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में	डॉ दिनेश कुमार नेगी	17
10	अमीर खुसरो का काव्य : एक अनुशीलन....	छविन्दर कुमार	22
11	यादों के गलियारे से : विष्णु प्रभाकर	शीला झुनझुनवाला	27
12	राजकुमार कुम्भज की दो कवितायें	राजकुमार कुम्भज	34
13	घुड़सवार योद्धा....	गोवर्धन दास बिन्नाणी	35
14	दूध का ऋण	डॉ गोपाल कृष्ण शर्मा	36
15	कविता	अशोक दर्द	37
16	कहानी : आँधी के बाद	अशोक दर्द	38
17	लघुकथा : परवाह	सीता राम गुप्त	43
18	कविता	अंकुर सिंह	44
19	बेलगाम सोशल मीडिया	नवीन कुमार जैन	45
20	लघुकथा : एक समझौता पत्र	डॉ नीरू मित्तल 'नीर'	47
21	कविता	प्रतिमा पुष्प	51
22	कविता	सरोज शर्मा भारती	51
23	कविता	अंकुर सिंह/राजेंद्र ओझा	52
24	कविता	सोनल मंजू श्री ओमर	55
25	कविता	प्रतिमा पुष्प	55
26	ऊतर आधुनिकतावादी थे मनोहर श्याम जोशी	कृष्ण कुमार यादव	57
27	लघुकथा	वंदना सहाय	61
28	वह यादगार पल	डॉ सतीश बब्बा	64
29	कविता	मोती लाल दास डोंगाकाटा	69

30	दो लघुकथाएं	वंदना सहाय	69
31	कविता	बबिता सिंह	72
32	कहानी : समाजवाद का हमशक्ल	पूरन सरमा	73
33	कविता	निरमाला कुमारी	74
34	शताब्दिसाहित्यकार डॉ रामदारश मिश्र	शशिबिंदु नारायण मिश्र	75

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

साहित्यिक समाचार

समयगत सच्चाइयों की प्रखर कथा लेखिका है

डॉ पुष्पा जमुआर

कथाकार शमोएल अहमद ने कहा भी है कि कहानी को हम पढ़ते नहीं बल्कि कहानी खुद को पढ़वाती है l और ऐसी ही कहानी आगे चलकर साहित्य जगत की धरोहर बन जाती है l प्रेमचंद चंद्रधर शर्मा गुलेरी हो या रेणु, रा ॅबिन शा पुष्प ,धर्मवीर भारती, शमोयल अहमद हो, अवधेश प्रीत, कृष्णा सोबती हो या ममता कालिया, ऐसे सैकड़ो, नये और पुराने युग के कथाकार हैं, जिनकी कहानियां को पढ़ते हुए आज भी हम बोझिलता का अनुभव नहीं करते बल्कि बार-बार उसे पढ़ने में दिलचस्पी रखते हैं l ऐसे ही कथाकारो में एक नाम डॉ पुष्पा जमुआर का भी आता है जिनकी कहानियों को पढ़ते वक्त, वैसी ही सहजता और जीवंतता का अनुभव होता है l उनकी कहानियों में समयगत सच्चाई, पुख्ता सबूत के साथ रेखांकित होती है, वह भी बिना अधिक व्याख्या किए और बिना अधिक शब्दों को खर्च किए हुए l उनकी कहानियों में यही कसावटपन, समयगत सच्चाई, तथा भाषा की सहजता कथाकारों को फिर से अलग-अलग ला खड़ा करती है l और मूल्यांकन के लिए बहुत अधिक पढ़ने की जरूरत भी नहीं है बल्कि उनकी मात्र एक कहानी " अब नहीं " को पढ़कर हम इस बात का एहसास करते हैं कि समयगत सच्चाइयों की प्रखर कथा लेखिका है डॉ पुष्पा जमुआर।

भारतीय युवा साहित्यकार परिषद के तत्वावधान में, गूगल मीट के माध्यम से, फेसबुक के अवसर साहित्यधर्मी पत्रिका के पेज पर,हेलो फेसबुक कथा सम्मेलन का संचालन करते हुए संयोजक सिद्धेश्वर ने उपरोक्त उद्गार व्यक्त किया l अवधेश प्रीत की कहानी बारिश का पाठ उपाध्यक्ष ऋचा वर्मा ने किया और कहा कि कथा सृजन में अवधेश प्रीत अपने अलग प्रतिमान गढ़ते हैं l अपने समीक्षात्मक डायरी का पाठ करते हुए सिद्धेश्वर ने अवधेश प्रीत की कहानी बारिश पर कहा कि कहानी,जिसमें कथाकार क्या कहना चाहता है वह अंत के पहले प्रकट नहीं हो पाता, वह सफल कहानी मानी जाती है l क्योंकि अंत अंत तक पाठक में उत्सुकता बनी रहती है l बारिस के प्रति आकर्षण, और दूसरी तरफ अपनी नौकरी में विलंब से पहुंचने के भय के सामंजस्य को, लेखक इस प्रकार अपनी कहानी का विषय बनाता है, जो अंत अंत तक पाठकों के भीतर एक उत्सुकता बनाए रखती है l बारिश कहानी के माध्यम से भी हम कह सकते हैं कि सामाजिक मनोविज्ञान के जीवंत कथाकार है अवधेश प्रीत l

अपने अध्यक्षीय टिप्पणी में सुप्रसिद्ध कथाकार अवधेश प्रीत ने कहा कि डॉ पुष्पा जमुआर जी समर्थ लेखिका हैं. प्रस्तुत कहानी ' अब नहीं ' में उनका सामर्थ्य दिखता है. कहानी कहने का हुनर भी खूब है. कथ्य के लिहाज़ से यह एक परंपरागत भारतीय स्त्री की रूढ़ छवि के बरक्स, अपने स्वाभिमान और स्वात्तता को तरज़ीह देने वाली स्त्री की कहानी है. ख्य अतिथि वरिष्ठ लेखिका पुष्पा जमुआर ने कहा कि अपने पटल पर हर बार एक वरिष्ठ साहित्यकार को मुख्य अतिथि के रूप में पेश कर सिद्धेश्वर जी नए एवं पुराने साहित्यकारों के लिए बहुत बड़ा कार्य कर रहे हैं उन्हे साधुवाद है। कोरोना काल में किया गया उनका यह अभिनव प्रयोग आज तक चर्चा में है और देशभर के लिए अनुकरणीय भी l

लगभग 30 मिनट तक अध्यक्ष अवधेश प्रीत ने कहानी की बुनावट एवं उसकी सृजनात्मक पहलू पर विशेष चर्चा किया l एक अच्छी कहानी में घटनाओं का दोहराव नहीं होना चाहिए l घटना भले पुरानी हो किन्तु उसे प्रस्तुत करने का ढंग नया होना चाहिए l हमें सोचना होगा कि एक ही तरह की सैकड़ो प्रेम कहानी पर बनी फिल्मों में कोई हिट कर जाता है कोई फ्लॉप क्यों कर जाता है?

सिद्धेश्वर द्वारा चलाया जा रहा यह अभिनव प्रयोग नए पुराने रचनात्मक सक्रियता की पहचान है l इस कथा सम्मेलन में प्रस्तुत की गई कहानियों में

स्त्री जीवन के बीहड़ों में उतरकर यथार्थ का उच्छेदन करती कहानी अपने ट्रीटमेंट से प्रभावित करती है.

हालांकि कुछ कहानी ऐसी जरूर है कि एक अच्छी कहानी बनने की सम्भावना के बावज़ूद इसे लघुकथा का आकार क्यों दिया गया,नहीं पता, पर इसका कथ्य नया है, दिलचस्प है. नई स्त्री की निर्मिति को इंगित करती कथा अच्छी बन पड़ी है.क्या यह लघुकथा ही है?

हेलो फेसबुक कथा सम्मेलन में डॉ पूनम श्रेयसी ने अजब प्रेम की गजब कहानी,कहानी का पाठ किया lऑनलाइन कथा पाठ करने वालों में इनके अतिरिक्त अन्य रचनाकारों में प्रमुख थे - सरला मेहता, रश्मि लहर,निधि गौतम,राज प्रिया रानी, निर्मल करण,डॉ अनुज प्रभात, आकाश, खुशबू अग्रवाल, सुनील कुमार उपाध्याय, जयदीप,रामलाल

सिंह, रजनी श्रीवास्तव अनंता,विज्ञान व्रत , हजारी सिंह, इंदु उपाध्याय, दुर्गेश मोहन आदि l

ध्रुपद घराने की 'ऋतु मिश्रा ' आज की एक जगमगाता सितारा

ऋतु मिश्रा बेतिया ध्रुपद घराना के सुप्रसिद्ध ध्रुपद गायक पंडित इंद्र किशोर मिश्रा की पुत्री हैं l उनके संगी प्रख्यात गायक राकेश मिश्रा बेतिया पश्चिम चंपारण के रहने वाले हैं l उन्होंने संगीत की शिक्षा अपने गुरु पंडित धर्मनाथ मिश्रा और अपने ससुर ध्रुपद गायक से ली l ऋतु मिश्रा बेतिया ख्याल गायकी की शिक्षा अपने पिता जी से ली और उसके बाद पी.एच. डी करने इलाहाबाद चली गई l उनका बिषय था बेतिया राज ध्रुपद घराना l

हमारे मंच पर संगीत के विशेषज्ञ अपनी कला का साक्षात परिचय देते हैं, यह गर्व की बात है l ऋतु मिश्रा पहले भी इस मंच पर आ चुकी है l ध्रुपद घराना के गीतों को वह बहुत सधे हुए अंदाज में प्रस्तुत करती है l यानि ध्रुपद घराने की ऋतु मिश्रा आज की जगमगाता सितारा है l

सधे हाथों से वास्तविक चित्र को कैनवास पर उतारना ,वह भी बगैर शिक्षण के, बहुत कम देखने को मिलता है l वैसे इस तरह के चित्रों की अलग खासियत और महत्व रहा है, आरंभ से अब तक l

भारतीय युवा साहित्यकार परिषद के तत्वाधान में, फेसबुक के अवसर साहित्यधर्मी पत्रिका के पेज पर आयोजित 'ऑनलाइन हेलो फेसबुक संगीत एवं चित्रकला सम्मेलन' के प्रथम सत्र में ध्रुपद गायिका ऋतु मिश्रा के द्वारा ध्रुपद संगीत एवं कुछ फिल्मी गीत की संगीतमय प्रस्तुति के पश्चात अपनी डायरी प्रस्तुत करते हुए, संस्था के अध्यक्ष सिद्धेश्वर ने उपरोक्त उद्गार व्यक्त किया l उन्होंने कहा कि नए पुराने कई ऐसे गायक एवं चित्रकार हैं जो अपनी कला के माध्यम से अचानक हमारे सामने आते हैं और हमें चकित कर देते हैं l इस कार्यक्रम की महत्वपूर्ण उपलब्धि रही कनाडा से युवा कलाकार राजेंद्र नाथ द्वारा प्रस्तुत हिंदी फिल्मी गीत l

अपने अध्यक्षीय टिप्पणी में विख्यात शायर और चित्रकार विज्ञान व्रत ने संगीतमय प्रस्तुति एवं सैकड़ो प्रस्तुत चित्रकला पर अपनी अलग-अलग प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि पूनम श्रेयसी जी की लगभग सभी कलाकृतियों में चटख रंगों का बेहतरीन संयोजन है l मिथिलेश कुमार की कलाकृतियों में असीम संभावनाएं हैं l सिद्धेश्वर की कलाकृतियां बहुउपयोगी है l इस मंच पर प्रस्तुत सभी कलाकृतियां रचनात्मकता का प्रधान्य है l सिद्धेश्वर जी वास्तव में इस अनुष्ठान के मूल सूत्रधार तथा बधाई के अधिकारी भी l

इंदु उपाध्याय ने भी एक ग़ज़ल प्रस्तुति किया तो दूसरी तरफ पूनम श्रेयसी, राज प्रिया रानी, एस कुमार तथा सिद्धेश्वर ने मूल फिल्मी गीत पर जीवंत अभिनय किया l

अवसर साहित्य यात्रा के वाट्सएप पेज पर " चित्रकला एवं संगीत " पर आयोजित कार्यशाला सह पाठशाला में अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभानेवालों में प्रमुख थे सर्व श्री विज्ञान व्रत, मिथिलेश कुमार , संजय राय,शशि भूषण बदोही,सुमन कुमार, रश्मि लहर, सिद्धेश्वर ,जयंत,डॉ पूनम श्रेयसी, एस कुमार , रतन वर्मा, जयंत, राज, राज प्रिया रानी, अनिता रश्मि,अर्चना खंडेलवाल,दिनेश कौशल, सीमा डांस, कुमारी स्मिता, अन्वी अनंता, स्वाभिमान पत्रिका के संपादक नरेश कुमार आष्टा आदि।

इस कार्यक्रम में संपादक गायक व संगीतकार नरेश कुमार आष्टा ने सिद्धेश्वर की कलाकृतियां पर बनाया गया वीडियो भी प्रस्तुत किया l पूरे समारोह की प्रभारी राज प्रिया रानी ने इसे नए पुराने रचनाकारों के लिए अद्भुत मंच बतलाया और इस सक्रियता के लिए पूरे कार्यक्रम के सूत्रधार सिद्धेश्वर के प्रति विशेष धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रयोगधर्मी साहित्यकारों में भी दिख रहा है कला एवं संगीत के प्रति समर्पण

साहित्य के साथ - साथ कला के प्रति समर्पण बहुत कम लोगों में देखा गया है l चित्रकला के प्रति अभिरुचि होना और उसके प्रति समर्पित होकर चित्रकला को अपने जीवन का एक अंग बनाना, दोनों अलग-अलग बातें हैं l लेकिन हमारे इस चित्रकला एवं संगीत पाठशाला सह कार्यशाला में प्रस्तुत की गई नए पुराने कलाकारों की कलाकृतियों में न सिर्फ रंगों की खूबसूरती है वल्कि रेखाओं की अद्भुत अभिव्यक्ति भी परिलक्षित है l रंगीन कलाकृतियों के अतिरिक्त कई स्वेत- श्याम चित्र भी कला की दृष्टि से उत्कृष्ट नमूना देखने को मिला है! समकालीन कला के लिए यह शुभ संकेत है l प्रयोगधर्मी साहित्यकारों में भी दिख रहा है कला एवं संगीत के प्रति समर्पण l

भारतीय युवा साहित्यकार परिषद के तत्वधान में , फेसबुक के अवसर साहित्य यात्रा के पेज पर ऑनलाइन अवसर साहित्य पाठशाला के 49 वें एपिसोड में, पूरे देश में पहली बार इस तरह का साहित्यिक पाठशाला का ऑनलाइन आयोजन करने वाले संयोजक सिद्धेश्वर ने, संचालन के क्रम में उपरोक्त उद्गार व्यक्त किया l उन्होंने कहा कि हमें खुशी है कि कई नए रचनाकार इस पाठशाला में शामिल हो रहे हैं और लाभ उठा रहे हैं l

अवसर साहित्य यात्रा के व्हाट्सएप पेज पर " चित्रकला एवं संगीत "

पर आयोजित कार्यशाला सह पाठशाला में अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभाने वाले कलाकारों और संगीतकरो में प्रमुख थे, सर्व श्री विज्ञान व्रत, मिथिलेश कुमार , संजय राय,शशि भूषण भदोही,सुमन कुमार, रश्मि लहर, सिद्धेश्वर , डॉ पूनम श्रेयसी, एस कुमार , रतन वर्मा राज, राज प्रिया रानी, अनिता रश्मि,अर्चना खंडेलवाल,दिनेश कौशल, सीमा डांस, कुमारी स्मिता, अन्वी अनंता, आदि ।इस कार्यक्रम में स्वाभिमान पत्रिका के संपादक नरेश कुमार आस्ता ने सिद्धेश्वर की कलाकृतियां पर बनाया गया वीडियो प्रस्तुत किया ।

संगीतमय प्रस्तुति एवं सैकड़ो चित्रकला की प्रस्तुति पर अपनी अलग-अलग प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए विख्यात चित्रकार एवं शायर विज्ञान व्रत ने कहा कि पूनम श्रेयसी जी की लगभग सभी कलाकृतियों में चटख रंगों का बेहतरीन संयोजन है। मिथिलेश कुमार की कलाकृतियों में असीम संभावनाएं हैं । सिद्धेश्वर की कलाकृतियां बहु उपयोगी है। इस मंच पर प्रस्तुत सभी कलाकृतियां रचनात्मकता का प्रधान्य है । सिद्धेश्वर जी वास्तव में इस अनुष्ठान के मूल सूत्रधार तथा बधाई के अधिकारी भी ।

प्रभारी राज प्रिया रानी ने कहा कि इस मंच की उपलब्धि है कि बाल कलाकार भी अपनी कलाकृतियों से हमें आकर्षित कर रहे हैं । यह हमारा सौभाग्य है कि विज्ञान व्रत जैसे महान कलाकार इसकी अध्यक्षता कर रहे हैं । अधिकांश कलाकारों की कलाकृतियां अद्भुत है और उनकी कल्पना शक्ति को नमन ।

संयोजक सिद्धेश्वर ने कहा कि बिना प्रशिक्षण प्राप्त किये लोगों की भी एक से बढ़कर एक कलाकृतियां इस पटल के माध्यम से हमारे सामने आ रही है । संजय राय की कलाकृतियां सबसे अलग और विशिष्ट है । वही मिथिलेश कुमार की कलाकृतियों में रंगों का अद्भुत संयोजन है । पूनम श्रेयसी भी रंगों का बेहतर प्रयोग करने लगी है ।

चर्चित चित्रकार संजय रॉय ने कहा कि इस पटल पर प्रस्तुत की गई कलाकृतियों को देखकर लगता है कि गतिशील रेखाओं का समृद्ध संसार है । एस कुमार ने कहा कि साहित्य भी एक मधुर संगीत के समान है, समझिए और गाइये । यहां पर कर्कश आवाज़ को नकार दिया जाता है । वैसे संगीत के राग अलग-अलग होते हैं । पसंद अपनी -अपनी । संतोष मालवीय ने कहा कि सभी कलाकृतियां कुछ न कुछ अपना भावपक्ष स्थापित करती है। सिद्धेश्वर जी की कूची को नमन । बिहारी लाल प्रवीण ने कहा कमाल के रेखाचित्र है विज्ञान व्रत । वही संजय राय के कलाकृति भी अद्भुत है । सीमा रानी ने कहा कि साहित्य के क्षेत्र में एक से बढ़कर एक कलाकार भी है । शशि भूषण भदोही ने कहा कि विज्ञान व्रत एवं मिथिलेश कुमार जी की कलाकृतियां बेहतरीन लगी । साथ ही सिद्धेश्वर की कलाकृतियां भी अद्भुत और आकर्षक है । दिनेश कौशल जी के बनाए पोर्ट्रेट बेहतरीन लगे । विजया कुमारी मौर्या ने कहा कि सिद्धेश्वर जी द्वारा संयोजित यह ऐसा मंच है जहां साहित्य, कला, फिल्म सब कुछ देखने को मिलता है।

महीने के प्रथम सप्ताह सोमवार से शनिवार तक, व्हाट्सएप के अवसर साहित्य यात्रा पेज पर चलने वाली पाठशाला सह कार्यशाला का समापन रविवार को गूगल मीट के माध्यम से फेसबुक के अवसर साहित्यधर्मी पत्रिका के पेज पर हेलो फेसबुक संगीत एवं चित्रकला सम्मेलन के साथ हुआ ।

बाल साहित्य का सृजन मानसिक विकास और सकारात्मक दिशा का बोध कराए

बच्चों के विकास की ओर हमारा ध्यान बहुत कम जाता है । जबकि हम यह मान रहे होते हैं कि देश के कर्णधार बच्चे ही होते हैं । बच्चों का सर्वांगीण विकास ही देश को एक ऊंचाई प्रदान करता है । देश हो, समाज हो या बच्चे , उसे एक नई दिशा देने में साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है । इसलिए इसमें दो मत नहीं कि बच्चों के विकास में बाल साहित्य की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है । और सच यह भी है कि बाल साहित्य का सृजन करना अन्य साहित्य की सृजनात्मक विधा के अपेक्षा थोड़ा कठिन और जोखिम भरा है । जोखिम भरा इसलिए कह रहा हूं क्योंकि बच्चों की कच्ची मानसिता के अनुरूप ऐसे साहित्य का सृजन करना होता है, जो गलत प्रभाव न डालकर, उसे सकारात्मक दिशा की ओर प्रेरित कर सके । बाल साहित्य का सृजन मानसिक विकास और सकारात्मक दिशा का बोध कराए ।

यह अलग बात है कि समय के साथ-साथ , बाल साहित्य के विषय वस्तु में भी अभूतपूर्व परिवर्तन हुए हैं । अब बच्चे चांद तारों को भी विज्ञान से जोड़कर देखते हैं । और उनके लिए लिखे जा रहे, बाल साहित्य के अंतर्गत बाल कहानी अथवा बाल कविता गीत ग़ज़ल में भी सिर्फ जानवर या फूल- पत्ते, पौधे नहीं आते बल्कि, हमारे जैसे इंसान यानी घर- परिवार, समाज के हम लोग भी आते हैं ।

भारतीय युवा साहित्यकार परिषद के तत्वधान में , फेसबुक के अवसर साहित्यधर्मी पत्रिका के पेज पर ऑनलाइन अवसर साहित्य पाठशाला के 46 वें एपिसोड में, पूरे देश में पहली बार इस तरह का साहित्यिक पाठशाला का ऑनलाइन आयोजन करने वाले संयोजक सिद्धेश्वर ने, संचालन के क्रम में उपरोक्त उद्गार व्यक्त किया । उन्होंने कहा कि हमें खुशी है कि कई नए रचनाकार इस पाठशाला में शामिल हो रहे हैं और लाभ उठा रहे हैं । सिद्धेश्वर ने कहा - बाल साहित्य सृजन करने वाले लेखक यह जानते हैं कि बच्चों के लिए लिखी जा रही कहानी, कविता आदि सहज और सुबोध भाषा में होनी चाहिए । व्याकरण और भाषा के हिसाब से शुद्ध और मनोरंजन होने के साथ-साथ उनके अपने जीवन के लिए उपयोगी भी होनी चाहिए । भारतीय

संस्कृति, रहन-सहन और अपने अभिभावकों के प्रति उचित आचरण करना, बाल साहित्य का मूल उद्देश्य होना चाहिए 1 अपने अध्यक्षीय टिप्पणी में गोविंद भारद्वाज ने लिखा है कि आजकल बाल साहित्य केवल बाल साहित्यकारों के लिए या पुरस्कारों के लिए लिखा जा रहा है। किंतु एक सच यह भी है कि बड़ा कठिन है बाल रचना का कार्य 1 छोटी-छोटी बातों को ध्यान रखना पड़ता है ताकि बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव न पड़े। सिद्धेश्वर ने बाल साहित्य पर कार्यशाला सह - पाठशाला चलाकर एक बेहतरीन कार्य किया है 1 निश्चित तौर पर इस कार्य से बाल रचनाओं के प्रति हमारा झुकाव बढ़ेगा 1 इस सप्ताह के प्रभारी डॉ अनुज प्रभात ने कहा कि इस सप्ताह एक से बढ़कर एक बार कहानी और कविताएं प्राप्त हुई इस पेज पर 1 मुझे आश्चर्य हुआ कि साहित्य सीजन में बाल साहित्य सीजन के प्रति अद्भुत विकास हुआ है ।संतोष मालवीय ने लिखा कि सिद्धेश्वर एवं गोविंद भारद्वाज की बाल कविता बच्चों के लिए ज्ञानवर्धक है 1 पत्रिकाओं में अशुद्ध रचनाओं के प्रकाशन पर, बिहारी लाल प्रवीण ने कहा कि मेरी समझ से ऐसी पत्रिकाओं को ख़ारिज कर देना चाहिए, जिसके संपादक अशुद्ध रचना को बिना शुद्धिकरण के रचनाओं को प्रकाशित करते हैं 1 सिद्धेश्वर ने कहा निश्चित तौर पर संपादकों का दायित्व बनता है कि वे रचनाओं को शुद्ध कर प्रकाशित करें 1 विज्ञान व्रत ने बाल रचनाओं की प्रस्तुति को अपने अलग ढंग से प्रशंसित किया 1 घनश्याम कालजयी ने पहली बार बाल कविता के नाम पर बाल ग़ज़ल प्रस्तुत किया 1

महीने के प्रथम सप्ताह सोमवार से शनिवार तक, व्हाट्सएप के अवसर साहित्य यात्रा पेज पर चलने वाली पाठशाला सह - कार्यशाला का समापन रविवार को गूगल मीट के माध्यम से फेसबुक के अवसर साहित्यधर्मी पत्रिका के पेज पर हेलो फेसबुक बाल साहित्य सम्मेलन के साथ हुआ 1 इस सप्ताह अवसर साहित्य यात्रा के पेज पर बाल साहित्य पाठशाला एवं कार्यशाला के अंतर्गत बाल कविता, बाल कहानी प्रस्तुत करने वालों में प्रमुख थे : गोविंद भारद्वाज, घनश्याम कलयुगी,विजया कुमारी मौर्या, राज प्रिया रानी, ऋचा वर्मा, सिद्धेश्वर, संजीव प्रभाकर, सरला मेहता , अर्चना कोहली, विज्ञान व्रत, प्रभात कुमार धवन, संतोष मालवीय, मीरा सिंह मीरा, बी, एल प्रवीण, इंदु उपाध्याय, रशीद गौरी, सीमा रानी , राकेश आनंदकर , गार्गी रॉय, सुधा पांडे, कल्पना भट्ट, यशोधरा भटनागर, सुमन कुमार, अनीता रश्मि,सुधा से अनीता पंडा, डॉ रमेश चंद्र, अनिल सूर आजाद, टी के पांडे, निर्मला कर्ण, रश्मि लहर, आदि 1 डॉ अनुज प्रभात ने सभी के प्रति आभार प्रकट किया 1

प्रस्तुति : बीना गुप्ता |जनसंपर्क अधिकारी : भारतीय युवा साहित्यकार परिषद| पटना!

प्यार किसी का

पलकों में पाल लिया है मैंने
एक सपना पारावार किसी का
संग-संग अंग राग बना वह
लुक छिप विद्युत प्यार किसी का।

कुंतल काले ने आकाश चुराया
उर ने एक नव लोक छुपाया
मन में तन में अंतहीन गगन में
सीमाहीन उसी की छाया।
ले आया सुरभिमय झंझा
निश्वास का उपहार किसी का
लुक छिप विद्युत प्यार किसी का।

चितवन जैसे सुख पुलिन अनजान
या स्निग्ध करुण कोमल गान
चाप का पाथेय मिटा तिमिर
दे दिवा में छांह का वरदान
चिर वसंत बन साकार हुआ
मुक्ता मरकट तुषार किसी का
लुक छिप विद्युत प्यार किसी का।

मुझे नहीं मतलब इति अथ में
गतिमान रहूँ संसृति के पथ में
नभ तारक खंडित सा पुलकित
संसार बना अभिसार अकथ में
अब टूटा कंचन हीरक पिघला
बन स्पंदन घनसार किसी का
लुक छिप विद्युत प्यार किसी का।

डॉ. वीरेन्द्र प्रसाद
राजवंशी नगर
पटना बिहार

मैं, चाय और बकरी

बारिश कब होगी, बकरी को पता न था पर, उसका मालिक जानता था। अचानक जो झमाझम शोर हुआ, वह बिन छाता का आदमी बांध आया बकरी को एक छोटे से घास-फूस के घर में, जो खासकर उसी के लिए बनाया गया था। अधगिली बकरी टांग पटक-पटक कर खूंटे के दायरे में ऐसे चक्कर लगा रही थी जैसे बारिश की झंकार में नृत्य करना चाहती हो। थोड़ी दूर पर एक और छोटी सी झोंपड़ी में बैठा मालिक चूल्हे पर चाय की केतली रख, बीड़ी फूंकने में मग्न था। उसे उम्मीद थी कि बारिश में भींगा कोई राहगीर उसकी दूकान पर चाय के लिए रुकेगा और चाय पीते-पीते मौसम से लेकर राजनीति तक सबपर भड़ास निकालेगा।

मैं भी बारिश में भींग कर कंपकंपाता एक मुसाफिर था। सड़क से दूकान थोड़ी दूरी पर था जबकि बकरी का घर सड़क के किनारे ही था। लिहाजा मैंने बकरी की शरण में जाना उचित समझा। तीन बाय तीन फूट की उस छोटी सी शरणस्थली में ठीक से या तो मैं खड़ा हो सकता था या बकरी। कभी वह इस कोने खिसकती थी तो कभी मैं उस कोने। इधर बारिश ने रौद्र रूप धर लिया था। रह-रह के बादल ऐसे गरजते थे कि लगता था घर के साथ हम भी बह जाने वाले हैं थोड़ी ही देर में। फिर कभी बारिश की रफ्तार धीमी होकर ऐसा संगीतमय हो जाती थी कि कई पुराने गीत दिमाग से चलकर जुबान पर आने के लिए उतावले हो जाते थे।

बकरी कुछ देर तो मुझे घूरती रही, फिर शायद उसे लगा कि उसके घर में किसी घुसपैठिया ने कदम रख दिया है। अपनी छोटी-छोटी सींगों से उसने मुझे डराना चाहा लेकिन मैं उसके माथे पर सहलाकर गीत गुनगुनाने लगा। वह पीछे हटी, फिर आक्रमण की मुद्रा में आई और फिर में.... में... में करके मेरी तरफ बढ़ी। मैंने भी उसकी उसकी तरह में... में... में किया और उसकी ओर बढ़ा। वह समझ गयी, मैं भी उसकी तरह खूंटे से बंधा हुआ जानवर हूँ अर्थात उसकी ही बिरादरी का। दोनों की में.... में... एक हुई और बारिश की झंकार के संग मिलकर एक नया संगीत बजने लगा।

उधर दूकान के मालिक ने केतली उठाकर दिखाया। मगर मुझे चाय से ज्यादा इस वक्त बकरी के साथ खेलने की तलब थी।

बारिश फिर से तेज हुई । बादलों ने फिर गरजना शुरू किया लेकिन अब भींगने का डर न मुझे था न बकरी को। फूस की छोटी-सी छत के नीचे दो जानवर संसार के मोह-माया से मुक्त खेलने में व्यस्त थे।

दीपक कुमार

तुम और तुम्हारी कविता

वंदना सहाय

तुम्हें दर्जा मिला
एक साधारण स्त्री होने का
और तुम नहीं लाँघ पायीं
कभी चौके की दहलीज़

घर के सामानों के बीच
अपनी जगह बनाते हुए
न मालूम बीत गए कितने वर्ष

माना नहीं हो तुम अलमारी में बंद मेवे-सी
तुम हो प्लास्टिक के डिब्बे में रखा नमक
जो है अपरिहार्य-सबके लिए
जो तुम नहीं तो किसी चीज़ में नहीं स्वाद

पढ़-लिख कर जो भी सीखा तुमने
वह भी बंद होकर रह गया था
किसी राशन के डिब्बे में

फिर एक दिन तुम्हें पुकारा संवेदनाओं ने
और तुम लिखने लगीं- कविताएँ

कविताएँ-जिन्हें तुमने दिया था जन्म
झेलीं थीं उनकी प्रसव-पीड़ा
तुम्हारी सच्ची कविताएँ छू जातीं हैं दिल को
क्योंकि इनके पकते हैं शब्द
तपती आँच पर रोटियों के साथ
हल्के सुनहरे-भूरे होकर

यूँ नहीं है आसान
शब्दों का पकना आग के साथ
पर साथ जो तुम होती हो
आग को महसूसती हुई

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

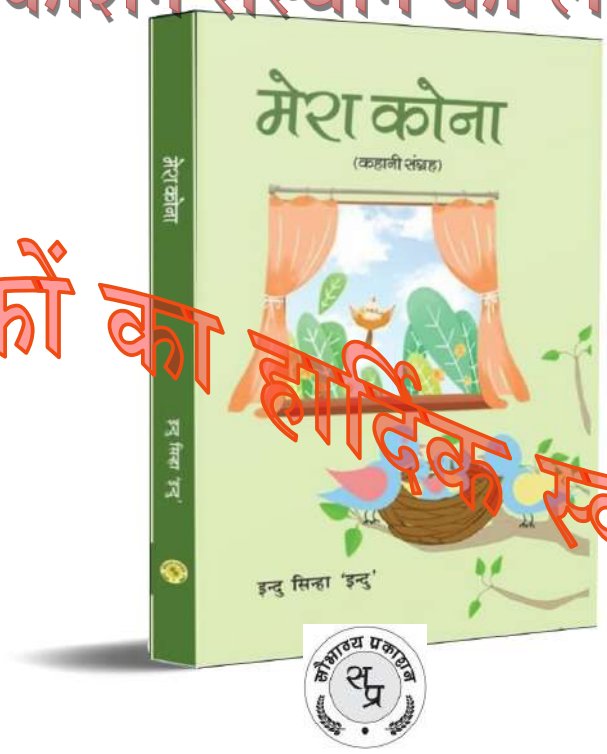

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book is Available on Flipkart

Book Name : मेरा कोना (कहानी संग्रह)

Author : इन्दु सिन्हा 'इन्दु'

ISBN : 978-81-958985-1-0

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 160

Price : 250/-

Genre : Prose /गद्य

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

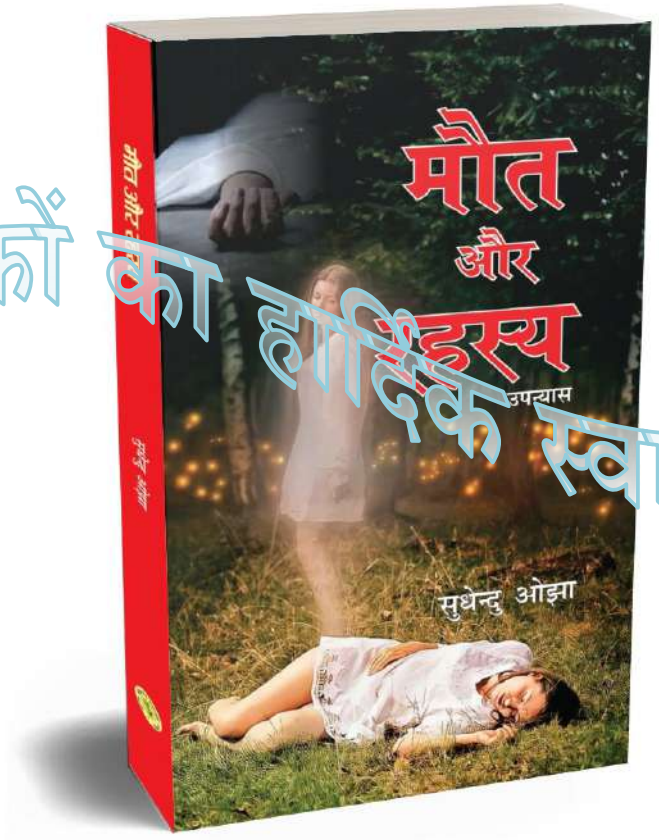

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **मौत और रहस्य (उपन्यास)**

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : : **978-81-964179-9-4**

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 208

Price : 200/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

(लघुकथा)

हैसियत

विनोद कुमार जैसे ही दुकान में घुसे दुकान के मालिक सत्यनारायण ने उन्हें आदर से बिठाया और उनके मना करने के बावजूद लड़के को चाय लेने के लिए भेज दिया। उसके बाद सत्यनारायण ने पूछा, ''कहिए विनोद बाबू क्या सेवा करूँ?'' विनोद कुमार ने कहा कि एक ऊनी शॉल या चद्दर दिखलाइए। विनोद कुमार सत्यनारायण की दुकान के पुराने कस्टमर हैं। वो जानते हैं कि विनोद कुमार की पसंद हमेशा ऊँची होती है और पैसे का मुँह देखना वो नहीं जानते। उन्होंने एक से एक बढ़िया ऊनी शॉलों और चद्दरों का ढेर लगा दिया। विनोद कुमार ने शॉलों और चद्दरों की क्वालिटी को देखते हुए कहा, ''सत्यनारायण भाई इतनी हैवी नहीं कोई हल्की सी शॉल या चद्दर दिखलाइए।'' यह सुनकर सत्यनारायण को विश्वास नहीं हुआ तो उन्होंने कहा, '' हल्की और आप? क्यों मज़ाक़ कर रहे हो विनोद बाबू? हल्की शॉल का क्या करेंगे आप?'' विनोद कुमार ने कहा, ''ऐसा है सत्यनारायण भाई हमारी बहन उर्मिला है न उसकी सास शांतिदेवी के लिए भिजवानी है। उन्होंने कई बार मुझसे कहा है कि विनोद बेटा मुझे एक अच्छी सी गरम चद्दर ला के दे। तेरी पसंद बड़ी अच्छी होती है। पहले भी तूने एक शॉल लाकर दी थी जो बहुत गरम थी और कई साल चली थी।'' सत्यनारायण ने सामने फैली हुई शॉल और चद्दरों के ढेर को एक तरफ़ सरकाकर कुछ मीडियम क़िस्म की शॉलें खोल दीं। विनोद कुमार ने निषेधात्मक मुद्रा में सिर हिलाते हुए कहा कि और दिखलाओ। सत्यनारायण हैरान था पर ग्राहक की मर्ज़ी के सामने लाचार भी। उसने सबसे हल्की शॉलों का बंडल खोला और शॉलें विनोद कुमार के सामने फैला दीं। विनोद कुमार ने साढ़े चार सौ रुपए की एक शॉल चुन ली और उसे पैक करवाकर घर ले आए और उसी दिन शाम को उसने वो शॉल बहन की सास को भिजवा दी। शॉल पाकर शांतिदेवी बड़ी ख़ुश हुईं। ये बात नहीं थी कि शांतिदेवी के घर में किसी चीज़ की कमी थी या उसके बेटे-बहू उसके लिए कुछ लाकर नहीं देते थे पर वो अपने रिश्तेदारों पर भी अपना हक़ समझती व जताती रहती थीं। विनोद पर तो वह और भी ज़्यादा हक़ जताती थीं क्योंकि विनोद उन्हें अच्छा लगता था लेकिन विनोद की भेजी हुई शॉल वे पाँच-सात बार ही ओढ़ पाई होंगी कि एक दिन रात के वक़्त उनके सीने में तेज़ दर्द हुआ और दो दिन बाद ही रात बारह साढ़े बारह बजे के आसपास वे इस संसार से सदा के लिए विदा हो गईं। उनकी अंत्येष्टि के लिए अगले दिन दोपहर बारह बजे का समय निश्चित किया गया। सुबह-सुबह सत्यनारायण अपनी दुकान खोल ही रहे थे कि विनोद कुमार वहाँ पहुँचे और कहा, ''भाई उर्मिला की सास गुज़र गई है एक चद्दर दे दो।''

सत्यनारायण ने बड़े अफ़सोस के साथ कहा, ''ओह! अभी कुछ दिन पहले ही तो आप उनके लिए गरम शॉल लेकर गए थे। कितने दिन ओढ़ पाईं बेचारी?'' उसके बाद सत्यनारायण ने चद्दरों का एक बंडल उठाकर खोला और उसमें से कुछ चद्दरें निकालीं। विनोद कुमार ने चद्दरें देखीं तो उनका चेहरा बिगड़ सा गया और उन्होंने कहा कि भाई ज़रा ढंग की चद्दरें निकालो। कई बंडल खुलवाने के बाद विनोद कुमार ने जो चद्दर पसंद की उसकी क़ीमत थी पच्चीस सौ रुपए। सत्यनारायण ने कहा, ''विनोद बाबू वैसे आपकी मर्ज़ी पर मुर्दे पर इतनी मँहगी चद्दर कौन डालता है?'' विनोद कुमार ने कहा, ''बात मँहगी-सस्ती की नहीं हैसियत की होती है। उर्मिला की ससुराल वालों और उनके दूसरे रिश्तेदारों को पता तो चलना चाहिए कि उर्मिला के भाई की हैसियत क्या है और उसकी पसंद कितनी ऊँची है?''

सीताराम गुप्ता, ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा, दिल्ली

(लघुकथा)

इंतजार

आज अध्यापक कक्षा में कदम रखते ही बच्चों से बोले – " बच्चो ! आज सभी अपने–अपने पिता जी को एक पत्र लिखेंगे। पत्र में अगले महीने पैरेंट्स मीटिंग रखी गई है। इस बार हम किसी के पैरेंट्स को कॉल या मैसेजेस नहीं करेंगे। आपकी बातें डाक के माध्यम से प्रेषित की जायेगी। ये समझ लो कि पत्र लिखना तुम सबका आज का कक्षाकार्य है। क्यों बच्चों, सभी तैयार हो न ? " सभी बच्चों ने हामी भरी।

बच्चों ने पत्र लिखना प्रारंभ किया। थोड़ी देर बाद बच्चे बारी–बारी से अध्यापक को पत्र दिखाने लगे। अध्यापक बहुत खुश थे। बच्चों के द्वारा लिखे मासूमियत भरे शब्द उन्हें बचपन की ओर आकर्षित कर रहे थे। कक्षा में घूमते हुए वे एक प्रिशा नाम की लड़की के पास पहुँचे। उसका पत्र अभी तक उनके पास नहीं आया था।

तभी अध्यापक ने देखा कि प्रिशा पत्र लिख कर बार-बार फाड़ती जा रही है। उन्हें आश्चर्य हुआ। पूछा- " क्या बात है बेटा ? प्रिशा, तुम ऐसा क्यों कर रही हो? बड़ी परेशान लग रही हो। बताओ प्रिशा, क्या बात है ?"

प्रिशा सुबकती हुई बोली - " सर जी ! मेरे पापा जी तो भगवान जी के पास चले गए हैं। मैं उन्हें अपना पत्र कैसे भेजूँ ? मुझे भगवान का एड्रेस नहीं मालूम। कुछ समझ नहीं आ रहा है। आप ही बताइए न सर जी। मेरा पत्र भगवान जी के पास कैसे पहुँचेगा ? " धारा प्रवाह बोलती हुई प्रिशा का गला भर आया। प्रिशा की भीगी पलकें देख अध्यापक को बड़ा दुःख हुआ। उनके पास प्रिशा के लिए कोई जवाब नहीं था। प्रिशा अध्यापक के जवाब का इंतजार कर रही थी।

प्रिया देवांगन "प्रियू" राजिम जिला – गरियाबंद
छत्तीसगढ़

बादल

नदियाँ
सूखने लगती
पत्थर नग्न हो जाते
मानों किसी ने
गरीबी को उघाड़ दिया.
बादल को लगाई अर्जी
मौसम में आना जरूर
क्योंकि ये तुम्हारा
कर्तव्य जो है।
स्वागत हेतु
प्रकृति के रिश्तेदार
अभिवादन की
टकटकी लगाकर
निहारते तुम्हें.
तुम बरसोगे तो ही
मै बहूँगी
और किनारों पर बसे
लोगों से कहती जाऊंगी.
बादल मेरे जीवन के
प्राण है|

संजय वर्मा दृष्टि'

125, बलिदानी भगत सिंह मार्ग
मनावर (धार) मप्र

ज़िन्दा लोग

खांसी के कफ सी
नफरत
उगल दी है
उसी के मुख पर
आयातित विचारधारा को
जो मुहर्रम
बीजता रहा
साल दर साल
उर्वर मस्तिष्कों पर
लाल गमछे से
हाथ पोंछते हुए।

कोठे के महंत की
चमचम चरण पादुका
आंख मारते हुए
सिर पर धारण
करने की
बहुरंगी कला
और लाल पोशाक में
खजूर के पेड़ पर
वांग देने का हुनर
जानते हैं जो भी
बहुत बधाई हो उन्हें।

माफ़ करना
मौन की खट्टी छाछ
हांजी हांजी का
बीज मंत्र
माफिक नहीं
अभी तक मेरी
जिंदा आत्मा के लिए।
---०००---

कृष्ण चंद्र महादेविया
डाकघर महादेव, सुंदर नगर
जिला मंडी, हिप्र-175018

एक बूँद

पावस की एक बूँद
हम सबको
समझा देती है
सब कुछ
जीवन के रस से लेकर
जीवन की क्षण भंगुरता।
बूँद बताती है
जीवन का रस नहीं है स्वार्थ,
जीवन की महत्ता है
दूसरों को सराबोर कर
स्वयं मिट्टी में मिल जाना
चुपचाप।
शीतलता की सबसे बड़ी
परिभाषा है
पावस की एक बूँद।
एक पल भी
मोती जैसा हो सकता है कीमती
समझा कर जाती है
यह बूँद।
और समुद्र में मिलकर
साबित करती है
कि
हर मानव एक बूँद है
जो समा जाएगा एक दिन
इसी सागर रूपी
संसार में।

विकास कुमार शर्मा
सर्वोदय स्कूल के पीछे, शिवपुरी-बी
गंगापुर सिटी (राजस्थान)
पिनकोड-322201

रोटी

बूढ़े पीपल की छांव तले
बैठे बुजुर्ग से पूछ उठा इक शाम
चांद की शीतलता और
अश्कों की मामलात
पहले गुरेज किया
फिर उदास लबों का तारतम्य
के बेटा सुलगता है
चूल्हा
पर दाने नहीं मिलते
भूख के मंझधार में
कभी न आंसू पिलते
रात की सियाही में
बसी है भूख की दास्ताँ
और
पथरीली राहों सी है जिंदगी
रोटी का एक टुकड़ा खोजते-खोजते
फटी हुई चादर सी लगती है
चाँदनी भी मुझे।

विकास तिवारी

दुर्गेश के दोहे

1) आजादी के बाद सब, भूल गए आजाद।
सब निज मतलब में घिरे, सैंतालिस के बाद।

2) दिन सावन के हैं सभी, पावन अरु अति खास।
शिव शंकर के नाम से, कट जाते सब पाश।

3). मन चंगा कर लीजिए, गुरुओं का आशीष।
पल-पल पद बढ़ने लगे, मानो कोई महिष।

4) गुरू वंदना कीजिए, चरण लगाकर शीश।
तजकर सब दुर्भावना, ले लेना आशीष।

विनोद वर्मा दुर्गेश
तोशाम, जिला भिवानी,

लेखकों का हार्दिक स्वागत है !

Book is Available on Flipkart

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book Name : गंदी औरतें (सामाजिक उपन्यास)
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : 978-81-958985-9-6
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 188
Price : 250/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

डॉ. दिनेश कुमारी नेगी (सहायक आचार्या, हिन्दी, शासकीय उपाधि महाविद्यालय संजौली, शिमला)

पाश्चात्य संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृतिः

एक विश्लेषण

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे पुरातन व समृद्ध संस्कृति है। ऋषि-मुनियों ने अपनी दिव्य शक्ति से इसे पावन व पवित्र बनाया है। शास्त्र सम्मत है कि ईश्वर ने इसी पुनीत धरा पर कालान्तर भिन्न-भिन्न रूपों में अवतार ग्रहण किये हैं। जिस पावन धरा पर ईश्वर का वास रहा है, तो स्वाभाविक है कि ये धरा पुनीत व समृद्ध रही होगी। यह बात निर्विवाद सत्य है कि भारतवर्ष ने जो ज्ञानगंगा विश्व में प्रवाहित की है,वो अन्यत्र मिलना दुर्लभ था और है। " वसुधैव कुटुम्बकम" और अतिथि देवो: भव:" का अनुसरण करने वाला ये भारत वर्ष जीवन के हर क्षेत्र में सदैव अग्रणी रहा है। गुरूकुल शिक्षा पद्धति और विश्व का सबसे पुरातन व प्रथम विश्वविद्यालय को सुशोभित करने वाला देश भारतवर्ष ही है ,जिसने विश्व को ज्ञान रूपी सरिता में डूबकी लगाने हेतु प्रेरित किया है तथा हर क्षेत्र में समृद्ध व सुसंस्कृत बनाया है।

वैश्विक युग सूचना व प्रौद्योगिकी का है और सम्पूर्ण विश्व एक परिवार बन चुका है। लोगों का एक देश से दूसरे देश जाना आम बात है। युवा पीढ़ी अध्ययन व नौकरी इत्यादि के प्रयोजन से विदेश जाने को उत्सुक रहती है और विदेशी लोग भारतवर्ष में बस रहे हैं। यह क्रम अनवरत चल रहा है और स्वाभाविक भी है। गीता में कहा गया है कि तीन चीजें दुर्लभ है जिनमें सर्वप्रथम मानस देह है जो मिलना दुर्लभ है , इसके अलावा दूसरा मोक्ष की इच्छा है और तीसरा सज्जनों की संगति है, जो मिलना दुर्लभ है। ये मानस देह बड़ी मुश्किल से मिलता है ,ऐसा शास्त्रों में उल्लेख है अतः सद्मार्ग पर चलना चाहिए। स्वयं के संस्कारों व संस्कृति का अनुसरण न करना अधर्म की श्रेणी में आता है। हम वैसे इस मार्ग पर चलने की कोशिश करते हैं लेकिन कहीं न कहीं हम पाश्चात्य रंग में रंग रहे हैं और विशेषकर हमारी युवा पीढ़ी इसमें पूरी तरह रंगी नज़र आ रही है। कहीं न कहीं ये युवाओं को गर्त की दिशा में ले जा रही है। हर हाथ में आज मोबाइल व इंटरनेट है और विश्व से जुड़े हुए हैं । यही कारण है कि कहीं न कहीं इससे युवा दिग्भ्रमित हो रहे हैं। खासकर छोटे बच्चों पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

अमूमन बच्चे जिन बातों को अठारह-बीस वर्ष की अवस्था में सीखते हैं वो बातें आधुनिक युग में मात्र पांच वर्ष का सीख चुका है और वो सब कुछ जानता है जो कि न्यायसंगत नहीं है। ये विकास व आधुनिकता कहीं न कहीं भारतीय संस्कृति के हितार्थ नहीं है। छोटे बच्चों का असमय तरूण हो जाना और परिजनों को सलाह देना कहीं न कहीं चिंतनीय है । संस्कार आज गायब हो गये हैं। कोई भी माता-पिता का सम्मान करना नहीं चाहता है। प्राइवेट व कान्वेंट विद्यालय आज की आवश्यकता है लेकिन ये हम पर इतने ज्यादा

हावी हो गये हैं कि हम स्वयं की संस्कृति को ही विस्मृत कर रहे हैं।भारतीय संस्कृति जो' वसुधैव कुटुम्ब ' और' अभिवादन शीलस्य नित्य वृद्धोपसेविन: ए चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायषोबलम' अर्थात जो नित्य प्रति अपने माता-पिता का सम्मान करते हैं, उन्हें प्रणाम करते हैं और इसके अलावा बुजुर्गों की सेवा करते हैं तो इससे उनकी उम्र, विद्या,यश और बल में वृद्धि होती है। भगवान श्री राम इसका जीवन्त उदाहरण है और वो कितने संस्कारी व विनम्र हैं? उनके मस्तिष्क में मां कैकेई के प्रति एक प्रतिशत भी कहीं प्रतिशोध की भावना दिखाई नहीं देती है। जब वो अरण्य के लिए वल्कल वस्त्र धारण कर मां से अनुमति लेते हैं, तो सर्वप्रथम मां कैकेई का आशीर्वाद लेते हैं। भरत भी क्या भाई है और वैसे ही लक्ष्मण भी, पत्नी रूप में उर्मिला, सीता मां सभी भारतीय संस्कृति का कितना बड़ा व श्रेष्ठ उदाहरण है। ये वही भारतीय संस्कृति है जो चिरकाल से आज तक निरन्तर क्रियाशील है और यह बात अलग है कि ये पाश्चात्य रंग में रंग गई है।

वस्तुत: हम भारतीय अपनी सभ्यता व संस्कृति और ज्ञान की महत्ता तब तक नहीं समझते हैं जब तक कि उसे विदेशी लोग नहीं अपना लेते हैं। यही कारण है कि आज यूरोपीय राष्ट्रों और विशेषकर संयुक्त राज्य अमेरिका में योग, आयुर्वेद, भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति, , यूनानी चिकित्सा पद्धति व सिद्धा जैसे उपचार हो रहे हैं। आज विदेशी भारतीय अरण्यों में प्राप्त होने वाली जड़ी-बूटियों पर अनुसन्धान कार्य कर रहे हैं और मरीजों पर उसका प्रयोग कर उन्हें निरोगी बना रहे हैं। महर्षि पतंजलि की योग विधा को हम लगभग विस्मृत कर रहे थे और जैसे ही विदेशी धरती पर उस पर कार्य होने लगा और वो लोग उसका अनुसरण कर स्वयं को निरोगी महसूस करने लगे तो हम भारतवासी उस पर चिन्तन करने लगे। वास्तव में योग को हमने उपेक्षित कर त्याग दिया था। आज पाश्चात्य लोग भारतीय संस्कृति का अनुसरण कर रहे हैं। बेल्जियम के डॉ. फादर कामिल बुल्के ने भारत में आकर और यहां की संस्कृति से प्रभावित होकर भगवान राम पर शोध कार्य किया और यहां बसकर संन्यासी बन गये तथा स्वयं को इस पावन संस्कृति और संस्कृति के सच्चे संरक्षक भगवान राम के लिए समर्पित कर दिया था। केवल बुल्के ही नहीं, असंख्य ऐसे उदाहरण है जिन्होंने भारतीय जीवन पद्धति को अपनाया है। वर्तमान में विदेशी लोग हमारे मन्दिरों में सत्संग करते दिखाई देते हैं और गुरूद्वारे में सेवारत हैं तो ये भारतीय संस्कृति का ही प्रताप है और इसकी दिव्यता है कि हर कोई इसे प्रेम करता है और स्वयं को समर्पित कर देता है।

भारतीय जन जीवन पर गहरा प्रभाव आधुनिक संस्कृति का पड़ा है और इसे हम नकार नहीं सकते हैं। पाश्चात्य संस्कृति ने विशेषकर युवा वर्ग को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। बाजारवाद की इस बाढ़ में नैतिक मूल्यों व संस्कारों का ह्रास हुआ है। इन्सानियत लगभग लुप्त सी होने लगी है। दुराचार, भ्रष्टाचार व्यभिचारी रूपी दुशासन भारतीय संस्कृति रूपी द्रोपदी का चीर-हरण करने लगे हैं। रिश्ते की महत्ता समाप्त हो रही है, ये सब अंधी आधुनिकता का ही नतीजा है।

वर्तमान में उपभोक्ता) पाश्चात्य(संस्कृति की ये गन्ध हर घर में फैल चुकी है। ऐसे तमाम उदाहरण है जिससे हमारी संस्कृति व जीवन मूल्यों का ह्रास हुआ है। जैसे हमारा पहनावा है तो हमारे पहनावे में भी ये परिवर्तन प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दे रहा है। धोती - कुर्ता और पायजामा का प्रयोग पुरूषों में और साड़ी इत्यादि का प्रयोग स्त्रियों में दुर्लभ होता जा रहा है। इन सबकी जगह पेंट-कोट , जीन्स व टाई ने ले ली है। बात कड़वी है लेकिन नैसर्गिक है कि वर्तमान स्त्री सिर ढकने की परम्परा को विस्मृत कर बैठी है। कपड़े छोटे रूप में धारण किये जा

रहे हैं और जिससे आपराधिक घटनाओं में भी वृद्धि हुई है। हम सीधे तौर पर अपने पहनावे को त्याग कर पश्चिमी पहनावे पर जोर दे रहे हैं। शादी- व्याह में जूतों को पहनकर भोजन परोसा जा रहा है और भोजन कर रहे हैं। माता-पिता और अग्रज लोगों का चरण स्पर्श हाथ मिलाने और आलिंगन में परिवर्तित हो गया है।अपनी संस्कृति को संरक्षित और संवर्धित करने की आज बहुत आवश्यकता महसूस हो रही है । आज की युवा पीढ़ी को मेले त्यौहारों , तीज , पर्व , रीति-रिवाजों के बारे में जरा भी जानकारी नहीं है और न ही इसको जानने की जिजीविषा उनमें हैं। आज कोई भी बुजुर्गों के साथ बैठने को तैयार नहीं है और न ही वक्त देते है। दादी और नानी की उन लोक कथाओं की जगह ट्रांजिस्टर, टेलीविजन और मोबाईल फोन ने ले ली है ।आज के बच्चों को यह मालूम नहीं है कि गेहूं फैक्ट्री में बनता है या खेत में । बच्चे कार्टून तक सीमित है । हम स्वयं भी इसके लिए जिम्मेवार है चूंकि बच्चा वैसे ही ढलता है जैसे उसे ढालना चाहो । हम बच्चों को कभी नहीं कहते हैं कि धार्मिक कथाएं सुनिये , रामायण देखो या मेले में जाओ । व्यक्ति जब मरणासन्न अवस्था में होता है तो उन बच्चों को कोई पता नहीं कि उस समय की क्या क्रियाएं होती है जो करनी अवश्य है । हम भी जान बूझ कर उन्हें वहां से भगा देते हैं कि ये डर जाएगा ।

वर्तमान काल खण्ड में संयुक्त परिवार की उपेक्षा अलग रहने को ही ज्यादा प्राथमिकता दें रहे हैं । परिवार केवल पति-पत्नी और बच्चे तक ही सीमित है । माता-पिता असहाय हो रहे हैं या आश्रमों में रहने को मजबूर । समाचार पत्रों से हैरतंगेज खबरें सुनने को मिलती हैं। कईयों ने लाखों रुपए खर्च करके अपने बच्चों को काबिल बनाया और बच्चे नौकरी हेतु विदेश चले गये । बुजुर्ग माता-पिता घर पर रहने को मजबूर हैं और दूसरे वृद्धावस्था में उस गांव की मिट्टी में ,उस जन्मस्थली में निवास करने से जो सुकून मिलता है, वो अन्यत्र कहीं पर भी नहीं है। ऐसे में जब माता-पिता अस्वस्थ हो जायें और देहान्त हो जाये तो बच्चों के पास वक्त नहीं है कि वो उनके मरणोपरांत संस्कार में शामिल हो। वे विदेश से फ़ोन करके कहते हैं कि कर दीजिए अंतिम संस्कार और हमें अस्थियां कुरियर से भेज दीजिए। ऐसे तमाम उदाहरण है जो हम समाज में प्रत्यक्ष तौर पर देखते हैं। वास्तव में हम आधुनिक युग की विकास रूपी सरिता में डूब चुके हैं और सारे संस्कार विस्मृत कर बैठे हैं। सारे रिश्ते समाप्ति की कगार पर है। सारे सम्बन्ध पैसों पर टिके हुए है । एक कहावत भी है कि " बाप बड़ा न भैया , सबसे बड़ा रूपैया । आज भाई-भाई के रक्त का प्यासा बन गया है। ऐसे तमाम उदाहरण है जिससे आज समाज पतनोन्मुखी है और स्वयं परोक्षरूप से हम इसके लिए जिम्मेवार भी है । इसलिए बच्चों को अपनी संस्कृति , अपनी मिट्टी ,अपनी मातृभाषा के बारे में बताना , समझाना जरूरी हो गया है । नहीं तो यह संस्कृति , भाषा लुप्त होने के कगार पर है और इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा । वैसे सरकार भी यथासंभव प्रयास कर रही है कि अपनी बोलियों , संस्कृति को संरक्षित व संवर्धित करना चाहिए । अन्यथा यदि ये ही क्रम रहा तो भविष्य के गर्भ में क्या छुपा है वो स्पष्ट है। आने वाली नस्लें हमारे

शव को या तो घर पर ही पेट्रोल डीजल से जला देगी , कोई क्रिया कर्म नहीं या कहीं जंगल में फैंक देंगे क्योंकि समय ही नहीं होगा उनके पास ।ये तमाम प्रमाण है जो हम व्यावहारिक जीवन में देख रहे हैं। ये वास्तव में चिन्तन का विषय है।

वैश्वीकरण ने वैश्विक अंतर्संबंध को बढ़ाया है। इससे सम्पूर्ण विश्व एक परिवार बन चुका है और इसके सकारात्मक प्रभाव देखने को मिले हैं लेकिन दूसरी ओर वैश्वीकरण के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी हुए हैं, जैसे वैश्विक असमानता में वृद्धि, भ्रष्टाचार में वृद्धि, नौकरियों की हानि और पर्यावरणीय गिरावट आदि।विदेशी पत्रकारिता ने भी पाश्चात्य संस्कृति के प्रचार-प्रसार में कोई कसर नहीं छोड़ी है। हर रोज सनसनीखेज खबरें टीवी चैनल्स पर दिखाई जा रही है। वहां की नग्नता, विद्रूपता व चमकीलापन में हमारी युवा पीढ़ी पथ भ्रष्ट हो रही है। युवा ग़लत विज्ञापनों के झांसे में साइबर क्राइम का शिकार हो रहे हैं। वहां के नग्न रीति रिवाजों का अनुसरण करना व उसमें रम जाना गम्भीर समस्या है।

दूसरे भाषा के सन्दर्भ में भी यही समस्या है। आज हम अंग्रेजी भाषा और संस्कृति के रंग में रंगने को आधुनिकता का पर्याय समझने लगे हैं। प्रत्येक शासकीय कार्यालय में अंग्रेजी प्रथम भाषा और हिन्दी को दूसरी भाषा के रूप में विस्थापित किया गया है। दुर्भाग्यवश अनेकों ऐसे विभाग हैं जहां पर केवल अंग्रेजी भाषा में ही कार्य किये जाते हैं और संप्रेषण भी इसी भाषा में किया जाता है। जब हमारे देश का अधिकांश वर्ग हिन्दी को जानता है और हमारी ये राजभाषा भी है तो क्यों हम इसे अपनाने से कतराते हैं ये एक गम्भीर प्रश्न है।

ऐसा भी नहीं है कि पाश्चात्य संस्कृति के परिणाम नकारात्मक ही रहे हैं , इसके अलावा इससे हमारे जीवन की दशा और दिशा में भी क्रान्तिकारी परिवर्तन सामने आये हैं।भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति दोनों का मणि कंचन संयोग देखने को मिला है और ये समन्वयवादिता कहीं न कहीं दोनों संस्कृति के संगम की अनूठी अस्मिता है। हमारा देश विकासशील देशों की कतार में अग्रणी है , इस सत्य को भी हम नकार नहीं सकते हैं। आज हमारे देश में जो विज्ञान का चमत्कार हुआ है, उससे हमें जीवनदायिनी शक्ति प्राप्त हुई है और इसके पीछे कहीं न कहीं पाश्चात्य संस्कृति ही है जिसका प्रभाव भारत वर्ष की संरचना में पड़ा है। पाश्चात्य संस्कृति से उत्पन्न आधुनिक मानसिकता ने भारत के पिछड़ेपन को दूर किया है। सड़ी-गली मान्यताओं और अन्धविश्वासों से छुटकारा दिलवाया है। भारत की इस आशातीत उन्नति एवं सर्वव्यापकता का श्रेय पिछली चार शताब्दियों को जाता है, जिसमें क्रमश: इंग्लैण्ड, जापान, जर्मनी, रूस एवं अमेरिका इत्यादि विकसित राष्ट्रों का प्रयास सर्वथा प्रशंसनीय रहा है।

आज पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति का ही प्रभाव है जिसने हमारे जीवन सम्बन्धी शिक्षण, चिकित्सा, यातायात, संचार इत्यादि सभी क्षेत्रों को उन्नति के शिखर पर पहुँचाया है। इसी तरह चिकित्सा के क्षेत्र में तमाम खोजें एवं आविष्कार हुए हैं। इंजेक्शन, एक्स-रे, विद्युत चिकित्सा, हृदय रोपण (पेसमेकर) कृत्रिम गर्भाधान, ट्यूब बेबी, प्लास्टिक सर्जरी आदि सभी पाश्चात्य सभ्यता की ही देन हैं। आज समाचार भेजने के अनेक तरीके फैक्स, ई-मेल आदि तकनीकी की ही देन हैं। मोबाइल फोन, इन्टरनेट, कम्प्यूटर यह सब वैश्वीकरण से ही सम्भव हो पाया है। आज मनुष्य के कदम जमीन पर ही सीमित नहीं हैं बल्कि उसने आकाश को नाप लिया है। सभी ग्रहों पर क़दम रख लिये हैं। हर रोज कोई न कोई सफल परीक्षण अंतरिक्ष जगत में हो रहा है। ऐसे में पाश्चात्य संस्कृति की इन बातों को अपनाना हितकारी है और आधुनिक युग की आवश्यकता है।

निश्चय ही भारतीय संस्कृति को पाश्चात्य संस्कृति ने प्रभावित किया है और इसके नकारात्मक परिणाम संग सकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिले है। दोनों संस्कृतियों के परस्पर मिलने से वैश्विक स्तर पर भारत के विश्व के तमाम देशों संग बेहतर सम्बन्ध बने हैं। एक-दूसरे की संस्कृतियों को गहनता से समझने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। यही कारण है कि विश्व आज भारतीय चिकित्सा पद्धति का अनुसरण कर रहा है। योग विधा से लेकर अन्य विधाओं का प्रचार प्रसार विश्व में हो रहा है। संस्कृत और हिन्दी की महत्ता विश्व के अनेकों शैक्षिक संस्थानों में अपरिहार्य की गई है।

सन्दर्भ सूची

1. रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, साहित्य अकादमी नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष1956

2. डॉ. सच्चिदानंद शुक्ल, भारतीय संस्कृति: विविध आयाम , पुस्तक महल ,प्रकाशन वर्ष2012

3. डॉ. बीना जैन, भारतीय कला एवं संस्कृति विविध आयाम, लोक भारती प्रकाशन ,दिल्ली

4. डॉ. काजल वाजपेई, भारतीय संस्कृति

5. डॉ.अरूण कुमार, भारतीय संस्कृति एवं लोक साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन, समता प्रकाशन कानपुर उ.प्र,. प्रकाशन वर्ष2021

डॉ. दिनेश कुमारी नेगी (सहायक आचार्या, हिन्दी, शासकीय उपाधि महाविद्यालय संजौली, शिमला)

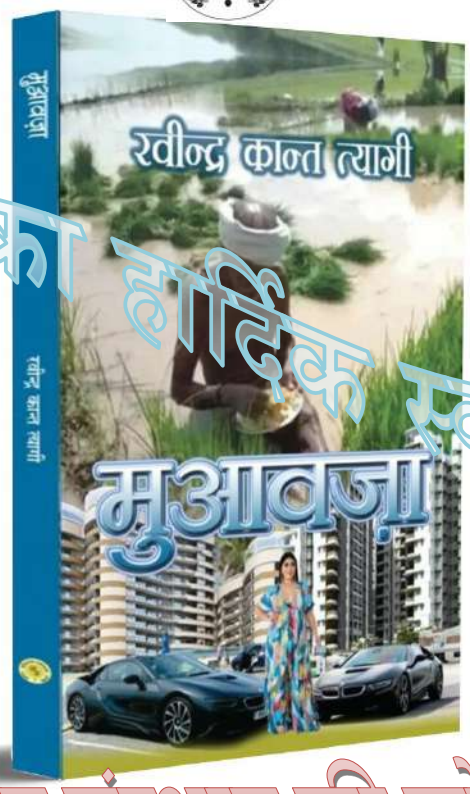

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book Name : मुआवज़ा
Author : रवीन्द्र कान्त त्यागी
ISBN : 978-81-958985-2-7
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 160
Price : 250
Genre : Prose /गद्य

मुआवज़ा का कथालोक देश की राजधानी दिल्ली के समीप बसे ग्रामीण इलाके से संबंधित है किन्तु इस कथालोक का विस्तार कर के देश के इसे किसी भी उस ग्रामीण क्षेत्र के ऊपर लागू किया जा सकता है जो विस्तृत होते हुए शहर के समीप हो या फिर जहां विकास की आंधी पहुँच रही हो।

जरूरी नहीं कि ग्रामीण अंचल शहर में विलीन हो कर शहर की संस्कृति या विकृति के अनुरूप हो जाएँ।

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

अमीर खुसरो का काव्य: एक अनुशीलन

छविन्दर कुमार

शोध सारांश :

अमीर खुसरो (अबुल हसन) हिन्दी साहित्य में एक ऐसे महान व कालजयी विद्वान के रूप में उभर कर सामने आये थे जिन्होंने अपनी प्रखर प्रज्ञा से काव्य लेखन के साथ-साथ संगीत के क्षेत्र में भी अपनी अस्मिता बनाई । दो भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में समन्वयक के रूप में अमीर खुसरो ने तमाम तरह का साहित्य सृजन किया और आम जनमानस के अंत:करण में पहचान बनाने में सफल हुए। भारतीय संगीत विधा में तमाम राग-रागिनियों, वाद्य यंत्रों एवं साहित्य के क्षेत्र में पहेलियों, मुकरियों व हास्य व्यंग्य इत्यादि पर विपुल साहित्य रचा। दरवार से आम जनमानस तक की आवाज उनके साहित्य में दिखाई देती है। लोक से उनका गहरा नाता रहा है , वो लोक जहां पर अपना जीवन व्यतीत किया और उसकी अनेकों छवियों की झलक उनकी कविताओं में मिलती है। लोक साहित्य में सर्वप्रथम अमीर खुसरो ने ही पहेलियां बनाने की परम्परा का सुत्र पात किया। अपने पीर के प्रति इनका अप्रतिम प्रेम था यही कारण है कि निजामुद्दीन औलिया के हजारों शिष्यों में प्रथम स्थान पर अपनी जगह बनाने में सफल रहे। प्रस्तुत शोध पत्र में अमीर खुसरो की साहित्यिक विषय वस्तु पर प्रकाश डाला गया है।

बीज शब्द - कालजयी, अप्रतिम, शास्त्रीय, व्यतीत, संगम, बाबुल

प्रस्तावना :

अमीर ख़ुसरो का जन्म 3 मार्च 1253 ईस्वी में उत्तरप्रदेश के एटा जनपद के'पटियाली' क्षेत्र में हुआ माना जाता है। अमीर ख़ुसरो का मूल नाम 'अबुल हसन यमीनुद्दीन' था व 'ख़ुसरो' उनका उपनाम था। सम्राट जलालुद्दीन खिलजी उनकी काव्य प्रज्ञा से प्रसन्न हुए और उन्हें 'अमीर' की उपाधि देकर अलंकृत किया था और ये 'अमीर ख़ुसरो' के नाम से प्रसिद्ध हुए। ये सूफी संगीतकार और एक युग दृष्टा कवि थे। खुसरो को क़्वाली का पितामह भी कहा गया है।वास्तव में ये एकमात्र ऐसे कालजयी कवि थे जिन्होंने दिल्ली सल्तनत के सात से अधिक शासकों के शाही दरबारों में लेखन कार्य किया और शास्त्रीय कवि कहलाने का गौरव प्राप्त किया। उन्होंने तमाम तरह की साहित्यिक व संगीत में नये आयाम स्थापित किये जो स्वयं में एक वृहत् और असाधारण कार्य है। उन्होंने हास्य-व्यंग्य साहित्य,चंचल पहेलियों, गीतों और किंवदंतियों को लिखा जो दक्षिण एशिया में लोकप्रिय संस्कृति का हिस्सा बन गए हैं। उनकी पहेलियां आज हिंदवी कविता के सबसे लोकप्रिय रूपों में से एक हैं। ख़ुसरो ऐसे अकेले साहित्यकार हैं, जिनकी रचनाओं में उनके युग का स्पंदन साफ़ सुनाई देता है। उन्होंने फ़ारसी और हिंदुस्तानी ज़बान में जो साहित्य सृजन किया वो अनंत व विपुल है। हिंदुस्तानी ज़बान में रचे उनके साहित्य का मनमोहक रंग खड़ी बोली का है। ख़ुसरो ने विशेष रूप में हिन्दू और इस्लाम संस्कृतियों की एकजुटता पर जोर दिया है। अभिजात और जन -संस्कृति का जितना मधुर संगम ख़ुसरो की कविता में है, वैसा अन्यत्र

मिलना दुर्लभ है। उनकी कविता को समझना लोक-मन को समझना है।ख़ुसरो के जीवन की विविधता अनेक रूपों में दिखाई देती है। एक तरफ वे दरबार से जुड़े हैं और दूसरे आमजन से भी। मिश्र भाषा में जीवन व्यतीत करना उनकी प्रकृति थी। काव्य-रूपों का ख़ुसरो ने विविधतामय प्रयोग किया है। उनके द्वारा प्रयुक्त प्रमुख काव्य-रूप हैं : गीत (बाबुल गीत, झूला गीत, सावन गीत, बसंत गीत), पहेलियाँ (बूझ पहेली, अनबूझ पहेली), कह मुकरियाँ, दो सुखना, अनमेलिया या ढकोसला, निसबत, ग़ज़ल, दोहा और फुटकर पद्य। ख़ुसरो की खड़ी बोली में रचित रचनाएँ आज भी लोकंठ में, जन-मन में जीवित हैं।अपने युग की महानतम शख्सियत अमीर ख़ुसरो को खड़ी बोली हिन्दी का पहला कवि माना जाता है। इस भाषा का इस नाम (हिन्दवी) से उल्लेख सबसे पहले उन्हीं की रचनाओं में मिलता है। हालांकि वे फारसी के भी अपने समय के सबसे बड़े भारतीय कवि थे, लेकिन उनकी लोकप्रियता का मूल आधार उनकी हिन्दी रचनाएं ही हैं। उनकी कविता एक ऐसा दर्पण है, जिसमें उनके समय का हिंदुस्तान तो प्रतिबिंबित है। इसमें उनका प्रेम भरा हृदय झलक रहा है। हिन्दी उनकी जबान है। वे कहते हैं :

चू मन तूतिए-हिन्दम, अर रास्त पुर्सी।

जे मन हिंदुई पुर्स, तर नग़्ज़ गोयमय्

(मैं तूती-ए-हिन्द हूं। अगर कोई मुझे सचमुच जानना चाहता है तो हिन्दवी में पूछो। मैं आपसे हिन्दवी में ही संवाद करूंगा और यही मेरी भाषा है। एक अन्यत्र स्थान पर वो लिखते हैं कि "तुर्क हिन्दुस्तानियम मन हिन्दवी गोयम जवाब।" (अर्थात् मैं हिन्दुस्तानी तुर्क हूं, हिन्दवी में ही प्रतिक्रिया देता हूं।)अमीर खुसरो का सबसे बड़ा अभिदान खड़ी बोली के लिए रहा है और यही कारण है कि ये खड़ी बोली हिन्दी के प्रथम कवि माने जाते हैं। ये वही खड़ी बोली है जो आज हिंदी और उर्दू के नाम से मशहूर है । उन्होंने अपनी साधारण जनभाषा में तमाम पहेलियों की रचना और नाम कमाया। आज भी हमारे देहातों और क़स्बों में उनकी पहेलियां प्रचलित है —

" हिल-हिल के वो हुआ निसंखा, ऐ सखि साजन, ना सखि 'पंखा'।

महिलाओं के अन्तर्मन की दिल छू लेने वाली बात खुसरो करते हैं और उन्होंने मार्मिक और हृदय स्पर्शी गीत व नज़्में महिलाओं पर लिखे हैं । कन्या की विदाई पर गुनगुनाया जाने वाला यह गीत आज भी आंखों में पानी भर देता है—

" काहे को ब्याहे बिदेस, अरे लखिया बाबुल मोरे।

अपनी कविताओं में उन्होंने अपने वतन भारतवर्ष की खूब प्रशंसा की है। हिंदुस्तानियों के सांवले रंग पर उन्हें गर्व होता था।

ख़ुसरो दरिया प्रेम का उलटी बाकी धार,

जो उबरा सो डूब गया जो डूबा सो पार

सेज वो सूनी देखकर रोऊँ मैं दिन-रात,

पिया-पिया मैं करत हूँ पहरों पल भर सुख न चैन।**1**

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने चरखे की महत्ता को समझा और उसे वस्त्र बनाने हेतु एक तरह की मशीन के रूप में मशहूर किया था चूंकि स्वदेशी वस्तुओं को अपनाना और विदेशी का बहिष्कार करने का गांधी जी ने संकल्प लिया था। दूसरे अमीर खुसरो गांधी जी से सैंकड़ों वर्ष पूर्व हुए हैं तो ख़ुसरो के ज़माने से ही चरखा लोकप्रिय रहा है और

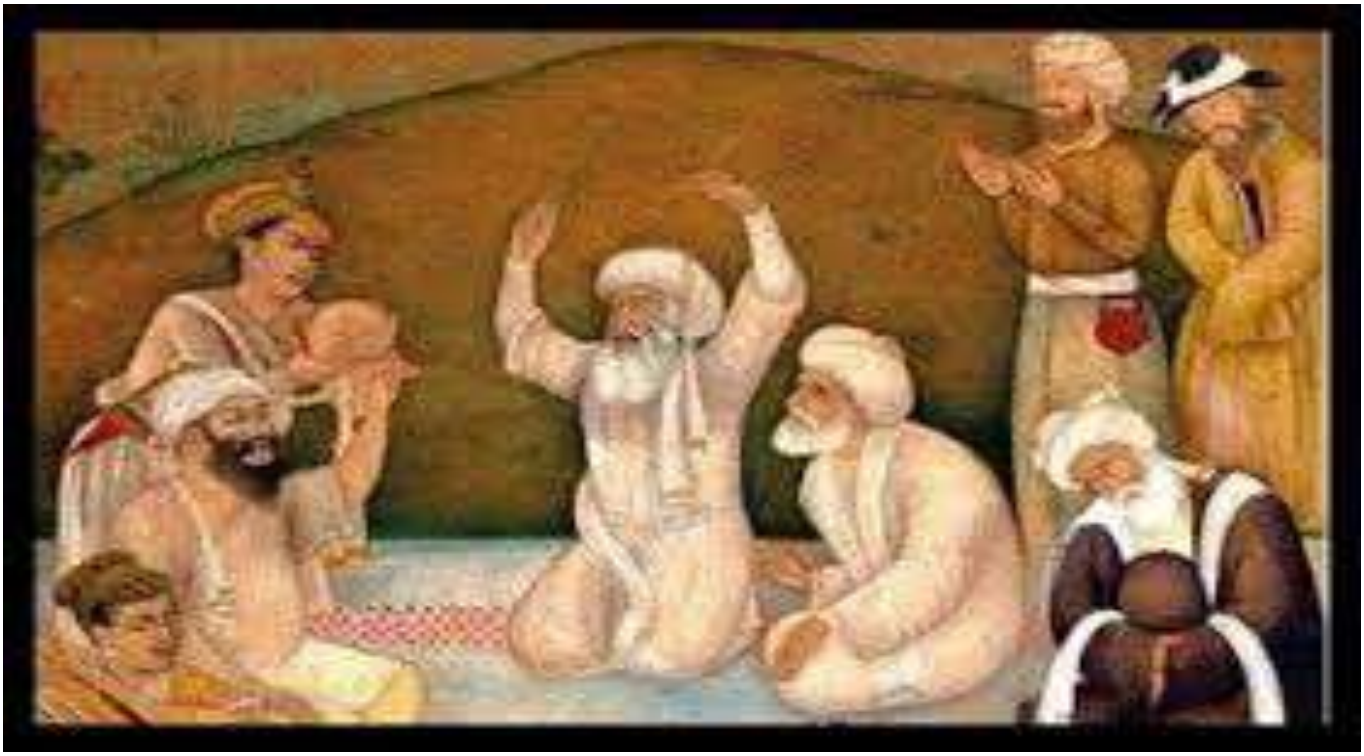

लोग कातते आये हैं। इसका जीवन्त उदाहरण उनके काव्य में दिखाई देता है, मुख्यतः उनकी उलटबासियों में मिलता है –

"भार भुजावन हम गए, पल्ले बांधी ऊन कुता चरखा ले गयो, कायते फटकू चून। खीर पकाई जतन से और चरखा दिया जलाय आयो कुत्तो गयी तू बैठी ढोल बजाय — ला पानी पिलाय। **2**

ख़ुसरो हिन्दू-मुस्लिम, ईरान-भारत, फ़ारसी-हिंदवी को निरन्तर एक - दूसरे के निकट लाने के पक्षधर थे ।इसके लिए उन्होंने अपनी कविता को भाषा-शिक्षण के रूप में स्थापित किया। हिन्दी को हिन्दवी नाम उन्होंने ही दिया था। भाषाओं को निकट लाने के लिए उन्होंने दो-सुखना का तो सहारा लिया ही, प्रथम मर्तवा ऐसी ग़ज़ल की भी रचना की जो फ़ारसी और हिंदुस्तानी दोनों भाषाओं में है। इसके पीछे कहीं न कहीं उनमें राष्ट्र भावना दिखाई देते हैं। अपने पीर निज़ामुद्दीन औलिया जी की मृत्यु के वक्त ख़ुसरो जी शाही कार्य के चलते दिल्ली से बाहर थे। उसके पश्चात् जब वापस दिल्ली पहुंचे तो पीर की मृत्यु का वृतांत सुना तो सन्न रह गए। कहते हैं कि अपने पीर की मृत्यु के कुछ दिन पश्चात उन्होंने भी संसार को त्याग दिया था। ये वास्तव में अपने पीर के अकस्मात दिव्य लोक गमन को सहन नहीं कर पाये थे।अपने पीर के वियोग में उन्होंने कहा था कि

" गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस।

चल ख़ुसरो घर आपने, रैन भई चहुँ देस।।3

ख़ुसरो का यह दिव्य दोहा अमर है और इसमें पूरा सूफ़ी दर्शन समाहित है। ख़ुसरो की मज़ार पर हर वर्ष होने वाले उत्सव का आगाज इसी दोहे से होता है।ख़ुसरो मूलत: प्रेमी व गायक कवि हैं। उनकी काव्य जगत में सूफ़ी प्रेम का भावपूर्ण चित्रण दिखाई देता है। सूफ़ी जिस अलौकिक प्रेम की पीर को गाते हैं, उसे लौकिक प्रेम के बिना अनुभव का विषय नहीं बनाया जा सकता। उनके हिन्दी गीतों और उर्दू ग़ज़लों में प्रेम की हद दर्जे की दीवानगी मिलती है। प्रेम का यह खेल हार और जीत दोनों स्थितियों में मिलन में समाप्त होता है।

ख़ुसरो के गीतों में साजन, नैहर, पिया का घर जैसे संदर्भ विशेष रूप से आए हैं और उन्होंने ही एक ख़ास तरह के गीतों को जन्म दिया, जिन्हें 'बाबुल गीत' कहा गया। ये गीत भारतीय आम जनजीवन पर गहरी छाप लिए हैं और आज भी हर कोई इन्हें गुनगुनाते रहता है। ऐसी कुछेक उम्दा पंक्तियां हैं -

काहे को बियाही परदेस,

सुन बाबुल मोरे। आए बेगाने देस,

सुन बाबुल मोरे।

भारतीय नारी की वेदना-गाथा की झलक इस गीत में बहुत स्पष्ट है। आज नारी-विमर्श की जो बात की जाती है उसकी झलक खुसरो के काव्य में स्पष्ट दिखाई देती है-

"भइया को दीहे महला-दुमहला।

और हम के दिहे परदेस।।" 4

अमीर खुसरो जी के काव्य के शिल्प विधान पर भी चिन्तन करना अपरिहार्य है। सर्वप्रथम उनकी पहेलियों के सन्दर्भ में चिन्तन करे तो

तत्कालीन काल खण्ड से प्रवाहित होती वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी अनवरत गति से प्रवाहमय है। उस समय उच्च मुस्लिम वर्ग फ़ारसी के प्रयोग के कारण भारतीय जनमानस से नहीं जुड़ पाया था। ख़ुसरो ने ठेठ देशज शब्दों का व्यवहार 'पहेलियों', 'मुकरियों' और 'दो सुखनों' में किया है। पहेली की रोचकता, जिज्ञासा और क्रीड़ापरकता की शक्ति को ख़ुसरो ने पहचाना और इसके बल पर जन-साधारण से जुड़ने में सफलता अर्जित की । एक ओर हिंदुस्तानी ज़बान के माध्यम से वे दरबार तक हिन्दी को ले जा रहे थे, दूसरी ओर दरबार को इस ज़बान के माध्यम से जनता से जोड़ रहे थे। इन सरल विधाओं से वे पाठकों को काव्य-रचना के अभ्यास के लिए भी प्रेरित करते थे।

ख़ुसरो की पहेलियों के कुछ रोचक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत हैं :

श्याम बरन और दाँत अनेक

लचकत जैसी नारी

दोनों हाथ से ख़ुसरो खींचे

और कहे तू आ री। — आरी। 5

ख़ुसरो की पहेलियों में अदभुत कल्पनाशीलता, चित्रात्मकता व सजीवता है। कुछ पंक्तियां हैं -

एक पुरुख ने ऐसी करी

खूँटी ऊपर खेती करी

खेती बारी देई जलाप

वार के ऊपर बैठा खाय।— कुम्हार 6

मुकरियाँ : भारतीय काव्यशास्त्र में वर्णित अपन्हुति अलंकार में मूल बात छिपाकर दूसरी बात को सामने लाया जाता है। भाषा की ऐसी विशेषता ख़ुसरो ने मुकरियों में उपस्थित की है। 'मुकरियाँ शब्द मुकरना से बना है, जिसका अर्थ है — कही बात से मुकर जाना। ख़ुसरो ने मुकरियों में भाषिक चमत्कार और कल्पना-शक्ति का अच्छा परिचय दिया है। एक उदाहरण देखिए :

जब कोरे मंदिर में आवे

सोते मुझको आन जगावे

पढ़त फिरत वह बिरह के अच्छर

ऐ सखी साजन, ना सखी मच्छर।7

दोसुखने : जैसा कि नाम से स्पष्ट है, इसमें दो भिन्न-भिन्न पहेलियाँ पूछी जाती हैं, जो वस्तुतः एक वक्तव्य के रूप में होती हैं। लेकिन दिलचस्प बात ये है कि दोनों के उत्तर एक ही होते हैं – अर्थ भिन्न (इन्हें हम श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द कह सकते हैं)। जैसे-

गोश्त क्यों न खाया?

गीत क्यों न गाया? (उत्तरः गला न था)

यहाँ पहला उत्तर यह बताता है कि गोश्त गला न था अर्थात कच्चा था और दूसरे में गला न था अर्थात गला बेसुरा था।

हिन्दी दो-सुखना—

खिचड़ी क्यों न पकाई

कबूतरी क्यों न उड़ाई

—छड़ी न थी। 8

इन 'दो सुखना को समझने के लिए आम आदमी की भाषा की जानकारी होनी चाहिए। कबूतरी के संबंध में छड़ी का अर्थ बहुज्ञात है। पर खिचड़ी से उसका संबंध जानने के लिए लोकभाषा का ज्ञान अपेक्षित है। 'छड़ना क्रिया का अर्थ छड़ी से पीटना होता है। बाजरे की खिचड़ी बनाने के लिए उसके उपर का बारीक छिलका उतारना जरूरी होता है। बाजरे की ढेरी को जब छड़ी से पीटा जाता है तो उसे छड़ना कहते हैं। यह प्रयोग हरियाणवी में विशेष रूप से देखा जा सकता है। बाजरे की ढेरी क्योंकि छड़ी नहीं गई थी अतः बाजरे की खिचड़ी नहीं बन पाई।

अनमेलिया या ढकोसला : ऐसी कविता को जिसमें अर्थ की संगति या मेल नहीं है, अनमेलिया या ढकोसला कहा गया है। इस काव्य-रूप में भी शुद्ध मनोरंजन-तत्त्व प्रधान है। ख़ुसरो की कविता में आशु-प्रयोग ही अनमेलिया या ढकोसले के रूप में प्रसिद्ध हुए हैं। उनका एक ढकोसला तो बहुत प्रसिद्ध है। वे एक बार कहीं जा रहे थे। रास्ते में उन्हें बहुत प्यास लगी। चलते-चलते उन्हें एक कुआँ दिखाई दिया जिस पर कुछेक महिलाएं पानी भर रही थीं। प्यास से व्याकुल ख़ुसरो ने महिलाओं से पानी माँगा। उन्होंने ख़ुसरो को पहचान लिया और कविता सुनकर ही पानी पिलाने की शर्त रखी। सबने अपनी-अपनी पसंद के विषयों पर कविता सुनने की फ़रमाइश रखी। तब ख़ुसरो ने तुरंत यह ढकोसला सुनाया था :

"खीर पकाई जतन से और चरखा दिया जलाय

आया कुत्ता खा गया तू बैठी ढोल बजाय

—ला पानी पिला

पिला-पिला-पिला।" 9

ग़ज़ल : 'ग़ज़ल अरबी, फ़ारसी और उर्दू की सबसे लोकप्रिय विधा है। पिछले 30-40 वर्षों में हिन्दी में भी ख़ूब ग़ज़लें कही गई हैं। ग़ज़ल का शाब्दिक अर्थ है — प्रेयसी से बातचीत। दो-दो पंक्तियों के समन्वय से इसमें शेरों की संरचना होती है। ये पंकितयाँ अथवा चरण 'मिसरा कहलाते हैं।ख़ुसरो ने फ़ारसी में बड़ी संख्या में ग़ज़लें कहीं हैं। हिन्दी में उतनी ग़ज़लें उन्होंने नहीं कही हैं पर उन्होंने हिन्दी और फ़ारसी में सम्मिलित रूप से ग़ज़ल कहने का अदभुत प्रयास किया है। इस शैली की उनकी यह ग़ज़ल बहुत चर्चित हैं :

"जे हाले मिस्कीं मकुन तग़ाफ़ुल दुराए नैनाँ बनाए बतियाँ

कि ताबे-हिजराँ न दारम ऐ जाँ, न लीहयो काहे लगाए छतियाँ।10

निश्चय ही ख़ुसरो का काव्य दो संस्कृतियों के मध्य सेतु बनाने वाला ही नहीं, बल्कि वह तो ऐसी चादर बुनने वाला है, जिसका ताना यदि मुस्लिम संस्कृति का है तो बाना हिन्दू संस्कृति का और यह आंतरिक संयोजन उनके रक्त में ही है। अमीर ख़ुसरो एक भारतीय माँ और तुर्की पिता की संतान थे। उनमें दो संस्कृतियों का सम्मिलन था और दोनों के उत्तमांश को उन्होंने संजोया था। उन्हें भारतीय होने का बहुत गर्व था और वे हिन्दवी से गहरा अनुराग रखते थे। आम आदमी की ज़बान को ख़ुसरो ने साहित्यिक भाषा हिन्दवी में ढाल दिया और इसे वे न अरबी से कम आंकते थे और न ही फ़ारसी से। अमीर ख़ुसरो ने अपने काव्य में ' सत्यं शिवम् सुन्दरम' की अभिव्यक्ति की है ।भारत के अतिरिक्त ईरान, अफ़ग़ानिस्तान, पाकिस्तान, बंगलादेश इत्यादि देशों में ख़ुसरो की कविताओं का यशोगान होता है। उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता, प्रेम, सौहार्द्र, मानवतावाद और सांस्कृतिक समन्वय के लिए पूरी ईमानदारी और निष्ठा से काम किया। यदि हम कहें कि अमीर खुसरो हिन्दू-मुस्लिम एकता के अग्रदूत रहे हैं तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। उनकी शायरी इसीलिए जन-जन में लोकप्रिय हुई और यही कारण है कि उनकी लोकप्रियता में आज़ तक कोई कमी महसूस नहीं होती है। उनका मानव समाज के हितार्थ हेतु और साहित्य के क्षेत्र में जो अभिदान रहा है उसे हम विस्मृत नहीं कर सकते हैं।

सन्दर्भ सूची :

1.डॉ. के.एल.खुराना,मध्यकालीन भारतीय संस्कृति पृ.- 159

2. डॉ. राम कुमार वर्मा,हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास- , पृ. 38

3.डॉ. मलिक मोहम्मद,अमीर खुसरो, भावात्मक एकता के मसीहा, पृ. 31

4.वही, पृ. 31

5. गोपीचंद नारंग, अमीर खुसरो , पृ.-97

6.वही, पृ. 97

7.गोपीचन्द नारंग ,पृ. 29

8. डॉ. मलिक मोहम्मद,अमीर खुसरो भावात्मक एकता के मसीहा पृ.- 37

9.वही, पृ.-207

10. वही, पृ.-209

पत्राचार पता - छविन्दर कुमार, शोधार्थी, विद्या वाचस्पति हिन्दी, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला, जनपद -कांगड़ा

यादों के गलियारों से : विष्णु प्रभाकर

शीला झुनझुनवाला

बात उन दिनों की है जब हम बम्बई से पहली बार दिल्ली आये थे l बम्बई की गहमागहमी भरी जिन्दगी के बाद दिल्ली बहुत शांत लगी l न यहाँ बम्बई जैसी चारों ओर रोशनी की चकाचौंध – न आपाधापी में भागता जन-समुदाय, न वैसी गगनचुम्बी इमारतें, न लोकल ट्रेनों की आवाजाही और न ही डबल डेकर बसें l दिल्ली की गंगा- जमुनी संस्कृति ने हमें बहुत जल्दी ही अपने आगोश में ले लिया और हम उसमें घुल- मिल गये l हाँ, एक बात अवश्य खटकती रही और वह था बम्बई का साहित्यिक वातावरण और मित्र मण्डली l मेरी पत्रकारिता की शुरुआत बम्बई से ही हुई थी l दिल्ली में प्रारंभिक दिनों में, वैसे तो सारा दिन घर की देखभाल, और गृहस्थी के कामों में इतना उलझ गई कि समय नहीं मिलता था और कुछ सोचने का, किन्तु कहीं न कहीं अन्दर एक खालीपन-सा महसूस करती रहती थी, कि मानसिक और बौद्धिक संतुष्टि के लिए तो कुछ कर नहीं पा रही हूँ l इसलिए जब ईश्वर के वरदान के समान दिल्ली से महिला पत्रिका 'अंगजा' निकालने का प्रस्ताव सामने आया तो मैंने झट स्वीकार कर लिया l

उस समय तक दिल्ली के साहित्यिक जगत और यहाँ की गतिविधियों के साथ मेरा परिचय बहुत कम या कहें, नहीं के बराबर था l व्यक्तिगत रूप से मैं बहुत कम लोगों को जानती थी – हाँ टाइम्स ऑफ इंडिया की प्रमुख पत्रिका धर्मयुग से जुड़े रहने के कारण पत्राचार के माध्यम से अनेक लोगों के बारे में पूर्ण जानकारी तो थी ही l अब प्रश्न उठा कि यहाँ के लेखक, लेखिकाओं के परिचय को मूर्त रूप कैसे दिया जाए l तभी पता चला कि दिल्ली के दिल में बसते कनाट प्लेस के कॉफ़ी हाउस में यदि शाम के समय जाएँ तो वहां लेखकों और साहित्य की दुनिया में प्रविष्ट करने वाले युवकों की मण्डली प्रतिदिन शाम को सजती है l हम अगले दिन ही कॉफ़ी हाउस पहुँच गये l सुनी, सुनाई बात सही साबित हुई l कॉफ़ी हाउस के मुक्त वातावरण में अपने-अपने तर्कों के साथ अनेक विषयों पर चर्चा करते – बतियाते – बहस करते युवा रचनाकारों की अगली पीढ़ी वहां मौजूद दिखाई पड़ी l फिर तो शाम के समय कॉफ़ी हाउस जाने का हमारा नित्य क्रम बन गया

वहीं सबसे पहले मैंने प्रसिद्ध रचनाकार प्रतिष्ठित साहित्यकार, उपन्यासकार, विष्णु प्रभाकर जी के प्रत्यक्ष दर्शन किये l कॉफ़ी हाउस के एक कोने में अपने से कहीं छोटी उम्र के युवकों से घिरे हुए वे बैठे थे l सफ़ेद कुर्ते पाजामें और दमकते माथे पर सजती हुई सफ़ेद गाँधी टोपी ने मुझे सहज ही उनके गाँधी वादी सिद्धांतों पर चलने वाले एक तपस्वी

जैसे व्यक्तित्व ने आकर्षित किया l

कॉफ़ी हाउस में संध्या के समय आना उनकी दिनचर्या का एक प्रमुख अंग था l सहज रूप में सभी आयु वर्ग के जिज्ञासु, सीखने को आतुर, संघर्षरत, विभिन्न विचारधाराओं के हर आयु, हर वर्ग के लोग उनके व्यक्तित्व से प्रभावित दिखाई पड़ते थे l विष्णु प्रभाकर जी को मैंने कभी आयु में बड़े होने के नाते, किसी नवयुवक को भी, कभी उपदेश देते हुए नहीं देखा, न ही उन्हें आशीर्वाद देते हुए देखा l मित्र के रूप में वे सभी की बात सुनते, बीच-बीच में सहज रूप में अपनी टिप्पणी देते l जैसे परिवार के बीच में बैठा कोई बुजुर्ग व्यक्ति अपने बच्चों के मन की बात जानने को और उनके युवामन के आंतरिक द्वंदों को समझने की कोशिश कर रहा हो l

कॉफ़ी हाउस की उन नियमित संध्याओं ने विष्णु प्रभाकर जी से मेरी लम्बी बातचीत कभी नहीं हुई, क्योंकि वे इतने लोगों से घिरे हुए रहते थे कि लम्बी बातचीत का अवसर ही नहीं मिलता था l हाँ, उनके व्यक्तित्व के बारे में बहुत कुछ जान सकी l उनके लेखन के प्रति उत्कंठा जागृत हुई और उनकी सभी महत्वपूर्ण कृतियों को पढ़ा, आकलन किया और बहुत कुछ सीखा

वे अक्सर कहते थे "युवा ही तो हमारा भविष्य हैं l इनके दम पर ही तो साहित्य और भाषा अपने आगे का सफ़र तय करेगी l"

एक बार उनके पहनावे के बारे में मैंने सहज ही पूछ लिया कि वे केवल खादी ही क्यों पहनते हैं ?

उन्होंने बताया कि युवावस्था से गाँधी जी के अहिंसावादी विचारों से वे प्रभावित रहे और तभी स्वतंत्रता आन्दोलन के समय उन्होंने प्रण लिया था कि जीवन पर्यंत खादी पहनेंगे l अपनी बात को बढ़ाते हुए उन्होंने आगे कहा, "गाँधी जी की अहिंसा में मेरी पूरी आस्था है किन्तु मैं मूलतः मानवता वादी हूँ अर्थात उत्कृष्ट मानवता की खोज ही मेरा लक्ष्य है l वर्गहीन अहिंसक समाज किसी दिन स्थापित हो सकेगा या नहीं पर मैं मानता हूँ, उसकी स्थापना के बिना मानवता का कल्याण नहीं l मैं गाँधी जी के अहिंसावादी विचारों से प्रभावित अवश्य रहा हूँ किन्तु बदलते समय और परिस्थितियों के अनुरूप प्रगतिशील सोच भी मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है l इस प्रकार मैं कह सकता हूँ कि मैं पूर्णरूप से गाँधी वादी नहीं हूँ, अन्य विचारधाराओं का भी मैं उतना ही सम्मान करता हूँ जितना कि गाँधी विचारधारा का l"

एक बार मैंने इन्हीं छोटी-छोटी वार्ताओं के बीच उनसे कहा- "मैं अक्सर कॉफ़ी हाउस आती हूँ अपने पति के साथ और कभी अकेले भी, आपको सदैव इतने लोगों से घिरे हुए पाती हूँ l समाज के एक बड़े वर्ग से, जिसमें लेखक, पत्रकार, नवयुवक, प्रौढ़, वैसे लोग भी जो आपसे मिलने के लिए इंतजार करते हैं खाली समय का l मैंने अक्सर एक पहलवान किस्म के आदमी को भी देखा है जो आपको पिताजी कहकर संबोधित करता है – आप कैसे यह सब निर्वाह कर पाते हैं"

विष्णु जी का सहज उत्तर था – "हर व्यक्ति सभी क्षेत्रों में कुछ विशेष उल्लेखनीय कर पाए यह संभव नहीं, पर हर व्यक्ति के लिए किसी न

किसी क्षेत्र में कुछ उल्लेखनीय कर पाना अवश्य संभव है। समाज में प्रत्येक व्यक्ति का मानसिक स्तर एक जैसा नहीं होता। काल जिनको चुनता है उनकी संख्या विरल होती है। आसमान में सूर्य एक ही है, चन्द्रमा भी एक है पर उसमें दोष होने पर भी रसिक जन उसे कितना प्यार देते हैं। तारे असंख्य हैं, वे सूर्य-चन्द्र जैसा प्रकाश तो नहीं देते, पर जो देते हैं उसका भी महत्त्व है। महत्त्व तो पटबीजनों का भी होता है। कथा आती है कि सूर्य जब अस्ताचल की ओर जा रहे थे, तो उन्हें एक ही पीड़ा साल रही थी कि अब जगत को कौन प्रकाश देगा। तब मिटटी के नन्हे से दिए ने कहा था, 'प्रभु आप चिंता न करें, मैं हूँ यहाँ पर।'

इस बातचीत से मैंने पाया कि वे एक बड़े लेखक, महान साहित्यकार तो थे ही, उससे अधिक एक सहज मित्र, युवाओं के पथ प्रदर्शक, आत्मीय सहोदर अधिक थे।

हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाये जाने के विषय पर बात करते समय एक बार उन्होंने कहा था "निसंदेह हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाया जाना चाहिए क्योंकि हिंदी ही सबसे अधिक व्यापक है। आज भी दक्षिण भारतीय हिमालय की यात्रा करता है, और उत्तर भारत का आदमी कन्याकुमारी और रामेश्वरम की यात्रा - इन यात्राओं में केवल हिंदी का प्रयोग करके काम चलाया जाता है। हिंदी को किसी ने थोपा नहीं है किन्तु इन्हीं कारणों से हिंदी जन संपर्क की भाषा बन चुकी है। इसलिए बंगाल हो या मद्रास दोनों प्रान्तों में हिंदी खूब पढ़ी जाती है, क्योंकि वे जानते हैं, दिल्ली आने के लिए उन्हें इसी भाषा की जरुरत होगी। एक कारण और भी है कि सरकारी दफ्तरों में अंग्रेजी भले ही उनकी मदद कर सकें पर व्यापार और संस्कृति के क्षेत्र में हिंदी ही उनका मार्गदर्शन करेगी।" इस सन्दर्भ में एक बार उन्होंने कहा था, "हर भाषा के शब्द अपने होते हैं लेकिन शब्द यात्राएँ भी करते हैं, चुपचाप आकर वे दूसरी भाषाओं में घुल मिल जाते हैं। भारत की सभी मूल भाषाओँ में जो सर्वोत्तम है उसे हिंदी में लाना चाहिए। वहां के महान पुरुषों, वहां की महान महिलाओं पर और संस्कृति के बारे में अधिक से अधिक लिखना चाहिए। भाषा को अधिक गूढ़ न बनाकर उसमें आंचलिक शब्दों के प्रयोग से ही उसे अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।"

इसके बाद, एक लम्बे अन्तराल तक, विष्णु प्रभाकर जी से मिलना नहीं हो पाया। 'अंगजा' पत्रिका के प्रकाशन के प्रारंभिक दिनों में इतना व्यस्त हो गई कि कॉफ़ी हाउस जाने का समय ही नहीं मिल सका। अंगजा को पाठकों का बहुत प्यार और स्नेह मिला किन्तु जैसा अमूमन होता है, सेंट्रल न्यूज एजेंसीज ने, जो स्वयं कोई प्रकाशन समूह नहीं था, अंगजा को 10,000 के सर्कुलेशन पर बंद करने का निर्णय ले लिया। मेरे लिए उस समय यह एक बहुत बड़ा आघात था। 'सिर मुंडाते ही ओले पड़े' वाली कहावत सच साबित हुई। कालांतर में नियति का यह निर्णय मेरे लिए एक वरदान साबित हुआ। शीघ्र ही हिंदुस्तान टाइम्स समूह की प्रतिष्ठित पत्रिका 'कादम्बिनी' में सहायक संपादक के रूप में मेरी नियुक्ति हो गई। एक बार फिर से जीवन को गति मिल गई। एक स्थापित प्रमुख प्रकाशन समूह से जुड़ने का एहसास ही अलग होता है। लेखकों लेखिकाओं से मिलने का दायरा बढ़ता गया।

कादम्बिनी फिर दैनिक हिंदुस्तान के विभिन्न पदों पर रहने के उपरांत साप्ताहिक हिंदुस्तान जैसी विशिष्ट पत्रिका के संपादक पद को सँभालना मेरे लिए बड़ी चुनौती और गौरव की बात थी।

पत्रकारिता की इस लम्बी यात्रा में विष्णु प्रभाकर जी से मिलने का, उनकी रचनाओं के सम्बन्ध में बातचीत करने और छापने का कई बार सौभाग्य मिला। कई आयोजनों में उनसे भेंट भी होती रही पर कभी लम्बी बातचीत का सुअवसर नहीं मिला – हां, मेरे बच्चों के विवाह के अवसर पर वे आये थे।

1990 में मेरी पुस्तक 'कुछ कही कुछ अनकही' प्रकाशित हुई - मैंने उन्हें वह पुस्तक भेंट की और कहा, बताइयेगा, 'आपको कैसी लगी' बहुत अरसा बीत गया – प्रभाकर जी की कोई प्रतिक्रिया या पत्र मुझे नहीं मिला – तो मेरा मन बहुत खिन्न हो गया। क्योंकि मुझे मालूम था कि पत्रों के लिखने के मामले में वे तनिक भी कृपण नहीं थे। एक लम्बे अन्तराल के बाद जब उन दिनों प्रचलित अंतर्देशीय पत्र पर लिखा एक पत्र मुझे मिला तो मैं गदगद हो गई यह पढ़कर, कि उससे पहले भी उन्होंने मेरी पुस्तक पर अपनी प्रतिक्रिया भेजी थी और मेरी ओर से पत्र प्राप्ति का उत्तर न पाकर दोबारा उन्होंने मुझे पत्र लिखा – वह पत्र मैंने कंजूस व्यक्ति की धाती के समान, आज तक संभाल कर रखा है।

पत्र इस प्रकार था,

प्रिय बहन

आपका पत्र मिला था, उसके बाद श्री रमेश चन्द्र जी द्वारा दिए गए भोज में आपसे भेंट हुई। आपकी आत्मकथा 'कुछ कही कुछ अनकही' के सम्बन्ध में मैंने आपको लिखा था, लेकिन किसी कारण वश वह पत्र आप तक नहीं पहुँच सका।

मैं आपकी आत्मकथा अंत से इति तक तो नहीं पढ़ पाया, लेकिन अधिकांश भाग पढ़ गया और मुझे यह कहने में संकोच नहीं है कि यह पुस्तक आपके पारिवारिक जीवन कि कहानी को कहती ही है, परन्तु अपने युग की गाथा को भी आपने सहज भाव से अंकित किया है।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि आपने बड़े सहज भाव से अपने दुख का चित्रण किया है। आपका व्यक्तिगत जीवन तो अंकित हुआ ही है लेकिन आप दोनों जिस तरह सार्वजानिक जीवन से जुड़े रहे, उसका भी सटीक चित्रण हुआ है, बिना कोई दावा किये आपने अपने अन्तरंग क्षणों को स्वर दिया है, वहीँ सार्वजानिक जीवन को भी निरावरण किया है। घरेलु के साथ-साथ 'ठाकुर' जिस इनकम टैक्स विभाग से जुड़े थे, उसकी जटिलताओं का बड़ा रोमांचक वर्णन इसमें मिलता है। कहीं-कहीं तो पढ़ते हुए रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इसके

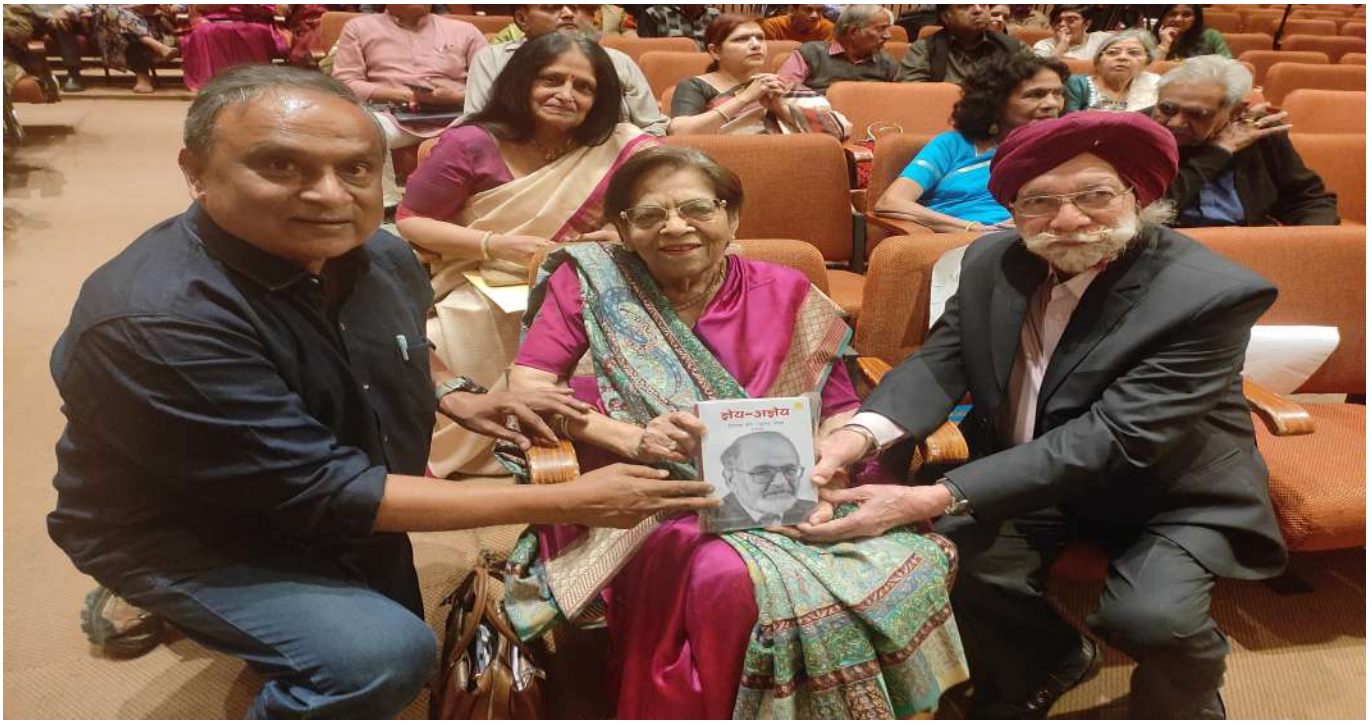

अतिरिक्त फ़िल्मी जगत के रोमांटिक जीवन की झलकियाँ भी इसमें मिलती हैं l और इतने सहज भाव से मिलती हैं कि ऐसा लगता है घटनाएँ पाठक के सामने ही घट रही हैं l

मेरा आप लोगों से कोई घनिष्ठ सम्बन्ध तो नहीं रहा फिर भी अनेक कारणों से मुझे आप लोगों को समझने का अवसर मिला l आप संपादक हैं, तो मैं लेखक था l संपादक और लेखक का एक रिश्ता होता है l इसी नाते से मैं आपको पहचानता रहा l

मुझे याद है राजधानी में रहने वाले राजस्थानी लेखकों ने एक बार टी. पी. का सम्मान किया था l मैं उस सभा का अध्यक्ष था l उसके बाद भी उनसे बहुत बार मिलना हुआ दम्भ उन्हें छू भी नहीं गया था, इन्हीं बातों पर आपने अपने संबंधों के माध्यम से प्रकाश डाला है l मुझे सबसे अच्छी बात यही लगी कि इसमें बनावट कहीं नहीं है l सब कुछ सहज भाव से कहा गया है l कहीं-कहीं तो ऐसा लगता है कि हम कोई उपन्यास पढ़ रहे हैं l रहस्य, रोमांच से भरा उपन्यास और कहीं कहीं अन्तरंग आत्मिक क्षणों को दिखाता हुआ गृहस्थ जीवन l मुझे एक क्षण को भी ऐसा न लगा कि यह वर्णन कृत्रिम है l इसलिए मैं 'कुछ कही कुछ अनकही' से प्रभावित हुआ जिसे आपने अनकही कहा है उसे भी मैं आपकी लेखनी के द्वारा जान सका l यही इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता है l और इसके लिए मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूँ l

मुझे वह दृश्य बहुत अच्छी तरह से याद है जब मैं आपके पुत्र या पुत्री के विवाह के स्वागत समारोह में गया था l वहां पर उपस्थित अपार भीड़ में फ़िल्मी जगत की जानी मानी सभी मशहूर हस्तियाँ वहां मौजूद थी l सब लड़के और लड़कियां उनके ऑटोग्राफ लेने के लिए कैसे व्याकुल थे l यहाँ तक कि एक लड़की तो मेरे जेब से पैन निकाल कर ले गई थी l ऐसे रोमांचक क्षण बहुत कम देखने को मिलते हैं l यह आप लोगों कि लोकप्रियता और व्यवहार के कारण था l मैं जानता हूँ कि ठाकुर का फ़िल्मी जगत से जो सम्बन्ध था उसको लेकर ग़लतफ़हमी भी पैदा हो गई l आज कि दुनिया में यह सब साधारण बात है l बहरहाल जहाँ तक आपकी पुस्तक का सम्बन्ध है, वह एक पठनीय कृति है, और अपने युग का दर्पण भी l मेरी हार्दिक बधाई l

आपका विष्णु प्रभाकर

उस दिन मैंने जाना – मानव मन की अनुभूतियों को समझने की क्षमता रखने वाला संवेदनशील लेखक ही महान साहित्य की रचना कर सकता है l

विष्णु जी एक कालजयी रचनाकार थे – उनका समग्र साहित्य उनके स्वयं के जीवन का ही प्रतिरूप है – परिस्थिति, परिवेश और समाज जैसा देखा, समझा उसको ही उन्होंने अपने साहित्य में व्यक्त किया है l

उनका कहना था "समाज के यथार्थ से कटकर व्यक्ति लेखक नहीं हो सकता l समाज में बदलाव लाने में साहित्यकार की बड़ी भूमिका है l मन पर पड़ने वाले प्रभाव ही सामाजिक बदलाव लाते हैं l"

उनका मानना था कि 'जीवन का उद्देश्य सत्य की तलाश और दूसरे के काम आना ही है l तलाश के क्रम में वे लिखने से ज्यादा पढ़ने को महत्वपूर्ण मानते थे l उनके मतानुसार पढ़ने से सोच को विस्तार

मिलता है और लेखन को दृढ़ता मिलती है और सत्य की तलाश सरल हो जाती है l लेखन के लिए पहली शर्त है लेखन के प्रति ईमानदार होना – ईमानदार लेखक अपनी हर रचना में विद्यमान होता है, दृष्टि हो तो आसानी से पहचाना जा सकता है l सृजनकर्ता हर समय, हर कहीं अनुभव प्राप्त करता है, और सीखता जाता है l नए अनुभव से नया रचता है l' उनका इस कथन में विश्वास रहा कि जिन्दगी केवल आर्थिक या भौतिक विकास नहीं है, बल्कि उससे कहीं अधिक ऊँची चीज है l आन्तरिक विकास ज्यादा महत्वपूर्ण है l

विष्णु प्रभाकर जी संवेदनशील साहित्यकार रहते हुए भी सदैव मानवीय मूल्यों को समर्पित रहे l उनका स्वभाव सदा घुमक्कड़ी रहा l वे अक्सर कहते थे "मेरे लिए तो कर्म ही पूजा है, अँधेरे-उजाले तो सदा से एक दूसरे को लीलते ही रहे हैं l"

विष्णु जी के साथ कॉफ़ी हाउस की उन बैठकों से अर्जित अनुभवों, उनकी कई महत्वपूर्ण रचनाओं जैसे अर्धनारीश्वर, आवारा मसीहा, जयोति पूंज हिमालय, क्या खोया क्या पाया आदि को पढ़ा, समझा और उस सबसे मैंने बहुत कुछ सीखा l उनकी स्मृति को सादर नमन l

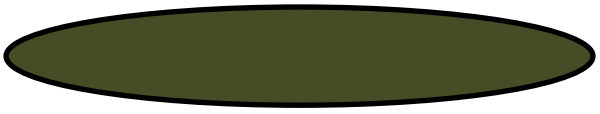

आदरणीय विष्णु प्रभाकर जी, जैनेन्द्र जैन जी, यशपाल जैन जी, भवानी प्रसाद मिश्रा जी, डॉ लक्ष्मी नारायण लाल जी और संतोषानन्द जी को लेकर मेरा एक बड़ा आलेख नवभारत टाइम्स में प्रकाशित हुआ था 1982 में।

मुझे विष्णु प्रभाकर जी से उनके घर, कुंडेवालान। अजमेरी गेट पर मिलने का सौभाग्य मिला था। अजमेरी गेट की घुमावदार गलियों के बीच उनका घर था। वे नीचे के कमरे में बैठते थे।

ज़मीन पर गद्दा और उसके सामने पुराने युग की छोटी सी मेज़नुमा चौकी जिस के सामने आलथी-पालथी मार कर ही बैठा जा सकता था। उनका रक्ताभ चेहरा और श्वेत खादी के वस्त्र उनकी आभा में चार चाँद लगाते थे। उन दिनों मोबाइल जैसे कैमरे न होते थे। मैंने आलेख के लिए उनसे ही उनका फोटोग्राफ मांगा था और उन्हों ने पासपोर्ट आकार का फोटो मुझे दिया भी।

शीला जी! आपका भी स्नेहपात्र होने का अवसर मुझे मिला है जब आपने साप्ताहिक हिंदुस्तान में संपादक रहते हुए मेरी दो आवरण कथाओं को 1985 में अपनी पत्रिका में प्रमुखता से प्रकाशित किया था।

आप सब हिन्दी पत्रकारिता के शलाका व्यक्तिवों में से एक हैं। आप, त्रिलोकदीप जी, प्रभाष जोशी जी, प्रयाग शुक्ल जी, भूपेंद्र कुमार स्नेही जी, डॉ शेरजंग गर्ग जी, रवीन्द्र जैन जी, जैनेन्द्र जैन जी, डॉ लक्ष्मी नारायण लाल जी, नीरज जी, भवानी दादा, शैलेश मटियानी जी, राजेंद्र यादव जी, राम सेवक यादव जी, नीलम सिंह जी.... और मेरे आकाशवाणी नई दिल्ली से हिन्दी समाचार वाचन के दौरान वाचक समूह से देवकीनन्दन पाण्डेय जी, रामानुज प्रसाद जी, अशोक वाजपेयी जी, जय नारायण शर्मा जी, विनोद कश्यप जी, इन्दु वाही जी, कृष्ण कुमार भार्गव जी, अखिल मित्तल, राजेंद्र चुघ जी, क्लेयर नाग जी तो विदेश प्रसारण सेवा के मोहन निराश जी और युव वाणी की कमला शास्त्री जी, वेद क्वात्रा जी, करुणा श्रीवास्तव और रुमा बनर्जी (दाने अनार के सीरियल की नायिका भी) बहुत सारी स्मृतियाँ उभर आई हैं आपके आलेख को पढ़ कर.....

शीला जी आप स्वस्थ रहें और इसी भांति अपनी स्मृतियों के पिटारे को खोल कर सब को आनंदित करती रहें....

आपकी सक्रियता श्लाघनीय है.... आदरणीय स्वर्गीय टीपी झुनझुनवाला फाउंडेशन के वार्षिक कार्यक्रमों में आपका निमंत्रण और यदा-कदा आपके फोन आना आपकी आत्मीयता को न केवल प्रदर्शित ही करता है बल्कि अभिभूत भी कर जाता है....

हम तो आपसे बहुत छोटे हैं, आपके दिखाये रास्ते पर चल सकें यही हमारे लिए उपलब्धि होगी।

इस अवसर पर मैं आदरणीय त्रिलोकदीप जी को भी विशेष प्रणाम भेजना चाहूँगा जो आपकी ही तरह पुराने और नए के मध्य एक मजबूत सेतुबंध हैं।

मैं यहाँ पर मैडम चन्द्रकांता किनारा जी की उपस्थिती भी देख रहा हूँ।

चंद्रकांता जी 1981 में शायद आईपी कॉलेज की हिन्दी विभागाध्यक्ष थीं। उनके कॉलेज में आयोजित इंटर-कॉलेज हिन्दी कविता प्रतियोगिता को मैंने जीता था, यानि प्रथम पुरस्कार मुझे दिया गया था।

हमें यह बताया गया कि यह पुरस्कार शीघ्र ही प्रदान किया जाएगा और हमें निमंत्रित भी किया जाएगा। आज उस घटना को घटे 43 वर्ष से अधिक होने जा रहे हैं। हमें निमंत्रण नहीं मिला न ही पुरस्कार और न ही प्रमाणपत्र....

सोचा चंद्रकांता मैडम को प्रणाम कर यह तकादा भी कर लूँ। मैडम शायद उन दिनों शरद दत्त जी के साथ दूरदर्शन पर साहित्यकी या किसी कार्यक्रम में बराबर उपस्थिति देती थीं...

सादर,

सुधेन्दु ओझा

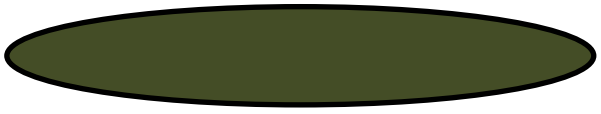

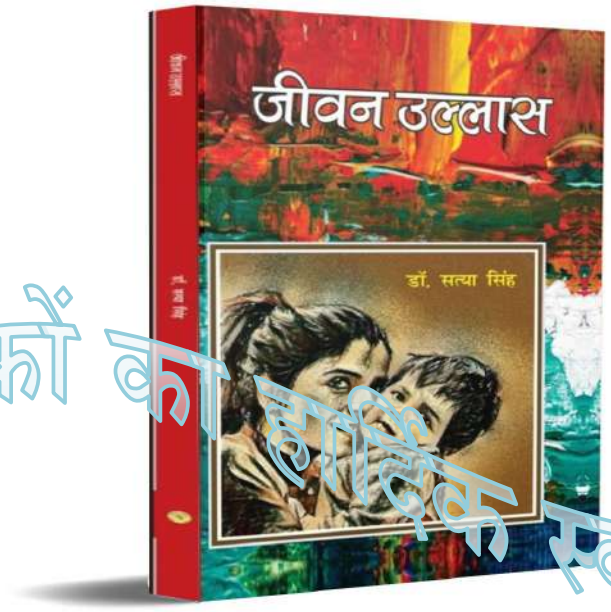

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : जीवन उल्लास
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : 978-81-958985-3-4
Language : हिन्दी
Year of Publication :2023
Page Numbers : 108
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता
जीवन के विभिन्न भाव-दशाओं और सत्य को निरूपित करती सरल एवं सरस कविता।

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

राजकुमार कुम्भज की दो कविताएँ

1.

मैं आदमी नहीं, शीशा हूँ
मैं आदमी नहीं, शीशा हूँ
ये सच्चाई सिर्फ़ तब ही समझ पाया
जब-तब सच्चाई के लिए सर उठाया
और पत्थर से टकराया
जबकि घर जैसा कोई घर नहीं था
और मैं एक खुशनुमा घर में था
जबकि डर जैसा कोई डर नहीं था
और में कमबख्त एक डर में था
जबकि जैसा इधर था वैसा ही उधर था
और मुझे पता नहीं कि घर था?
पता नहीं था भी या नहीं था?
फिर भी कहीं न कहीं था ज़रूर
ज़खरी चीज़ें जमा करता हुआ
ज़खरी चीज़ों के लिए लड़ता हुआ
और ये कहता हुआ कि लडूंगा अंत तक
हर किसी जीवन में वसंत तक
हर वक़्त में आएगा आने वाला
हर वक़्त में गाएगा गाने वाला
कि सच्चे का बोल बाला
और हरेक झूठे का मुँह काला
मैं आदमी नहीं, शीशा हूँ

2.

कहते नहीं थकते हैं वे
कहते नहीं थकते हैं वे
कि जैसे भी हो, जैसे भी हो, जब भी हो
जल्द ही होगी, उनकी ही सरकार होगी
रोटी, कपडा, मकान हो, न हो, हर्ज़ नहीं
घर-घर में बम -बारूद, तलवार होगी
धोबी को दूध धोने की,
मगर मच्छों को रोने की
कुत्तों को भौंकने, लोहार को भट्टी झौंकने की
सर्व धर्म समभाव से खुली आज़ादी होगी
नंगे राजा की नंगा न कहने की मुनादी होगी
कहा जाएगा कि डरो तो डरना होगा
कहा जाएगा कि मरो तो मरना होगा
कहते नहीं थकते हैं वे

संपर्क: 331, जवाहरमार्ग, इंदौर - 452001
फ़ोन: 0731-2543380
ईमेल: rajkumarkumbhaj47@gmail.com

घुड़सवार योद्धा वाली स्थापित मूर्तियों के संकेत

इस बार गर्मी की छुट्टियों में जब पोता-पोती दिल्ली घूम कर लौटे तब उन्होंने वहाँ जो-जो फोटो लिये थे,वह सब दिखाने लगे। मैंने जब उनका फोटो महाराणा प्रताप व लक्ष्मीबाई की प्रतिमा के (नीचे खड़े होकर) साथ देखा तब मैंने उनसे उन प्रतिमाओं से क्या संकेत मिलता है, पूछा। पहले तो वे यही बोले ये शुरवीर थे लेकिन जब और स्पष्ट करते हुये मैंने पूछा कि ये जिस घोड़े पर बैठे हैं उससे क्या समझ में आता है तब उन्होंने कहा कि मार्गदर्शक ने ऐसा कुछ तो बताया ही नहीं।तब मैंने उन्हें महाराणा प्रताप की घोड़े पर बैठी प्रतिमा देखने को कहा, जहाँ उस घोड़े का एक पाँव उठा हुआ है अर्थात हवा में है।वहीं राणी लक्ष्मी बाई की भी घोड़े पर बैठी प्रतिमा दिखा बताया कि यहाँ घोड़े के दोनों पाँव हवा में परिलक्षित अर्थात जमीन से उठे हुवे दिखाई दे रहे हैं। तब बच्चों ने पूछा क्या राणी लक्ष्मी बाई महाराणा प्रताप से ज्यादा अच्छी घुड़सवार थीं क्योंकि इनके घोड़े के तो आगे वाले दोनों पाँव हवा में उठे हुवे हैं ? तब मैंने उनसे कहा ऐसी बात नहीं है। दोनों ही एक समान अच्छे घुड़सवार के साथ-साथ पराक्रमी व शूरवीर थे। प्रतिमा में घोड़े का एक पाँव हवा में या दो पाँव हवा में इसके अलावा दोनों पाँव जमीन पर से हमें योद्धाओं के बारे में कुछ संकेत मिलता है अर्थात घोड़ों का ऐसा रुप ऊपर बैठे योद्धा के बारे में बहुत कुछ बता देता है। जब बच्चों ने संकेतों के बारे में बताने का कहा तब मैंने उन्हें इन संकेतों के बारे में घर लौटने पर दूसरे दिन आराम से समझा दूँगा कह, वापस घर ले आया।

दूसरे दिन वे बच्चे, दोपहर में ही, मेरे से जानने के लिये इकट्ठे आ धमके।तब उन्हें समझाते हुवे उन्हें मैंने जो कुछ बताया वो इस प्रकार है - जब मूर्ति में घोड़े का एक पाँव उठा हुआ, कहिये या हवा में है, से यह तात्पर्य है कि योद्धा लड़ाई के दौरान घायल / जख्मी हो गया और उस योद्धा की मृत्यु युद्ध क्षेत्र में नहीं हुयी बल्कि बाद में अन्य जगह पर उस जख्म के चलते हुयी।

लेकिन जब बायाँ पैर हवा में हो तो उस घोड़े की मृत्यु उस पर बैठे योद्धा से पहले हुयी। जैसा हम सब जगह घोड़े पर बैठे महाराणा प्रतापजी की मूर्ति में पाते हैं अर्थात उनका प्रिय और इतिहास में अमर हो चूका नीलवर्ण घोड़ा चेतक का बायाँ पैर हवा में उठा हुआ ही परिलक्षित होगा।

अब राणी लक्ष्मी बाई के घोड़े के दोनों पाँव हवा में थे।जिसका मतलब है कि इनको युद्ध श्रेत्र में लड़ते हुए वीरगति प्राप्त हुयी।

इसके अलावा यह भी जान लो कि कुछ मूर्तियाँ ऐसी भी देखने को मिलेंगी जिसमें घोड़े के चारों पैर जमीन पर टिके हुवे होंगे। उसका मतलब यही है कि उस घोड़े पर बैठे योद्धा की मृत्यु प्राकृतिक कारणों से हुई है।

उपरोक्त चर्चित तथ्यों का सारांश यह है कि -

1...घोड़े का **आगे का एक पैर हवा में** हों तो **युद्ध में प्राप्त जख्म** के कारण सम्मानित व्यक्ति की मृत्यु हुई है।

2...घोड़े के **दोनों आगे के पैर हवा में** हों तो सम्मानित व्यक्ति **युद्ध में बलिदान** हुआ है।

3...घोड़े के **चारो पैर जमीन पर हों** तो : **प्राकृतिक कारण** से सम्मानित व्यक्ति की मृत्यु हुई है।

4...घोड़े का **आगे का बायाँ पैर हवा में** हो तो उस घोड़े की मृत्यु उस पर बैठे योद्धा से पहले हुई है।

आशा है उपरोक्त बताये सारे तथ्यों को भूलोगे नहीं और समय-समय पर अपने सहपाठियों का ज्ञान वर्धन करते रहोगे।

गोवर्धन दास बिन्नाणी 'राजा बाबू' बीकानेर / मुम्बई

दूध का ऋण

मैं जब विवाह सम्पन्न होने के बाद पहली बार ससुराल पहुंची तो द्वार पर मेरी सासू मां एक गाय के साथ आरती का थाल लेकर मेरी अगवानी के लिए खड़ी थीं। उनके पीछे आठ-दस महिलाएं खड़ी मंगल गीत गा रही थीं। मेरी आरती उतारने के बाद मेरी सासू मां ने आदेशात्मक स्वर में कहा - "गऊ माता के पैर छूकर इनका आशीर्वाद लो बहू, फिर देहरी के भीतर पैर रखो।"

मैंने सिर झुका कर उनके आदेश का पालन किया, मगर उनका यह पहला आदेश ही मुझे चकित कर गया। मेरा जन्म भी सनातन कृषक परिवार में हुआ है और गौ-सेवा को मेरे परिवार में भी पुण्य का कार्य माना जाता है तथा हमेशा एक-दो गायें हमारे खूंटे पर भी बंधी रहती हैं, मगर गौ माता से आशीर्वाद लेकर ही घर में घुसने की यह रीति से मैं चकित थी।

भारतीय अर्थव्यवस्था में प्राचीन काल से ही ग्रामीण समाज में गाय का योगदान बहुत महत्वपूर्ण रहा है। इसीलिए गाय को सनातन धर्म में माता मान कर पूजने की परंपरा भी है। गाय से प्राप्त होने वाले पंचगव्य का महत्व आयुर्वेद में विस्तार से वर्णित है। एलोपैथी में भी यह तथ्य सर्वमान्य है कि गाय के मूत्र में क्षय रोधी तत्व होते हैं और जहां गाय बांधी जाती है, उसके निकट रहने वाले को क्षय रोग नहीं होता।

गाय स्वभाव से भी बहुत सीधी और समझदार होती है। मुझे याद है कि मेरी ननिहाल में एक गाय थी। वह मामा के घर के सामने स्थित उनके ही बाग में बंधी थी और उसका दो माह का बछड़ा घर के आंगन में बंधा था। न जाने किस प्रकार पेड़ के तने से बंधी गाय खुल गई। वह रंभाती हुई घर की ओर भागी। वे जाड़े के दिन थे। मेरी मामी ने अपने बच्चे की मालिश करके आंगन में द्वार के आगे धूप में लिटा दिया था। गाय भागते हुए अपने बच्चे के लिए घर के अंदर घुसी। उसका पैर बच्चे की छाती पर पड़ने वाला था, मगर बच्चे को देख कर गाय ने अपना अगला पैर बहुत आगे बढ़ा कर रखने का प्रयास किया ताकि जमीन पर लेटे बच्चे को क्षति न पहुंचे। बहुत आगे पैर रखने के कारण गाय अपना संतुलन खो बैठी और लड़खड़ाते हुए आगे जाकर गिर पड़ी। उसका आगे का दायां पैर टूट गया। बहुत उपचार के बाद भी गाय उठ नहीं सकी और दो माह बाद उसकी मृत्यु हो गई। मामा ने दूध खरीद कर सीसी द्वारा बछड़े को पिला कर पाला और बड़े होने तक बहुत लाड़ से उसे रखा, यह अलग बात है। मगर गाय ने बच्चे को बचाने में अपने जीवन की आहुति दे दी, क्या और भी कोई पशु ऐसे स्वभाव का होता है? शायद नहीं। खैर!

इसके बाद अन्य बहू-आगमन संबंधी रस्में हुईं जिनका मैं सिर झुका कर निर्वाह करती रही।

अगले दिन शाम को मुझे रसोई में ले जाकर सासू मां ने खीर बनाने का आदेश दिया। उनके आदेश के अनुसार मैंने खीर बनाई। शेष भोजन एक अन्य महिला ने बनाया। जब सारा भोजन तैयार हो गया तो सासू मां ने प्यार से कहा -"बहू, एक थाली में भोजन परोस लो और अपनी बनाई खीर भी रख लो।"

जब मैंने भोजन परोस लिया तो वह बोलीं - " थाली लेकर मेरे साथ गौशाला चलो।"

मैं सिर झुका कर उनके पीछे-पीछे चल दी। वहां कई पशु बंधे थे। सासू मां को देखते ही सारे पशु खड़े होकर रंभाने लगे। सिर्फ वही गाय जिसके पैर छूकर मैंने गृह प्रवेश किया था, वह बैठी बैठी हम दोनों को ताकती रही। सासू मां ने आगे बढ़ कर आंचल संभालते हुए गऊ माता के पैर छुए तो मैंने भी उनका अनुसरण किया।

मां जी ने फिर आदेशात्मक स्वर में कहा -" बहू, गौ माता को पहले एक पूड़ी पर अपनी बनाई हुई खीर रख कर खिलाओ, फिर एक एक पूड़ी पर सब्जी रख कर खिलाओ। एक एक पूड़ी अन्य पशुओं को भी खिला देना। बेचारे आशा भरी दृष्टि से अगोर रहे हैं। मैं उनके आदेश का अक्षरशः पालन करने लगी।

जब मैं गौ माता को पूड़ी खिला रही थी तो मां जी आर्द्र स्वर में मुझे कह रही थीं -" लो गऊ माता, अब अपनी पौत्र -बधू की सेवा लो तथा मुझसे तुम्हारी सेवा में जो भूल-चूक हुई हो, उसे क्षमा करो।" फिर आंचल के छोर से अपनी पलकें पोंछते हुए बोलीं -"बहू, मैंने तुम्हारे ससुर की जन्मदायिनी माता को नहीं देखा। तुम्हारे ससुर को जन्म देते समय ही वह परलोक सिधार गई थीं। मेरे ससुर ने अपनी विधवा बहन की सहायता से इन्हें बहुत कठिनाई से पाला। जब मैं व्याह कर इस घर में आई तो मेरे ससुर ने बताया था कि इन्हें पालने में

गऊ माता का बड़ा सहयोग रहा। बच्चे को जब भी दूध की आवश्यकता हुई, गऊ माता ने उसकी पूर्ति की। दिन में दस दस बार दूध दुहा गया, मगर गऊ माता ने कभी आपत्ति नहीं की। फिर हंस कर बोले - एक बार मेरी उपेक्षा करोगी तो मैं सहन कर लूंगा, पर गऊ माता की सेवा में कभी कोई कोताही मत करना। इसे मैं सहन नहीं कर

सकूंगा।..."

उस दिन से आज का दिन, बहू , बापू परलोक चले गए, विधवा बुआ भी परलोक सिधार गईं, हम दोनों प्राणियों ने इन्हें सदैव परिवार के बुजुर्ग का सम्मान दिया है। आशा है कि तुम भी इनकी सेवा में कोई कमी नहीं रखोगी।"

मेरी समझ में अब गऊ माता के इतने अधिक सम्मान का कारण स्पष्ट हो गया था। गऊ माता बहुत वृद्ध थीं। उन्हें दलिया उबाल कर खिलाया जाता था। मेरे ससुर जी तो सुबह शाम गऊ माता के पास अवश्य जाते थे और प्यार से उनकी पीठ सहलाते हुए पूछते थे -" बहू, गौमाता को भोजन दिया? पानी पिलाया? और मेरे सकारात्मक उत्तर से संतुष्ट हो कर वहां से हटते थे।

मेरे विवाह के चार माह के अन्दर ही गऊ माता बीमार हो गईं। मेरे पतिदेव अपने पिता की आज्ञा पाकर उन्हें गौशाला से आंगन में ले आये। डाक्टर को बुलाकर उनका उपचार प्रारंभ किया गया, मगर उनकी हालत में कोई सुधार नहीं हुआ। लगातार दस्त के कारण गऊ माता बहुत कमजोर हो गईं। उन्होंने भोजन भी त्याग दिया था। उनके पैर इतने कमजोर हो गए थे कि अब उनका अपने पैरों पर खड़ा हो पाना भी असंभव हो गया और कुछ ही दिनों बाद उन्होंने अपनी जर्जर काया को त्याग दिया।

जिस दिन गऊ माता का देहावसान हुआ, उस दिन हमारे घर में चूल्हा नहीं जला। अगले दिन गांव वालों की सहायता से एक ट्रैक्टर-ट्राली पर उनका शव रख कर गंगा किनारे ले जाया गया और विधिवत उनका दाह-संस्कार किया गया।

जब मेरे ससुर और पति ऋषिकेश में गऊ माता की अस्थियां गंगा जी में प्रवाहित कर वापस लौटे तो उनके चेहरों पर शोक के चिन्ह स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं, साथ ही यह संतोष भी कि उन्होंने गऊ माता की सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ी।"

अगले दिन यह समाचार कई समाचार पत्रों में चित्र के साथ प्रकाशित हुआ। सभी समाचार पत्रों में गाय के सरल स्वभाव और उसकी उपयोगिता का बखान किया गया और मेरे परिवार की गौ-भक्ति की भूरि- भूरि प्रशंसा भी की गई। कई समाचार पत्रों ने यह भी माना कि ऐसा गौ-प्रेम केवल सनातन धर्म में ही संभव है। मेरे गांव तथा आस-पास के क्षेत्र में भी यह चर्चा का विषय बना हुआ है।

मुझे भी अपने परिवार की सहृदयता पर गर्व की अनुभूति हो रही है।

डॉ. गोपाल कृष्ण शर्मा 'मृदुल'

569क/108/2, आलमबाग, लखनऊ 226005

मो.9956846197

कैसा हुआ तमाशा यार

असली सिक्के हो गये खोटे, कैसा हुआ तमाशा यार |
दुबले-दुबले हो गये मोटे, कैसा हुआ तमाशा यार ||

कल थी जो नोटों की गठरी, आज लगे है कागद-कागद |
भेड़ू हो गये सारे झोट्टे, कैसा हुआ तमाशा यार ||

सारे धन्नु हुए गरीबू, कैसी चली हवा यह उल्टी |
दिल के हो गये टोटे-टोटे, कैसा हुआ तमाशा यार ||

वक्त ने एक ही पलटी मारी, मार पड़ी यह इतनी भारी |
बड़े-बड़े अब हो गये छोटे, कैसा हुआ तमाशा यार ||

धन-बिछुड़न का दर्द रुलाये, रात भर नींद न आये |
काम किये थे जिसने खोटे, कैसा हुआ तमाशा यार ||

पुरखों ने है यह समझाया, उसके काम न आये माया |
गले गरीब के जिसने घोटे, कैसा हुआ तमाशा यार ||

जो भी कमाया यहीं कमाया, मत गिनना क्या खोया-पाया |
खाली आये थे खाली लौटे, कैसा हुआ तमाशा यार ||

दर्द का बटुआ खाली-खाली, हंसता और बजाता ताली |
लिख रहा कविता चढ़कर कोठे, कैसा हुआ तमाशा यार ||

अशोक दर्द

डलहौजी चंबा हिमाचल प्रदेश

कहानी : अशोक दर्द

आंधी के बाद...

कौशल्या का घर परिवार बगीचे की तरह था जिसमें फल फूलों से लदे पेड़ थे और बगीचे में बहार ही बहार थी...।

वह देखकर इतराती थी।

उसे कितना गुमान था अपने इस परिवार रूपी बगीचे पर ..। परंतु यह क्या...? एक आंधी का तेज़ झोंका आया और सारे फल शाखाओं से जैसे टूटकर धरती पर आ गिरे।

फूल पंखुड़ी पंखुड़ी बिखर गए।

पत्तियों से लदी शाखाएं आथी टूटी हुई पेड़ों पर लटक आईं.....;।

वह आंधी में अपने उजड़े बाग को देखकर जार जार रो उठी..।

चार साल पहले ही की तो बात थी। उसका सुंदर खुशहाल घर-परिवार था। जिसे वह स्वीट होम कहती थी। भरा पूरा परिवार बेटा -बेटी और पति था। बेटी की शादी पास ही के गांव जो दरिया के पार दूसरे राज्य पंजाब में पड़ता था, एक साल पहले ही की थी। दामाद इकलौता बेटा था और फौज में था।

खेती-बाड़ी ढोर - डंगर सब कुछ था उसके पास।

छोटे से गांव में उसका खुशहाल परिवार था। गांव के लिहाज से जीवन यापन का सारा सामान था उसके पास।

टीवी, फ्रिज, वाशिंग मशीन वगैरा-वगैरा....।

इससे ज्यादा उसकी चाहत भी नहीं थी और हैसियत भी नहीं थी। इसलिए वह इसी में खुश थी और संतुष्ट भी कि जो ईश्वर ने दिया है बहुत दिया है।

उस मनहूस दिन उसका पति धर्मा घासनी में घास काटने गया था और अचानक गिर पड़ा।

उसे सिर और आंखों में चोटें लग गईं। उसका बेटा अभिनव उसे पास के अस्पताल में ले गया और दिखाया तो उन्होंने कहा कि आप इसे पठानकोट ले जाओ। सिर की चोट है रिस्क नहीं लेना चाहिए...।

वहां अच्छे से इलाज हो जाएगा हमारे पास इतनी सुविधा भी नहीं है। इसलिए डॉक्टर ने उसे सलाह देते हुए पठानकोट में एक प्राइवेट अस्पताल के लिए रैफर कर दिया।

वे तो घर से इस पास के कस्बे तक आए थे कि यहीं इलाज हो जाएगा और शाम को वापस घर आ जाएंगे। क्योंकि चोटें इतनी गंभीर नहीं लग रही थीं। धर्मा ने तो कहा था की रहने दो दो-चार दिन में खुद ठीक हो जाएगा।

परंतु बेटा अभिनव और वह ही नहीं माने थे कि अस्पताल में दिखाना जरूरी है। सिर की चोट है इसलिए लापरवाही क्यों की जाए? डॉक्टर

को दिखाने में क्या हर्ज है ?

अपने गांव के पास के अस्पताल में ही तो जा रहे थे इसलिए न जेब में ज्यादा पैसे थे और न ही कपड़े लत्ते साथ लाए थे।

परंतु डॉक्टर ने पठानकोट के लिए रेफर कर दिया तो उन्होंने थोड़े बहुत पैसे का वहीं मार्केट में प्रबंध किया और पठानकोट चले गए।

पठानकोट में डॉक्टर ने चेक करने के बाद उन्हें दो-तीन दिन तक एडमिट होने के लिए कह दिया।

शाम को उसे अभिनव का फोन आया और उसने बताया कि पापा को अस्पताल में एडमिट कर लिया है दो-तीन दिन तक हमें यही पठानकोट में रहना पड़ेगा ..।

वैसे आप फिकर मत करना पापा की हालत बिल्कुल ठीक है। उसने खुद भी धर्मा से बात की थी और आश्वस्त हो गई थी कि इनकी हालत ठीक है....।

यूं तो वह सारी रात ठीक से सो नहीं पाई थी परंतु जैसे ही सुबह आंख लगी तो बेटे का फोन आ गया बोला -"मम्मा लॉकडाउन लग गया है ।जो जहां है वहीं रुके ऐसा सरकार का आदेश है।"

वह आगे बोला-" कोरोना महामारी के चलते सरकार ने ऐसा निर्णय लिया है ताकि हमारे देश में कम से कम कैजुअल्टी हो।

क्या आपने रात को समाचार नहीं सुने ?" उसने मां से पूछा।

"वह बोली बेटा हमारे गांव में रात को लाइट नहीं थी।

थोड़ा सा मौसम खराब हुआ था कि लाइट चली गई ....।उसके बाद पूरी रात लाइट नहीं आई ....।

इसलिए मैंने टीवी नहीं लगाया और न ही कोई समाचार सुना।"

उसने बेटे को कहा -"अब आप कैसे घर पहुंचेंगे मेरा दिल घबरा रहा है। "

बेटे ने कहा- "मम्मा घबराओ मत कोई न कोई हल तो निकल ही आएगा। अभी हम यहीं रुके हैं, देखते हैं अस्पताल वाले क्या कहते हैं। उसके बाद ही कोई निर्णय ले पाएंगे आप फिकर मत करना।"

एक पति की दुर्घटना की चिंता दूसरा यह लॉकडाउन सोच-सोच कर उसका सिर दर्द से फटा जा रहा था। अब क्या होगा उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था..।

कहते हैं न आने वाली मुसीबत की छाया पहले ही पहुंच जाती है दरो दीवार से लेकर आदमी के जहन तक.... ।

वह भी किसी अनहोनी की आशंका से भीतर ही भीतर डरने लगी थी।

बेटे के फोन के बाद जब उसने खबरें देखने के लिए टीवी ऑन किया तो वहां का दर्दनाक मंजर देखकर वह सिहर उठी।

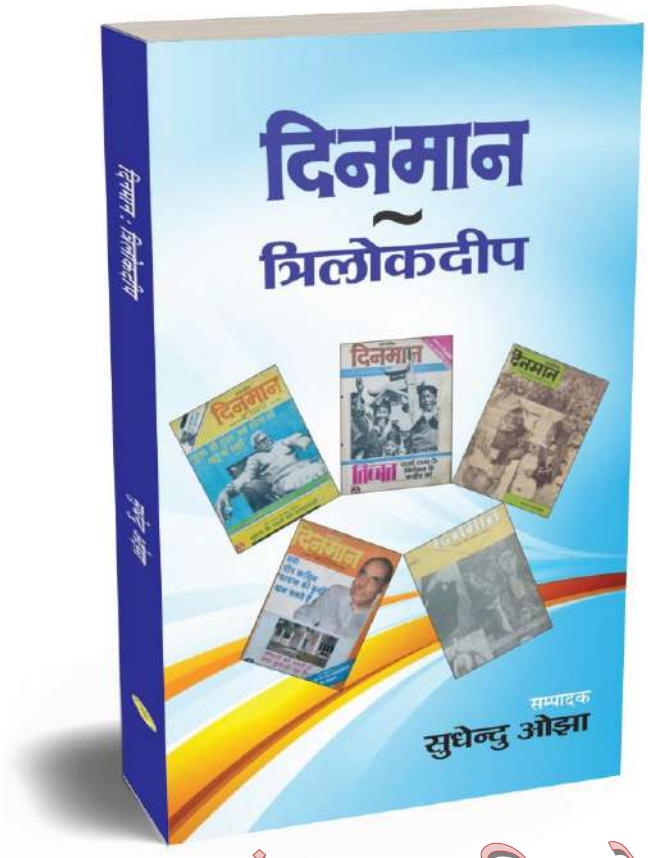

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book is Available on Flipkart

Book Name : दिनमान~त्रिलोकदीप
Author सुधेन्दु ओझा
ISBN : 978-81-963524-6-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 168
Price : 300/-
Genre: गद्य : पत्रकारिता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

गरीब लोग शहरों से अपने बच्चों को कंधों पर उठाकर अपने झोलों को घसीटते हुए सड़कों पर चले जा रहे थे।

कई लोगों को मकान मालिकों ने अपने घर से निकाल दिया था।

बहुत ही भयानक मंजर था कोई भी संवेदनशील व्यक्ति देखकर रो उठता....।

अब टीवी पर ये दृश्य देखकर तो उसे और भी चिंता सताने लगी थी डर लगने लगा था कि बेटा व पति कैसे वापस घर पहुंचेंगे।

फिर दोपहर में बेटे ने फोन किया कि हमें अस्पताल वालों ने छुट्टी दे दी है और अस्पताल से चले जाने के लिए कह दिया है।

सारे मरीज अपने-अपने घर जाने की कोशिश में जुटे हैं। हम भी जैसे कैसे घर आने की सोच रहे हैं। आप चिंता मत करना कह कर बेटे ने फोन काट दिया।

चारों ओर खौफ का सन्नाटा पसर आया था। ऐसे लगता था लोगों ने अपने घरों के दरवाजे बंद कर लिए हों।

शमशान घाटों पर सामूहिक जलती लाशें, इटली और अमेरिका में हजारों लोगों की मौत के दृश्य टीवी पर दिखाए जा रहे थे ....।

इससे यह खौफ और भी बढ़ रहा था...।

तीन दिनों बाद वे पैदल चलते हुए पंजाब की सीमा को लांघकर हिमाचल की सीमा में आ गए थे।

बेटे ने उसे फोन कर बताया कि उन्हें वहां यह कहकर रोक लिया गया है कि आपको यहां क्वॉरेंटाइन में एक सप्ताह गुजारना होगा।

उसके बाद आपका कोरोना टेस्ट किया जाएगा यदि आप स्वस्थ पाए गए तो आपको घर भेज दिया जाएगा।

वहां स्कूल में उनके साथ कई लोग आ गए थे और कुछ आ रहे थे।

वे सभी बड़ी मुश्किल से दूसरे राज्यों से पैदल चलकर यहां तक पहुंचे थे।

सबको अपने घर पहुंचने की जल्दी थी ।सभी इस दुख की घड़ी में अपने परिवार के साथ रहने को आतुर थे। परंतु उन्हें क्या पता था कि उन्हें घर पहुंचने से पहले ही यहां रोक लिया जाएगा। उन्हें यहां एक और अग्नि परीक्षा से गुजरना पड़ेगा।उनको रोकने के लिए पुलिस बल लगाया गया था और एक-एक आदमी का डाटा शासन व प्रशासन को दिया जा रहा था।

सरकारी स्कूल में उनके रहने का प्रबंध कर दिया गया था।

उनके लिए रोटी का प्रबंध भी सरकार ही कर रही थी। सरकारी कर्मचारी उन्हें सुबह दोपहर तथा शाम को खाना पहुंचा जाते थे।

खाना बांटने का तरीका इतना बुरा था की उन्हें लगता कि इससे अच्छे तरीके से तो घरों में कुत्तों को रोटी खिलाई जाती है। परंतु मरता क्या न करता, उन्हें अपनी नियति को समय के अनुसार स्वीकारना ही था।

कर्मचारी आते दूर ही रोटियां रख कर चले जाते और वे खुद रोटियां उठाकर ले जाते और कमरों में खाते। उन सब के जीवन का यह एक कड़वा और पहला अनुभव था।

एक-एक कमरे में पांच -पांच छः -छ लोग ठहराए हुए थे। कामन टॉयलेट ही सबके लिए उपलब्ध थे। यहां एक दूसरे से दूरी बनाकर रहना बहुत ही मुश्किल था।

फिर भी राम भरोसे सब इस समय को काट रहे थे...।

बस यही सोचकर की एक सप्ताह बाद टेस्ट ठीक आ जाएं ताकि हम अपने घर जा सकें।

रोज बेटा सुबह शाम फोन करता और उसे ये सारी बातें बताता।

इस तरह छः दिन बीते तो उनके टेस्ट हुए ।शाम को रिपोर्ट आई तो उनमें से एक व्यक्ति कोरोना पॉजिटिव पाया गया ।

अब साथ रहने वाले सभी लोगों को फिर से घर जाने सेरोक लिया गया।

अब उन्हें पांच दिन और रुकना था दूसरे टेस्ट तक।

एक व्यक्ति की वजह से वे फिर वहीं रोक लिए गए थे।

कितना अजीब था। परंतु कोई कुछ नहीं बोल सकता था।

सब शासन- प्रशासन के हाथ था । हर व्यक्ति खुद को निहत्था और लाचार समझ रहा था....।

इसी दौरान उसकी बेटी के ससुराल से फोन आया । उसकी बेटी की डिलीवरी ड्यू थी। पहली डिलीवरी थी । वह प्रसव पीड़ासे जूझ रही थी। अस्पतालों का सारा ध्यान कोरोना की तरफ था । गाड़ियां बंद थीं । क्षेत्र में मात्र एक अस्पताल था वह भी गांव से लगभग पचास किलोमीटर दूर था । प्रसव पीड़ा से जूझ रही उस लड़की को ले जाते तो कहां ले जाते। और यह भी सच था कि कोई भी डॉक्टर मरीज को हाथ लगाकर छूने तक को तैयार नहीं था । वे जाते तो कहां जाते।

बहुत ही कठिन समय था। वह भी बेटी के ससुराल उसके पास नहीं जा सकती थी । क्योंकि पुल के पार दूसरा राज्य था, और वहां पुल पर पुलिस का पहरा लगा हुआ था ।

जो कोई पुल को पार करने की कोशिश करता पुलिस उसे पकड़कर सात दिनों के लिए क्वॉरेंटाइन में भेज देती...।

दूसरे दिन फिर सुबह- सुबह बेटी के ससुराल से फोन आया कि आपकी बेटी व बच्चा दोनों चल बसे हैं....।

उसके ऊपर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा था ...। रो-रो कर उसका बुरा हाल था ।घर में अकेली थी। कोई भी उसे सांत्वना देने वाला नहीं था ।

गांव वाले दूर-दूर से ही बातचीत करते । कोई भी आंगन तक आने को तैयार नहीं था । सभी दूरियां बना रहे थे।

यह कैसी विडंबना है, कैसा समय आ गया है... । उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था।

वह जैसे बिखर - बिखर कर टूटने लगी थी । पशुओं के लिए अब न चारा था और न ही खाने के लिए घर में आटा था ।

फिर सरकार ने राशन देने की घोषणा की तो गांव वाले उसके हिस्से का आटा ले आए और उसके घर छोड़ गए। अब उसके पास रोटी का प्रबंध तो हो गया था परंतु पशुओं के लिए चारा फिर भी नहीं था ।

इसलिए उसने एक भैंस दो गाय और कुछ भेड़ -बकरियां जो उसकी एक तरह से पूंजी थीं , सबको घासनियों की तरफ छोड़ दिया ।

कम से कम वे अपना पेट तो भर लेंगे। अगर बच जाएंगे तो बाद में ले

आएंगे नहीं तो कोई बात नहीं । यह सोचकर उसने अपने मन को समझा लिया ...।

अभी वह उसे बेटी के दुख से जूझ ही रही थी तो बेटे का फोन आया-" पापा को कोरोना हो गया है ;उसे अस्पताल भेज दिया गया है।"

फिर तीन दिन बाद फिर बेटे का फोन आया कि उनकी मृत्यु हो गई है....।

कोरोना पेशेंट की डेड बॉडी घर को नहीं दी जाती इसलिए उनका अंतिम संस्कार भी वहीं पुलिस ने कर दिया गया है ।

घरवालों को सिर्फ सूचित किया गया था ...।

और फिर दोनों मां बेटा फोन पर फफक फफक-फफक कर रोने लगे।

यह उसके लिए दूसरा सदमा था। जवान बेटी की मौत और पति की मौत को उसने किस तरह सहा यह तो वही जानती है या फिर ईश्वर...।

वह आंगन में बैठकर दिन रात रोती - सिसकती रही। उसे समझ नहीं आ रहा था कि यह सब क्या हो रहा है? वह किस अभिशाप का दंश झेल रही है।

अभिनव बीस दिन बाद वहां से ऐसे छूटा जैसे कोई कैदी छूट कर आता है। घर पहुंचा तो वह इतने गहरे सदमे में थी कि वह भी शीघ्र ही इस दुनिया से विदा हो जाएगी...।

परंतु बेटे के घर आने पर उसे थोड़ी सी आस बंधी थी। कहते हैं दुख की घड़ी में कंधे पर हाथ रखने वाला भी बहुत बड़ा सहारा होता है। अब बेटे के आने से इस दुख में मां बेटा दोनों एक दूसरे का सहारा हो गए थे।

इस कोरोना महामारी ने न जाने कितने ही घरों की नीवें हिला दी थीं ।

कई बसे बसाए घर इस महामारी की भेंट चढ़ गये थे। जिसकी कभी किसी ने कल्पना तक नहीं की थी ।

इस तरह रोते -सिसकते पल -पल करते चार साल बीत गए । परंतु न पीड़ा कम हुई और न ही सदमा।

कहते हैं वक्त हर एक जख्म का मरहम होता है परंतु कुछ जख्म ऐसे होते हैं जो वक्त के साथ भी नहीं भरते।

बस आदमी उनके साथ जीना सीख जाता है...।

वह उस शाख की तरह हो गई थी जो आंधी में पेड़ से टूट तो गई थी परंतु न तो पूरी तरह सूखी थी और न ही हरी रही थी।

इस आंधी के बाद बेशक दुनिया फिर से रफ्ता - रफ्ता चलने लगी थी परंतु अब उसे खुद के लिए नहीं बेटे के लिए जीना था...।

परवाह

लघुकथा:

विनीता राखी वाले दिन अपने भाई राजेश को राखी बाँधने गई तो राजेश ने कहा, ‘‘दीदी आपके यहाँ प्रेस करने के लिए कोई मेज नहीं है इसलिए आपको प्रेस करने में बड़ी दिक्कत होती है।’’ बालकनी के एक कोने में रखी एक मेज़ की तरफ़ इशारा करते हुए राजेश ने पुनः कहा, ‘‘ दीदी मैंने आपके लिए एक मेज निकाल रखी है जिसमें नीचे की तरफ़ पूरी मेज में खाने भी बने हुए हैं जिनमें बहुत सारा सामान भी आ जाएगा। या तो आप इसे आज अपने साथ ले जाओ नहीं तो एक दो दिन में मैं स्वयं भिजवा दूँगा।’’ ‘‘अरे नहीं राजेश रहने दे हमारा काम चल रहा है, ’’ विनीता ने कहा। इस पर राजेश ने कहा, ‘‘ नहीं बहन आपको इसकी जरूरत है। बहन इसे मेरी तरफ से राखी का उपहार समझकर स्वीकार कर लो।’’ अब विनीता क्या बोलती? विनीता को ध्यान आया कि ये मेज़ तो काफी दिनों से बालकनी में ही रखी है। विनीता ने मन ही मन सोचा, ‘‘ राजेश मेरी कितनी चिंता करता है! लगता है राजेश ने बहुत पहले से ही ये मेज़ मुझे देने के लिए अलग से निकाल रखी है लेकिन संकोचवश कह नहीं पाया और आज मौका देखकर कह दिया।’’ राजेश ने अगले ही दिन मेज विनीता दीदी के घर भिजवा दी। किराया भी उसने पहले ही ख़ुद दे दिया था रिक्शेवाले को। विनीता ने इधर-उधर बिखरा अपना फालतू सामान मेज में बने खानों में रख दिया और प्रेस करने के लिए एक अच्छा सा कपड़ा कई तह करके मेज के ऊपर बिछा दिया। कुछ दिनों के बाद विनीता को मेज के खानों में रखे सामान में से कुछ सामान निकालने की ज़रूरत पड़ी। उसने मेज़ के नीचे बने खानों के पल्ले खोले तो देखा कि सारे सामान पर हल्के भूरे संदली-से रंग के पाउडर की परत बिछी हुई थी।

सीताराम गुप्ता, ए.डी. 106 सी., पीतम पुरा,

दिल्ली - 110034 मोबा0 नं0 9555622323

जो अभी जवानी की दहलीज़ पर था। उसे कहीं रोजगार में लगते हुए देखना था और उसकी बसती हुई घर- गृहस्थी को अपने हाथों से सजाना - संवारना था।

वह आंगन में बैठी -बैठी न जाने कब अतीत की इन दुखद स्मृतियों में डूब गईथी उसे पता ही न चला। सारी घटनाएं एक रील की भांति उसके मानस पटल पर आ जा रही थीं।

जब वह इन स्मृतियों से वापस लौटी तो उसकी पलकों पर आंसुओं की बूंदे तिर आईं थीं।

उसने अपने दुपट्टे के पल्लू से इन बूंद को पलकों से हटाया और अगल -बगल देखा। उसके अगल-बगल अंधेरी रात का कंबल बिछ आया था।

वह उठकर अंदर चली आई और अपने व अपने बेटे के लिए रात का खाना बनाने में जुट गई....।

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092

पंद्रह अगस्त

पंद्रह अगस्त सैंतालीस को,
दिवस कैलेंडर था शुक्रवार।
मिली हमें आजादी इस दिन,
खुला अपने सपनों का द्वार।।

आजादी के साथ देश ने,
बंटवारे का दर्द भी झेला।
आजादी खातिर गोरों ने,
खून की होली हमसे खेला।

आजादी की चाहत दिल में,
सत्तावन में दहक उठी थी।
कोलकत्ता के बैरकपुर में,
मंगल की गोली बोली थी।।

उन्नीस सौ सैंतालीस के पहले,
अपनी भी बड़ी लाचारी थी।
ब्रिटिश सरकार जुल्म ढहाती,
फिरंगी सरकार दुष्टाचारी थी।।

सत्ताइस फरवरी इकतीस को,
आजाद ने खुदपर पिस्टल ताना।
पच्चीस साल का नव-युवक,
आजादी का था दीवाना ।।

उन्नीस सौ उन्तीस में
पूर्ण स्वराज्य की मांग किया।
अगस्त बयालीस में गांधी ने,
'भारत-छोड़ो' का एलान किया।

कई शहादत के बाद हमने,
आज तिरंगा लहराया।
नमन वीरों के कुर्बानी पर,
जिससे देश आजादी पाया।

अंकुर सिंह

बेलगाम सोशल मीडिया व्युत्क्रमानुपाती शिक्षकों की आदर्श छवि, सुरक्षा और गोपनीयता

नवीन कुमार जैन

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. हरप्रीत सिंह के निर्देशन में लघु शोध प्रबंध पर आधारित

सोशल मीडिया पर आए दिन शिक्षकों के कंटेंट चर्चा में बने रहते हैं किन्हीं पोस्ट्स पर तो उनके रचनात्मक शिक्षण कौशल व अनूठे प्रयोग की प्रशंसा की जाती है व किन्हीं पोस्ट्स पर उनके अनापेक्षित आचरण की आलोचना भी होती है। हाल ही में कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में कुछ शिक्षिकाओं पर विद्यार्थियों से जबरन रील पर लाइक, कॉमेंट्स कराने, रील में विद्यार्थियों की निजता का ध्यान न रखने, सोशल मीडिया की लत के कारण अध्यापन में अरुचि व अश्लील गानों पर डांस के आरोप लगे हैं।

आज के सोशल मीडिया युग में शैक्षिक क्षेत्र में तस्वीर बदली है जिसके सकरात्मक व नकारात्मक दोनों पहलू उभरे हैं।

08 अक्टूबर 2023 को प्रकाशित टाइम्स ऑफ इंडिया के एक समाचार लेख में बताया गया कि "कई अभिभावकों ने अपने बच्चों को यूपी के अमरोहा के एक सरकारी प्राथमिक विद्यालय में भेजना बंद कर दिया है, क्योंकि उनका आरोप है कि चार महिला शिक्षक छात्रों को उनके सोशल मीडिया वीडियो को "लाइक और सब्सक्राइब" करने के लिए मजबूर कर रही थीं।" यह स्कूल पिछले कुछ दशकों से बिजनौर जिले के खुंगावली क्षेत्र में चल रहा है।

20 मार्च 2024 को प्रकाशित इंडियन एक्सप्रेस के एक समाचार लेख में बताया गया कि "छात्रों के साथ 'कजरा रे' पर डांस करने वाली शिक्षिका का वायरल वीडियो ऑनलाइन बहस को जन्म देता है। वीडियो सोशल मीडिया पर व्यापक रूप से प्रसारित किया जा रहा है, जिससे उपयोगकर्ताओं के बीच बहस शुरू हो गई है। इंटरनेट के एक वर्ग ने वीडियो का आनंद लिया, जबकि अन्य ने कक्षा में आइटम

नंबर पर नृत्य करने के लिए शिक्षिका की आलोचना की।"

07 नवंबर 2023 को प्रकाशित हिंदुस्तान टाइम्स के एक समाचार लेख में बताया गया कि "एक शिक्षिका ने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो साझा किया जिसमें बताया गया कि उसने एक छात्र के साथ कैसे व्यवहार किया जब उसने उसकी ऑनलाइन कक्षा के दौरान यौन रूप से अश्लील टिप्पणी की। उसने दूसरों के लिए प्रोत्साहन का एक नोट भी जोड़ा और कहा "प्रिय महिला शिक्षकों, तंग मत होइए।"" ये हालिया मीडिया रिपोर्ट एक शिक्षक की आदर्श छवि के लिए बदलते रुझान दिखाती हैं।

इन मीडिया रिपोर्टों के बावजूद, ऐसे कई शिक्षक हैं जो छात्रों को शिक्षित करने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग कर रहे हैं। साथ ही गरीब और दूरदराज के क्षेत्रों के छात्रों की मदद कर रहे हैं। 23 नवंबर 2022 को प्रकाशित द इंडियन एक्सप्रेस के एक समाचार लेख में बताया गया कि "बिहार के शिक्षक की मजेदार शिक्षण पद्धति ने ऑनलाइन प्रशंसा अर्जित की। सोशल मीडिया पर साझा की गई एक क्लिप में बिहार के बांका की एक शिक्षिका अपने छात्रों के साथ खेलती और बातचीत करती दिखाई दे रही है।"

26 अगस्त 2023 को प्रकाशित टाइम्स ऑफ इंडिया के एक समाचार लेख में बताया गया कि "शिक्षक का 'गुड टच और बैड टच' पर रचनात्मक पाठ सोशल मीडिया पर वायरल हो गया"

इंस्टाग्राम पर 'टीचर इन क्लासरूम स्ले आउटसाइड', 'डेट ए टीचर यू विल नेवर कंप्लेन', 'टीचर एंड मॉडल' जैसे रील्स ट्रेंड कि भी भरमार है। अभिभावकों, विद्यार्थियों, सहकर्मियों तक उपलब्ध ऐंसे सार्वजनिक वीडियोज कंटेंट शिक्षकों की छवि और तालमेल प्रभावित कर सकते हैं। हालाँकि शिक्षकों/शिक्षिकाओं का निजी जीवन, उनकी अभिरुचि, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भी एक पहलू है लेकिन दूसरा पहलू यह भी है शिक्षक समाज को सीधे तौर पर प्रभावित करते हैं ऐंसे में उन्हें सामाजिक मूल्यों की आचार संहिता का ध्यान रखना भी आवश्यक हो जाता है।

महाभारत के आदि पर्व में गुरु भक्त आरुणि के प्रसंग से लेकर सावित्री बाई फुले, गिजुभाई बधेका आदि शिक्षकों का समर्पण समाज में शिक्षक पेशे की गरिमा को दर्शाता है। शिक्षण एक बहुत ही सम्मानित पेशा है जिसके लिए समर्पण, जुनून और निरंतर सीखने की आवश्यकता होती है। बच्चों के दिमाग को ढालने और उन्हें भविष्य के लिए तैयार करने में शिक्षक बेहद महत्वपूर्ण हैं। वे अपनी विशेषज्ञता और ज्ञान से अपने विद्यार्थियों के जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं। चाणक्य का कथन है "शिक्षक कभी भी साधारण नहीं हो सकता प्रलय और निर्माण दोनों उसकी गोद में पलते हैं।"

ऐंसे में समाज निर्माता शिक्षक अपने पेशेवर मूल्यों, बदलते परिदृश्य में अपने निजी और पेशेवर जीवन के सार्वजनिक प्रभावों को लेकर

कितने सजग हैं; शिक्षकों के सोशल मीडिया प्रयोग व उनके निजी सोशल मीडिया कंटेंट की सहकर्मियों, अभिभावकों व विद्यार्थियों तक पहुँच के प्रभाव पर शिक्षकों के परिप्रेक्ष्य को जानना महत्वपूर्ण हो जाता है।

सागर तहसील, मध्यप्रदेश के विद्यालयीन शिक्षकों के प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित इस शोध में 93% शिक्षकों ने माना की अध्ययन अध्यापन हेतु सोशल मीडिया का प्रयोग विद्यार्थियों की अधिगम गतिविधियों में भागीदारी को बढ़ाता है। 53% शिक्षकों ने माना की निजी सोशल मीडिया एकाउंट पर पेशेवर पहचान उजागर नहीं करनी चाहिए। लगभग 98% शिक्षकों ने माना कि वे अपने सहकर्मियों के सोशल मीडिया एकाउंट पर प्रकाशित अध्ययन अध्यापन सामग्री, शिक्षण विधि से सीखते हैं व प्रेरणा लेते हैं। 77% शिक्षकों ने माना कि सोशल मीडिया पर शिक्षक की निजी जिंदगी को सहकर्मियों के साथ साझा करने से उनके बीच के तालमेल पर असर पड़ सकता है। निजी जीवन की गतिविधियों के आधार पर सहकर्मियों के बर्ताव, आपकी छवि के प्रति धारणा में सकारात्मक एवं नकारात्मक किसी भी रूप में परिवर्तन हो सकते हैं। 89% शिक्षकों ने माना कि सोशल मीडिया पर अश्लील भाव भंगिमा, कृत्य, गानों, वॉइस आदि के साथ ट्रेंड फॉलो करते हुए वीडियो बनाने से शिक्षकों की आदर्श छवि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। 31% शिक्षकों ने माना वो कक्षा के दौरान की गतिविधियाँ किसी रूप में सोशल मीडिया पर पोस्ट करते हैं जिनमें से 35% शिक्षकों ने माना वो संबंधित व्यक्ति/ विद्यार्थी/ अभिभावक से अनुमति नहीं लेते हैं। गैर अनुमति साझाकरण चिंता का विषय है। 40% शिक्षक, विद्यार्थियों की प्रगति सोशल मीडिया पर साझा करते हैं। 99% शिक्षकों ने माना विद्यार्थियों की प्रतिभा को सोशल मीडिया पर शेयर करने से उन्हें वैश्विक मंच मिल सकता है। 65% शिक्षकों ने माना विद्यार्थियों के लिए सुलभ सोशल मीडिया पर शिक्षक के निजी जीवन को विद्यार्थियों से साझा करने से सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। हालाँकि 35% शिक्षकों की चिंता इस आशय से भी है कि इन गतिविधियों का नकारात्मक प्रभाव भी पड़ सकता है।

सोशल मीडिया सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह की जानकारी और राय साझा करने का केंद्र बन गया है। हालांकि इसके अपने फायदे हैं, लेकिन सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर तथ्य-जांच और विनियमन की कमी ने शैक्षणिक संसाधनों सहित गलत सूचनाओं के प्रसार को बढ़ावा दिया है। शिक्षक विद्यार्थियों के मूल्यों और धारणा को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, और झूठी या पक्षपाती जानकारी के प्रसार से विद्यार्थियों के नैतिक विकास पर हानिकारक प्रभाव पड़ सकता है। सोशल मीडिया तक लगातार पहुंच के साथ, शिक्षकों को अपने व्यक्तिगत और पेशेवर व्यक्तित्व के बीच अलगाव बनाए रखना

एक समझौता पत्र

लघुकथा:

पति रात देर से घर पहुंचा। दिन भर ऑफिस में काम का तनाव और बॉस की झाड़ सुनकर वह सूखे पेड़ जैसा हो रहा था, अब गिरा कि अब गिरा। डोर बेल बजाई तो पत्नी ने खा जाने वाली निगाहों से देखते हुए दरवाज़ा खोला और बिना कुछ बोले अंदर चली गई। थका टूटा पति यही सोच रहा था कि पत्नी कम से कम बात तो कर ले। अगर डांटेगी, बुरा भला कहेगी तो चुपचाप सुन लूंगा। पत्नी अगर अपनी भड़ास निकाल ले तो पति निश्चिंत हो जाता है कि चलो बादल छंट गए, कम से कम अब दिन तो ठीक बीतेगा। पर अगर पत्नी मुंह फुलाए रहे और कुछ ना बोले, तो मौसम कितने दिन खराब रहेगा और कितनी बर्बादी करेगा, यही सोच पति घबराता रहता है।

पत्नी ने खाना परोसा तो उसने पूछा- तुम्हारा खाना?

-मुझे भूख नहीं।

अब पति और अधिक संकट में फँसा हुआ महसूस कर रहा था। उसकी हालत दरार खाए मकान जैसी थी, ढहना तो है, परंतु कब और किस तरफ? उसने खाना ढक कर रखा और सफ़ाई देने लगा -आज ऑफिस में बहुत काम था, इसलिए देर हो गई। असल में अकाउंट में गड़बड़ निकल आई। बॉस ने हमारी क्लास लगा दी और अकाउंट्स मिलाते-मिलाते देर हो गई।

पत्नी दूसरी तरफ मुँह किए पड़ी रही। पति श्रीलंका की तरह दिवालिया हो कर हर समझौते पत्र पर हस्ताक्षर करने को बेकरार था और पत्नी चीन की तरह नई-नई शर्तें जोड़कर इस कॉन्ट्रैक्ट को अपने पक्ष में मजबूत कर रही थी।

डॉ. नीरू मित्तल'नीर' कोठी न. 40, सेक्टर 15 पंचकूला
फोन : 9878779743

चुनौतीपूर्ण लग सकता है। इससे गोपनीयता भंग की घटनाएँ और विद्यार्थियों और उनके परिवारों के साथ तालमेल में गड़बड़ी संभावित है। एक और चिंता सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर विनियमन और नियंत्रण की कमी है; यह उन्हें अनुचित सामग्री और साइबरबुलिंग के संपर्क में ला सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। इसके अलावा, ऑनलाइन उपस्थिति बनाए रखने का दबाव और नकारात्मक प्रतिक्रिया का डर भी शिक्षकों में तनाव और कार्यभार में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। सोशल मीडिया के लिए सामग्री तैयार करने और लगातार अपडेट रहने आवश्यकता शिक्षकों के समय और ऊर्जा को क्षीण कर सकती है जो वे पाठ योजना निर्माण और निर्देशन में लगा सकते हैं।

सोशल मीडिया त्वरित संतुष्टि की संस्कृति को भी बढ़ावा देता है, जहां उपयोगकर्ता लगातार लाइक और शेयर के माध्यम से स्वीकरण की तलाश में रहते हैं। यह शिक्षकों को मूल्यवान और सटीक जानकारी प्रदान करने के बजाय जुड़ाव बढ़ाने वाली सामग्री बनाने पर अधिक ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित करके शिक्षण मूल्यों को प्रभावित कर सकता है। इसके अलावा, सोशल मीडिया मेट्रिक्स की प्रतिस्पर्धी प्रकृति शीर्ष पर पहुंचने की दौड़ को जन्म दे सकती है, जहां शिक्षक प्रासंगिक बने रहने और फॉलोअर्स हासिल करने के लिए साहित्यिक चोरी या पुरानी और गलत जानकारी का उपयोग करने जैसी अनैतिक प्रथाओं का सहारा ले सकते हैं। सोशल मीडिया पर एक और मुद्दा गुणवत्ता नियंत्रण की कमी है।

सूचना तक पहुंच और साझा करने में आसानी के साथ, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर साझा की जाने वाली शैक्षिक सामग्री की वैधता और विश्वसनीयता के बारे में चिंता बढ़ रही है। कई शिक्षकों के पास, उचित प्रशिक्षण या मार्गदर्शन के बिना, सोशल मीडिया पर मौजूद जानकारी की विश्वसनीयता और सटीकता का मूल्यांकन करने के लिए आवश्यक कौशल नहीं हैं। इसके परिणामस्वरूप पक्षपातपूर्ण या गलत जानकारी का अनजाने में साझाकरण हो सकता है। इन मुद्दों को हल करने के संभावित समाधान हैं - शिक्षकों के लिए डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

इसमें शिक्षकों को सोशल मीडिया पर साझा की गई जानकारी की विश्वसनीयता का मूल्यांकन करने के तरीके के बारे में शिक्षित करना और उन्हें अपने छात्रों के साथ कोई भी सामग्री साझा करने से पहले तथ्य-जांच करने के लिए प्रोत्साहित करना शामिल है। यह न केवल शिक्षकों के बीच आलोचनात्मक सोच कौशल को बढ़ावा देगा बल्कि गलत सूचना के प्रसार को रोकने में भी मदद करेगा।

इसके अतिरिक्त, डिजिटल युग में मूल्यों और नैतिकता को पढ़ाने के महत्व को उजागर करने के लिए जागरूकता अभियानों की आवश्यकता है। इन अभियानों को शिक्षकों और छात्रों दोनों पर लक्षित किया जा सकता है, जो उनके शिक्षण में नैतिक मानकों को बनाए रखने में शिक्षकों की जिम्मेदारियों पर जोर देते हैं। इस तरह की पहल जिम्मेदार सोशल मीडिया उपयोग की अवधारणा और समाज पर इसके प्रभाव को भी बढ़ावा दे सकती है।

इसके अलावा, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को भी शैक्षिक सामग्री के लिए सख्त नीतियों और नियमों को लागू करके जिम्मेदारी लेनी चाहिए। इसमें तथ्य-जांच तंत्र, विश्वसनीय स्रोतों को बढ़ावा देना और उन खातों को दंडित करना शामिल हो सकता है जो गलत या पक्षपाती जानकारी को बढ़ावा देते हैं। ये उपाय न केवल सटीक और गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक सामग्री को बढ़ावा देने में मदद करेंगे, बल्कि शिक्षकों को भ्रामक या अनैतिक सामग्री साझा करने के लिए जवाबदेह भी बनाएंगे।

शिक्षकों को युवा दिमाग का संवर्धक माना जाता है। शिक्षकों को सोशल मीडिया पर जो कुछ भी पोस्ट करना है, उसके प्रति सतर्क और सावधान रहना चाहिए, क्योंकि उनकी ऑनलाइन उपस्थिति छात्रों, अभिभावकों और स्कूल प्रशासकों द्वारा आसानी से देखी जा सकती है। शिक्षकों के लिए पेशेवर लहजे को बनाए रखना और किसी भी विवाद से बचने के लिए विवादास्पद विषयों से बचना आवश्यक है।

अन्य उपायों में विद्यार्थियों, अभिभावकों और सहकर्मियों की शिक्षकों के निजी सोशल मीडिया एकाउंट तक पहुँच को सीमित किया जाना, सार्वजनिक रूप से सोशल मीडिया पर सामग्री प्रसारित करते हुए सामाजिक - सांस्कृतिक मानकों का ध्यान रखना, निजी सोशल मीडिया अकाउंट पर पेशेवर पहचान प्रदर्शित न करना शामिल हैं।

डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण, जागरूकता अभियान और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर सख्त नियमों जैसे उपायों को लागू करके, हम समस्याओं को कम करने की दिशा में काम कर सकते हैं। ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह की शिक्षा में जिम्मेदारी से सोशल मीडिया के इस्तेमाल को बढ़ावा देना और ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और सटीकता के मूल्यों को बनाए रखना आवश्यक है।

नवीन कुमार जैन

एम. ए. (भूगोल), बनारस हिंदू विश्वविद्यालय

पता - ओम नगर कॉलोनी, वार्ड नं.-10,

बड़ामलहरा, जिला- छतरपुर, म. प्र., पिन-471311

मो. नं. - 8959534663

सौभाग्य प्रकाशन

साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :

1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पत्ते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabharati@gmail.com ईमेल पर ही भेजी जाएँ।
9. पुस्तक की पाण्डुलिपि भेजने से पूर्व कृपया फोन पर संवाद अवश्य कर लें : 8595036445, 8595063206

संपर्क भाषा भारती के

साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :

1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पत्ते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabharati@gmail.com पर ही भेजी जाएँ। व्हाट्सेप पर भेजी गई रचनाएं, प्राप्त संदेशों के क्रम में पीछे चली जाती हैं अत: उनका संज्ञान लेना कठिन होता है। फोन : 8595036445, 8595063206
9. रचना के साथ अपना फोटो अवश्य संलग्न करें।

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है !

Book Name : मोड़ पर ज़िंदगी
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : : 978-81-963524-3-1
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 118
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

प्रेम में बहुत दर्द है
प्रतीक्षा है
विवशता भी है
प्रेम बहुत तड़प है
लेकिन मौन आनंद
अपने मधुर लेप से
सभी पीड़ाओं को
शांत भी रखता है
दर्द प्रतीक्षा विवशता
आंसू मुस्कान
सभी उसकी मुट्ठी में हैं
अपनी अनुभूतियों में
जिंदा रख आनंदित हो
राधा सीता मीरा सावित्री
हो जाना ही प्रेम है
इसीलिए प्रेम में जीना है तो
नदी बन एक दूसरे में
निरंतर हरहराते रहो
चुप रह कर भी
पहचानते रहो
प्रेम को

प्रतिमा पुष्प

तेरी छुवन बनी सहारा,
तन में हुआ संचार।
अद्भुत तेरी बंसी प्रियतम
अद्भुत तेरा प्यार 11

प्रेम जगाया तूने मन में,
औ दर्द जगाया दिल
तन की लहरों से आकर पिय,
तू धीरे-धीरे मिल
करदो झंकृत रोम-रोम को
ऐसा करो शृंगार

सांस न छूटे, आस न टूटे
और ना छूटे साथ
तेरी सुधियाँ रची-बसीं बन
मेंहदी मेरे हाथ
आशाओं का कमल खिलेगा,
सुरभित हुआ संसार

यही कामना रही हृदय में
जैसे झिलमिल दर्पण
जीवन जोत रहो तुम मेरे
कर दूँ खुद को अर्पण
चंद्र-किरण तारों में रख कर
प्रियतम करो अभिसार

सरोज शर्मा भारती

राखी भेजवा देना

बहन, राखी भेजवा देना,
अबकी मैं ना आ पाऊंगा।
काम बहुत हैं ऑफिस में,
मैं छुट्टी ना ले पाऊंगा।।

कलाई सुनी ना रहें मेरी,
तुम याद ये रख लेना।
अपने भाई के पते पर,
राखी तुम भेजवा देना।।

ये महंगाई है सबपे भारी,
फिर भी राखी भेजवाना।
गर पूछे भांजी भांजा तो,
उन्हें मामा का प्यार कहना।।

राखी पर ना मेरे आने से,
तुम मुझसे ना रूठ जाना।
हाथ जोड़ कर रहा निवेदन,
राखी जरूर भेजवा देना।

भेज रहा राखी उपहार संग,
चिट्ठी में प्यार के दो बोल।
माफ करना अपने भाई को,
मना न सका पर्व अनमोल।।

राह देख अबकी तुम मेरी,
राखी थाली सजा ना लेना।
मेरे छुट्टी का है बड़ा झंझट,
भेज राखी तुम फर्ज निभाना।

अंकुर सिंह

लद लद कर भीग गया

राजेंद्र ओझा

वह आई,
उसने,
इधर-उधर देखा,
और चली गई।

वह,
फिर से आई,
इस बार उसने,
इधर-उधर ही नहीं देखा,
थोड़ा वह भी,
इधर-उधर हुई,
और चली गई।

वह,
एक बार और आई,
इस बार उसने तय करके रखा था,
वो एक नहीं,
दो थी,
दोनों ने इधर-उधर देखा,
वे,
केवल इधर-उधर ही नहीं हुई,
चारों तरफ घूमी भी,
उन्हें इत्मीनान हुआ,
वे दोनों,
परई पर बैठी
और,
चोंच भर-भर कर पानी पिया,
और उड़ गई।

वे तृप्त हुई,
मैं तुष्ट,
और,
लद लद कर भीग गया।

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : मुझे कुछ कहना है

Author डॉ सत्या सिंह

ISBN : : 978-81-963524-8-6

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 126

Price : 250/-

Genre Poetry : कविता

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

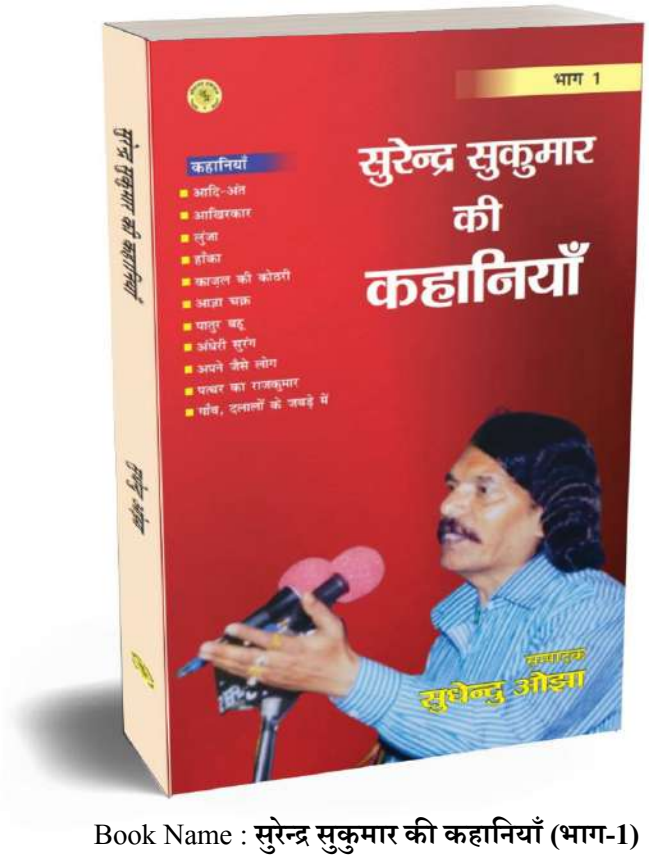

Book Name : **सुरेन्द्र सुकुमार की कहानियाँ (भाग-1)**

Editor : सुधेन्दु ओझा

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Price : 250/-

Genre Prose

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

सावन का महीना

बंजर धरती पर जब हरियाली लहराये।
उदास सूना-सूना दिल भी खिल-खिल जाये।
उमड़-उमड़ के बादल गरजने लग जाये।
जब सावन का महीना झूम-झूम कर आये।।

कलियाँ फूल बने उनपर भँवरे मंडरायें।
रिमझिम बरखा में मोर नाचे, पपीहा गायें।
प्रकृति को देखकर हर्षित मन मुस्काये।
जब सावन का महीना झूम-झूम कर आये।।

शिव की आराधना में अनुष्ठान करे जाये।
भक्त हर-हर महादेव के जयकारे लगाये।
कावड़ियाँ शिवलिंग का अभिषेक कराये।
जब सावन का महीना झूम-झूम कर आये।।

वृक्षों की शाखाओं पर झूले पड़-पड़ जाये।
स्त्रियां चूड़ी पहने हाथों में मेहंदी लगवायें।
भाइयों की कलाई पर बहने राखी सजायें।
जब सावन का महीना झूम-झूम कर आये।।

सोनल मंजू श्री ओमर

राजकोट, गुजरात – 360006

बस थामे रखना स्नेह सूत्र

बस थामे रखना स्नेह सूत्र
मुझे सुनना है
तुम्हारी स्वांसों के
आरोह अवरोह
सुनना है चुपचाप
तुम्हारी अनगिनत धड़कनें
और उनसे उत्पन्न शांति की लहरें
जो अक्सर शांत नहीं होतीं
स्वांस और हृदय के स्पंदन
सच मानों मुझे अनुभूत करते ही
स्नेह सूत्र के माध्यम से
स्वांसों के आरोह अवरोह
मधुर नाद में परिवर्तित हो
स्पंदनों को शीतलता से भर देती हैं
और मुझे दिखाई पड़ने लगती है
मोक्ष की सुगम राह
इसलिए तुम मौन रहना
मुझे मोक्ष की राह तड़ने देना
बस थामे रखना स्नेह सूत्र

प्रतिमा पुष्प

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

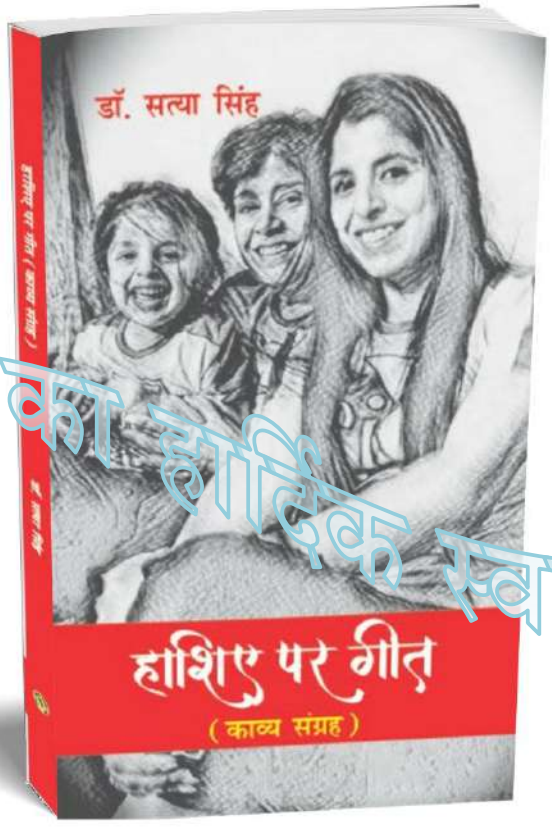

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : हाशिए पर गीत
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : 978-81-963524-7-9
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 120
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

उत्तर आधुनिकतावादी थे मनोहर श्याम जोशी

जन्म जयंती 9 अगस्त पर विशेष

भारत में हिन्दी टीवी धारावाहिकों के जनक भी रहे मनोहर श्याम जोशी

समग्र रचनाशीलता में क्रांतिधर्मिता सहेजे मनोहर श्याम जोशी

कृष्ण कुमार यादव

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी मनोहर श्याम जोशी के नाम से भला कौन अपरिचित होगा। वह आजीवन लिखते रहे, रचते रहे और जीवन को भिन्न-भिन्न आयामों से महसूस करते रहे। किस्सागोई तो उनके स्वाभाव में ही बसी था। मृत्यु से दिनों पहले ही एक साक्षात्कार के दौरान उन्होंने कहा था-''इस समय हमने जो कुछ भी लिखा है, उसमें सन्तोष नहीं है। मरने के पहले सन्तोष वाला कुछ लिखना चाहता हूँ।'' उस दौरान वे 'कपीश जी' लिखने में व्यस्त थे। इस रचना में पूर्व बनाम पश्चिम की भिड़ंत को उन्होंने पवनपुत्र हनुमान के माध्यम से उकेरा है। हनुमान जी स्वप्न में अब्राहम लिंकन जैसी दाढ़ी वाले एक व्यक्ति से उनकी मुलाकात करवाते हैं और वहीं एक उद्योगपति एवं ट्रेड यूनियनिस्ट की पुत्री अमेरिकी बाला के भी सम्पर्क में आते हैं। पर अन्ततः रहस्मय परिस्थितियों में उनकी मौत हो जाती है। वस्तुतः इस रचना के माध्यम से जोशी जी ने अमेरिका एवं भारत की सात पीढ़ियों का किस्सा व्यक्त किया है। यही कारण है कि लोग उन्हें किस्सागोई का

बादशाह कहते थे। पर स्वयं जोशी जी इसे कुमायूँनी परम्परा की प्रतिध्वनि मानते थे। जोशी जी ताउम्र हिन्दी की साहित्यिक परम्परा के विपरीत साहित्यवाद से बचते रहे। उन्होंने साहित्यवाद के स्थापित तरीकों को तोड़ा और अपने हिसाब से नए प्रतिमानों की रचना की। वे स्वयं कहते थे-''मैं विद्वान नहीं हूँ। मेरी विद्वता मात्र पत्रकारिता के स्तर की है। थोड़ा यह भी सूँघ लिया, थोड़ा वह भी सूँघ लिया। मैं तो प्रिन्ट मीडिया का आदमी हूँ।'' यही कारण था कि जोशी जी का लेखन परम्पराओं, विमर्शों, विविध रूचियों एवं विशद अध्ययन को लेकर अंततः संवेदनशील लेखन में बदल जाता है।

भव्य और आकर्षक व्यक्तित्व वाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी मनोहर श्याम जोशी का जन्म 9 अगस्त 1933 को अजमेर में हुआ था। उनके पिता श्री प्रेमवल्लभ जोशी वहाँ राजकीय शिक्षा सेवा में अधिकारी थे। बचपन से ही वैज्ञानिक बनने की तमन्ना रखने वाले जोशी ने लखनऊ विश्वविद्यालय से बी0एस0सी0 की डिग्री प्राप्त की एवं 'कल के वैज्ञानिक' उपाधि से नवाजे गए। विज्ञान के विद्यार्थी होने के कारण वे चीजों को गहराई में उतरकर देखने के कायल थे। लखनऊ की जमीन तो वैसे भी साहित्य के लिए रसायन का काम करती है, फिर जोशी जी इससे कैसे अछूते रह पाते। सो, लखनऊ लेखक संघ की एक बैठक के दौरान वे अपने प्रथम साहित्यिक गुरू अमृत लाल नागर से टकरा गए और फिर यहीं से महज 21 वर्ष की उम्र में ही मास्टरी, क्लर्की और बेरोजगारी का अनुभव बटोरते हुए लेखन को पूरी तरह से जीविका का आधार बना लिया। लखनऊ लेखक संघ की बैठकों में अमृत लाल नागर, भगवती चरण वर्मा और यशपाल ये तीनों साहित्यिक दिग्गज नियमित रूप से आते थे। जोशी जी ने इन तीनों ही विद्वानों से कुछ न कुछ सीखा- नागर से भाषा और किस्सागोई, भगवती बाबू से तुर्शी तो यशपाल जी से नजरिया। जोशी जी लेखक संघ की जिस बैठक में पहली बार गए उसमें उनके द्वारा कहानी पाठ प्रस्तावित था। फिलहाल जब जोशी जी ने 'मैडिरा मैरून' नामक अपनी कहानी का पाठ किया, जिसमें उन्होंने भावुकता-व्यंग्यात्मक तेवर आजमाए थे, तो उनकी सबसे ज्यादा तारीफ अमृत लाल नागर ने की। यह बात अलग है कि तब तक जोशी ने नागर की कोई रचना भी नहीं पढ़ी थी। नागर जी ने उस कहानी पाठ के बाद जोशी को गले लगाकर कहा- ''इस नए लेखक की खोज से मुझे इतनी खुशी हुई है, जितनी कि फैजाबाद में पुरानी अयोध्या के अवशेष मिलने से।'' खैर इसके बाद जोशी जी का लेखकीय जीवन चल पड़ा। उन्होंने आरम्भ में कविताएँ लिखीं एवं उसके बाद कहानी व उपन्यास लेखन में प्रवृत्त

हुए।

अपने कैरियर के रूप में उन्होंने पढ़ाई पूरी होने के पश्चात एक स्कूल में मास्टरी और तत्पश्चात आकाशवाणी में नौकरी की। उसके बाद जोशी जी उस समय की प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका 'दिनमान' में सहायक सम्पादक और फिर 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' के सम्पादक बने। उस समय 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' और 'धर्मयुग' दो ऐसी पत्रिकाएं थीं जो सम्पूर्ण देश की सांस्कृतिक-सामाजिक चेतना की संवाहक थीं। एक सम्पादक के रूप में जोशी जी ने साहित्य की हर विधा में रचनात्मक हस्तक्षेप किया और युवाओं को आधुनिक बोध से जोड़ते हुए कहानी व कविता के दायरे से परे व्यंग्य, यात्रा-वृतांत, रिपोतार्ज, कवर स्टोरी, संस्मरण इत्यादि की तरफ भी प्रवृत्त किया। सन् 1984 में उन्हें हिन्दुस्तान छोड़ना पड़ा और तत्पश्चात उन्होंने अंग्रेजी पत्र 'वीकेंड रिव्यू' और 'मार्निंग इको' के सम्पादन का कार्यभार संभाला। जोशी जी के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण तथ्य का उल्लेख समाचीन होगा कि पैतृक पक्ष से वे कुमायूँनी ब्राह्मण थे, जन्म अजमेर में हुआ और कर्मक्षेत्र लखनऊ बना। लखनऊ के प्रति अपने लगाव को वे स्वयं स्वीकारते हैं-''मैं मूलतः लखनवी हूँ और भूलतः कुछ और।''

जोशी जी समय की नब्ज को पहचानने में माहिर थे। उन्होंने अपने को एक ही क्षेत्र तक सीमित नहीं रखा बल्कि साहित्य के अलावा, पत्रकारिता, टी.वी. धारावाहिक और सिनेमा माध्यमों से भी वे गहरे व जीवंत रूप से जुड़े रहे। उनका कहना था कि- ''जो विधा मुझे अपने पास बुलायेगी, उसके पास जाना चाहूँगा। अनामंत्रित ढंग से विधाओं से मेल-मिलाप नहीं करूँगा।'' इसके चलते जहाँ उनके लेखन में सहज संप्रेषणीयता आई वहीं वे प्रयोगधर्मी भी बने रहे। वे एक ऐसे लेखक थे जो अपनी तरह से सोचता और लिखता था। जोशी जी ने अपना ज्ञान स्वाध्याय से विकसित किया और उनकी स्मृति भी बहुत अच्छी थी। उन्हें कई महत्वपूर्ण कृतियों के संदर्भ अक्षरक्षः याद रहते थे। प्रयोगधर्मी के रूप में उन्होंने सिंधी, उर्दू, बम्बईया, कुमायूँनी, भोजपुरी सभी भाषाओं का भिन्न-भिन्न रूपों में प्रयोग किया- कसप में कुमायूँनी, कक्का जी कहिन में उर्दू और भोजपुरी, कुरू कुरू स्वाहा में बम्बईया। वे भारत में हिन्दी टी.वी. धारावाहिकों के जनक माने जाते हैं। उनके द्वारा लिखित सोप ओपेरा 'हम लोग' हिन्दी का और भारत का ऐसा धारावाहिक बना जो अपने समय में दुनिया के सबसे ज्यादा देखे जाने वाले धारावाहिकों में शामिल था। 'हम लोग' की विशेषता भारतीय शहरी मध्य और निम्न मध्य वर्ग की आकांक्षाओं-संघर्षों की ऐसी कहानी है, जो बेहद सहजता, शालीनता व संवेदनशीलता के साथ कही गई है। जब 'हम लोग' धारावाहिक शुरू होता था तो बाहर सड़कों और गलियों में कोई नजर नहीं आता था। उन्हीं दिनों एक अखबार में 'हम लोग टाइम' नाम से एक कार्टून प्रकाशित हुआ था, जिसमें मंत्री जी की सभा में किसी के भी न आने पर वे अपने सेक्रेटरी को डाँट पिलाते हैं- ''किस मूर्ख ने तुम्हें सभा का यह वक्त रखने के लिए कहा था? जानते नहीं कि यह हम लोग टाइम है।'' हिन्दी

साहित्य के उत्तर आधुनिक काल में लिखे उनके धारावाहिकों- बुनियाद, कक्का जी कहिन, मुंगेरी लाल के हसीन सपने, जमीन आसमान, गाथा हमराही इत्यादि ने भारतीय मनोरंजन को एक नई दिशा दी एवं दूरदर्शन के क्षेत्र में भी क्रान्ति लाई। 'बुनियाद' तो एक ऐसे परिवार की कहानी थी जो सन् 1947 में विभाजन के बाद भारत आया था। 'हम लोग' और 'बुनियाद' धारावाहिक जोशी की किस्सागोई के प्रत्यक्ष उदाहरण रहे हैं। टी.वी. धारावाहिकों के साथ-साथ जोशी जी ने कई फिल्मों की पटकथा भी लिखी। इनमें हे राम, अप्पू राजा, भ्रष्टाचार और पापा कहते हैं इत्यादि प्रमुख हैं।

मनोहर श्याम जोशी के पास वैचित्र्य की कमी नहीं थी। साधारण चरित्रों का अद्भुतिकरण और अद्भुत चरित्रों का सामान्य विश्लेषण उनकी रचनाओं की एक दुर्लभ विशेषता रही है। वे हमेशा निम्नवर्गीय या निम्नमध्यवर्गीय पात्रों को उठाते हैं। फंतासियों के रूप में उनके नायक आदर्शवादी, साहसी, पराक्रमी व उदात्त हीरोइज्म को क्रिएट नहीं नहीं करते, बल्कि नायकत्व की पारंपरिक अवधारणाओं को खण्डित करते नजर आते हैं। उनके नायक भीरू-कातर और विदूषकीय तेवरों वाले दिखते हैं। वस्तुतः जोशी जी में सच्चाई को ढकने की बजाय उन्हें उकेरने का साहस था। उनके लिए साहित्य पांडित्य-पाखंड या प्रदर्शन का पर्याय नहीं बल्कि अपनी विविध रूचियों और व्यापक अध्ययन को संवेदनशील रूप में तराशने का माध्यम थी। उन्हें बेचन शर्मा 'उग्र' के बाद का सबसे बड़ा शैलीकार यूँ ही नहीं माना जाता है। उनमें एक अजीब किस्म के उजड्डपन और सोफिस्टिकेशन का अद्भुत संगम था। उनमें तहजीब भी थी और गँवारूपन भी। जोशी जी खास किस्म के गम्भीर और कॉमिक लेखक थे। कॉमिक का मतलब गम्भीर अर्थों में कॉमिक, जो हमारे यहाँ अक्सर लक्ष्य नहीं किया जाता है। वे सामाजिक और पारिवारिक संस्थाओं का मजाक उड़ाते हैं और परिस्थितियों की कारूणिकता को हास्य-व्यंग्य के जरिए हल्का करना चाहते हैं। यही नहीं, उनकी नितांत अपनी विशेषता थी- अपने पांडित्य पर ही नहीं अपने समूचे आप पर हँस सकने की सामर्थ्य। इसी अद्भुत क्षमता के चलते उनकी 'लखनऊ मेरा लखनऊ' जैसी श्रेष्ठ आत्मकथात्मक कृति सामने आयी।

वस्तुतः जोशी जी ने जिस दौर में लिखना आरम्भ किया वह विसंगति-विडंबना का जमाना था। विरूपतायें समाज के हर क्षेत्र में कुकुरमुत्ते की तरह जमीन से फूट रही थीं। ऐसे समय में उन्होंने अपना पहला उपन्यास 'कुरू-कुरू स्वाहा' लिखा। 'कुरू-कुरू स्वाहा' ने हिन्दी उपन्यास को रूमानियत से मुक्त किया और उसके जड़ हो चुके फॉर्म को तोड़कर भाषा को एक नया आयाम दिया, जो निहायत सामयिक और आधुनिक था। इस उपन्यास ने साबित किया कि कोई श्रेष्ठ रचना एक नहीं, दो नहीं वरन् कई स्तरों पर चलती है और समाज व व्यक्ति के विभिन्न रूपों को एक साथ समानांतर धाराओं में समेटती हुई उनके बीच सम्बन्ध स्थापित करती है। स्वयं जोशी जी का मानना था कि उन्होंने यह उपन्यास अर्जेंटीना के लेखक गोरखेज से प्रेरणा लेकर लिखा जो सारे साहित्यिक आन्दोलनों में हिस्सा लेने के बाद लेखन के क्षेत्र में लौटे थे। 'हरिया हरक्यूलिस की हैरानी' उपन्यास में भी पारम्परिक इतिवृत्तात्मकता की जड़ता टूटी एवं सैकड़ों पृष्ठों में चलने वाले प्रकृतवाद से मुक्ति मिली। इस उपन्यास में अपने समाज से जुड़े रहने की ललक, अकेलापन और पितृभक्ति लगभग सभी परम्परागत विस्थापित समाजों का विशिष्ट चरित्र है। इस उपन्यास में गुमालिंग शब्द बार-बार आया है, जिसका कि इस्तेमाल अश्लीलता के साथ किया गया है। 'हमजाद' उपन्यास में उन्होंने स्त्री-पुरूष के बीच की रागात्मकता और रोमांस की निर्ममता को उकेरा तो 'कसप' में मधुर रागात्मकता को। 'क्याप' उनका सर्वप्रमुख उपन्यास था, जिस पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ था। 'क्याप'-माने कुछ अजीब, अनपढ़, अनदेखा-सा, अप्रत्याशित। जोशी जी के उपन्यास सदैव किसी निष्कर्ष पर पहुँचे हीं, जरूरी नहीं। उनके उपन्यासों में आदि से अन्त तक सामाजिक विरूपताओं के साथ हँसी का भाव रहता था, पर अचानक ही वे उसे इस मोड़ पर खड़ा कर देते थे कि आगे कुछ सूझता ही नहीं था। उनके लिए जिन्दगी निरंतर चलने वाली प्रक्रिया का नाम था, सो उनका उपन्यास तो खत्म हो जाता था पर उसका अंत नहीं होता था।

जोशी जी की यह एक अनूठी विशेषता थी कि वे अपना उपन्यास डिक्टेट कराके लिखवाते थे, यानी चलते-फिरते हुए भी वे उपन्यास लिख सकते थे। उनके उपन्यासों में अनुप्रास का प्रयोग है और उनके शीर्षक उनकी शैली का संकेत देते है। शैली में संश्लिष्टता उनकी खूबी है और शीर्षकों में खिलंदड़ापना है। जोशी जी की यही प्रवृत्तियाँ उन्हें अपने समकालीनों निर्मल वर्मा और श्रीलाल शुक्ला से अलग करती हैं। निर्मल जहाँ एकांत के अँधियारे में चले गए वहीं श्रीलाल की रचनाओं में व्यंग्य और भी वाचाल व तीखा होता गया। जोशी जी उस दौर में लेखन कर रहे थे जब धीरे-धीरे पुराने मूल्य जड़ हो रहे थे और नए को लेकर असमंजस व दुविधा का भाव था। ऐसे संक्रमण काल को जोशी जी ने पत्रकारिता और व्यंग्य का माध्यम लेकर समझने की कोशिश की। उनकी अन्य रचनाओं में 'मंदिर घाट की पौड़ियाँ', 'बातों -बातों में', 'टा-टा प्रोफेसर षष्टीबल्लभ पन्त', 'सिल्वर वेडिंग', 'कैसे किस्सागो', 'एक दुर्लभ व्यक्तित्व' इत्यादि प्रमुख हैं।

मनोहर श्याम जोशी आधुनिकतावादी एवं उससे भी आगे बढ़कर उत्तर -आधुनिकतावादी थे। यद्यपि उन्होंने क्रांतिकारी आन्दोलनों में शिरकत नहीं की परन्तु उनकी समग्र रचनाशीलता में क्रांतिधर्मिता है। प्रेस, रेडियो, टी.वी., वृत्तचित्र, फिल्म, विज्ञापन, व्यंग्य, संप्रेषण इत्यादि क्षेत्रों में समान रूप से सर्वश्रेष्ठ लेखन करने वाले जोशी ने आजाद भारत के राजनैतिक समाज के भूलभुलैया भरे रास्तों में निरंतर परिवर्तन होते देखे

तो भूमण्डलीकरण एवं सूचना-क्रांति के कारण सिमटती दुनिया के आंतरिक विघटन व ग्लानि को भी देखा। यहाँ तक कि पश्चिम की प्ले ब्वॉय जैसी पत्रिकाओं में उपलब्ध हाने वाले सेक्स सम्बन्धी दिलचस्प विषयों को भी जोशी जी ने सत्तर-अस्सी के दशक में जोरदार ढंग से छापा। कोई भी ऐसा प्रसंग नहीं रहा जिस पर उनकी कलम न चली हो- चाहे वह अमेरिका द्वारा विश्व-पुलिस के रूप में भूमिका निभाना हो अथवा प्रवासी भारतीयों के अधकचरे भारत प्रेम से लेकर सिलिकॉन वैली का वर्णन हो। कभी-कभी उनकी साफगोई एवं यथार्थ को उसी कटु रूप में परोसने के चलते कई आलोचकों ने 'सिनिसिज्म' (मूल्यहीनता) जैसे आरोपों से भी उन्हें नवाजा पर 'कसप' जैसे संवेदनशील प्रेम-आख्यान, जिसका शुमार हिन्दी के दो-तीन श्रेष्ठ उपन्यासों में होता है, के लेखक पर यह आरोप लगाना स्वयं में विराधाभास लगता है।

मनोहर श्याम जोशी (9 अगस्त 1933-30मार्च 2006) का रचना संसार इतना व्यापक एवं जटिल था कि उस पर कोई एक लेबल लगाना सम्भव नहीं। वक्त के साथ उन्होंने टी.वी. और सिनेमा के बढ़ते प्रभाव को समझा और लोगों तक अपना संदेश देने हेतु उनका भी प्रयोग किया। वे एक प्रोफेशनल लेखक थे और इस रूप में उन्होंने मीडिया, साहित्य और तकनीक के बीच एक अनूठा अन्तर्संबंध कायम किया। एक सशक्त उपन्यासकार होने के साथ-साथ उन्होंने पत्रकारिता में भी कई आयाम जोड़े, जबकि पत्रकारिता को साहित्य का दुश्मन माना जाता रहा है। उन्हें मध्यप्रदेश साहित्य परिषद सम्मान, शरद जोशी सम्मान, शिखर सम्मान, दिल्ली हिन्दी अकादमी अवार्ड, टेलीविजन लेखन के लिए ओनिडा और अपट्रान अवार्ड, 'क्याप' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार जैसे सम्मानों से भी विभूषित किया गया। एक साक्षात्कार के बाद स्वयं श्रीमती इंदिरा गाँधी तक ने उन्हें अतिवादी कह दिया था, पर इसके बावजूद आपातकाल में उन्हें भूमिगत नहीं होना पड़ा। बेबाकी अन्त तक उनके स्वभाव में छायी रही पर अफसोस व तड़प भी। एक साक्षात्कार में उन्होंने कहा था-''वस्तुतः जिन चीजों को लेकर हम निकले थे वह तो इस सदी में हुई नहीं। अगली सदी में क्या होगा हमें समझ में नहीं आता?''

कृष्ण कुमार यादव

पोस्टमास्टर जनरल,

उत्तरी गुजरात परिक्षेत्र, अहमदाबाद -380004

मो0- 09413666599 ई-मेल: kkyadav.t@gmail.com

हेयर-ऑइल

-वंदना सहाय

आज यामिनी जी बहुत खुश हैं- उनका वीसा बन कर तैयार हो गया है, अब वे कुछ दिन अपने बेटे के पास विदेश में रहेंगी। बहुत झेल लिया उन्होनें अकेलेपन का दंश।

उन्हें याद आने लगीं वे सारी बातें- कैसे पति के सीमित पेंशन में उन्होनें बेटे को पढ़ाया-लिखाया। कम उम्र का वैधव्य उन्हें कोमल लता से एक सख़्त दरख्त बना गया था। बेटा उस दरख्त के घोंसले में तब तक रहा जब तक उसके पंख उड़ने लायक न थे। पंखों में ताक़त आते ही वह उड़ चला- सात समुन्दर पार, दाना-पानी की तलाश में...

पोती को देखने की प्रबल उतकंठा का मज़ा वे यह सब बातें याद कर ख़राब नहीं करना चाहती थीं।

विदेश पहुँचते ही उन्होनें अपनी पोती को सीने से लगा लिया- जैसे जन्नत मिल गई हो। उन्हें लगा कि ज़िन्दगी पूरी तरह से ख़त्म नही हुई है, अभी भी जीने का मकसद बाँकी है।

एक दिन वे पोती के लिए दूध का गिलास ले कर उसे पिलाने के लिए उसके शयन-कक्ष की ओर जा रहीं थीं कि उन्होनें उसे कहते सुना- "मॉम, हाउ लॉन्ग डू आई हैव टू शेयर माय रूम विद हर? स्मेल ऑफ़ हर हेयर-ऑइल इस सो ऑबनॉक्सियस!" (कितने दिनों तक मुझे अपना रूम उसके साथ शेयर करना पड़ेगा? उनके बालों का तेल मुझे विकर्षित करता है।)

उनके शयनकक्ष की ओर बढ़ते कदम पीछे लौट गए और मन स्वदेश लौटने की तैयारी करने लगा।

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

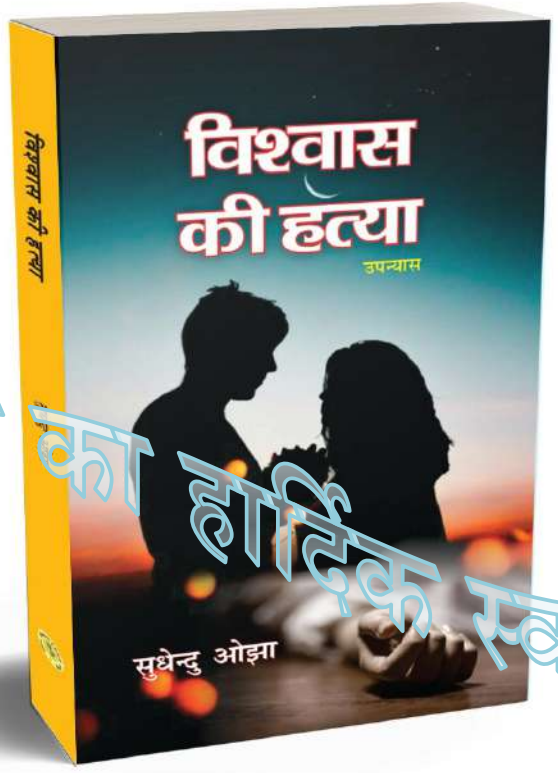

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **विश्वास की हत्या (उपन्यास)**
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : **978-81-964179-8-7**
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 198
Price : 200/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

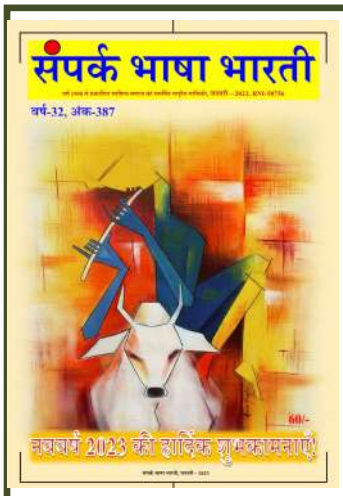

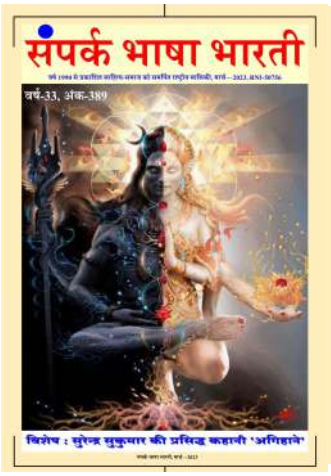

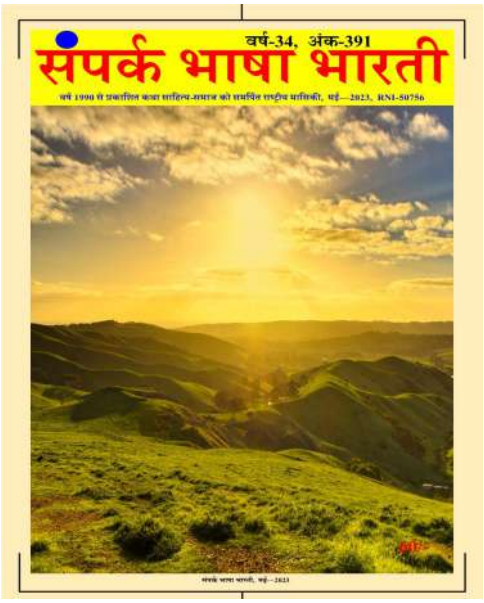

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

वह यादगार पल

संस्मरण।

डॉ. सतीश "बब्बा"

एक दिन मेरी बात डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय जी से हुई थी कि, 'आपको 21 जुलाई को टाइम होगा क्या?'

मैंने असमर्थता जताई थी कि, 21 जुलाई को मुझे गैवीनाथ धाम (फटहाबाबा) विरसिंहपुर जाना होगा, क्योंकि उस दिन पूर्णिमा के साथ - साथ गुरु पूर्णिमा भी है।

उस दिन मेरे साहित्यिक गुरु डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय ने कहा था कि, "चलो कोई बात नहीं है!"

फिर एक दिन डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय जी का फोन आया कि, "आपकी उपस्थिति अनिवार्य है!"

मैंने कहा, "चलो आने का प्रयास करूंगा!"

मैंने जाने का संकल्प लिया और जाने के लिए यह कि, दोनों गुरु मुझे दर्शन के लिए नहीं छूटें!

मैं 21 जुलाई 2024 रविवार को सुबह दो बजे रात में ही अपना बिस्तर छोड़ दिया। मेरे तख्त ने कहा भी कि, 'अभी रात बहुत बाकी है!' मैं कहां मानने वाला मैं अपने काम के प्रति संकल्पबद्ध जो था!

मैं प्रातः कालीन सभी क्रियाएं पूरी किया; नहा धोकर सुबह के तीन बजे ही अपनी बसंती (एक्टिवा) से चल पड़ा; विरसिंहपुर की ओर!

मैंने पढ़ा भी है और सुना भी है कि, 'हर जिंदगी में कहानी है और हर कहानी में जिंदगी है!' रास्ते में घनघोर जंगल धारकुंडी पड़ता है। आपने भी धारकुंडी जंगल की रोमांचक कहानियां सुनी होगी। जंगली जानवरों और डाकुओं की डरावनी कहानियां।

मुझे अपनी बसंती पर भरोसा था। मैंने बसंती को बढ़ाया, दौड़ाया, मुझे डाकुओं का भय इसलिए नहीं लग रहा था कि, मैं एक साहित्यकार और पत्रकार हूं, वैसे भी वह जानते हैं कि, इस फटीचर के पास कुछ भी नहीं होगा। रही बात शेर की जो बहुत से लोगों को मिला है और पसीने छुड़ाए हैं। एक आस्था जागी कि, मैं जिसके दर्शन के लिए जा रहा हूं वो माता पार्वती दुर्गा रूप में उस पर सवारी करती है। मैं तो पार्वती और पार्वती पति शंकर के लिए जा रहा हूं। डर किस बात का।

वास्तव में भयावह जंगल में जंगली पशु - पक्षी और जानवरों की आवाजें भय तो पैदा करती हैं फिर भी प्रयागराज तो पहुंचना ही है। मेरी बसंती दौड़ती रही, रुकी नहीं।

धारकुंडी के परमहंस आश्रम में गुरू पूर्णिमा को विशाल मेला लगता है। और भंडारा भी होता है।

जंगल तो जंगल है, करीब पांच से छः किलोमीटर किस प्रकार से निकाला मैं ही जानता हूं। हिम्मत मैंने नहीं हारी हां ब्रेकरों पर गुस्सा आ रहा था क्योंकि संकरी सड़क पर ब्रेकर ऐसे बनाए गए हैं जहां, गाड़ी को जीरो की रफ्तार में, लगभग रोककर गाड़ी आगे बढ़ाना पड़ता था वरना सफर जल्दी ही तय हो जाता।

धारकुंडी जंगल में पहले यह सड़क नहीं पत्थरों से बना हुआ रपटा हुआ करता था। लोग चार पहिया वाहन में भी रात में यहां नहीं घुसा करते थे। अब आर सी सी रोड है सिर्फ ब्रेकर अखरते हैं। अब भी बहुत कम लोग रात में यहां से निकलते हैं और निकलते भी हैं तो अकेले मेरी तरह नहीं।

गेट पर जहां से उत्तर प्रदेश की सीमा समाप्त और मध्य प्रदेश की सीमा शुरू होती है वहां पहुंचा तो ब्रेकरों से निजात मिली और मंजिल करीब लगी।

ढांढस और विस्वास के साथ चढ़ाई चढ़कर परमहंस आश्रम के पहले वाले दरवाजे पर पहुंचा। वहां पर कुछ साधु और मेले में दुकान लगाने आए व्यापारी जाग रहे थे।

मैंने अब गाड़ी की घड़ी की ओर देखा चार बजने में अभी सात मिनट बाकी थे। मैं बहुत खुश हुआ, जहां दिन में अकेले चलने में लोग डरते हैं; मैं रात में नहीं डरा!

सुबह एक अखबार की कतरन योगेन्द्र मिश्र ने जो मेरे दूसरे नंबर के सुपुत्र हैं और जबलपुर में रहते हैं, भेजा था जिसमें एक समाचार का शीर्षक था कि, धारकुंडी जंगल में सड़क के बाजू दिखा तेंदुआ!

मुझे क्या, रहा होगा! सड़क में नहीं आया था जब मैं वहां से निकल रहा था। सड़क किनारे दोनों तरफ घनघोर जंगल, पहाड़ हैं; उससे मेरा क्या लेना देना? वह तो जानवरों का घर ही है।

मेरे घर से गैवीनाथ धाम, फटहाबाबा विरसिंहपुर पूरे साठ किलोमीटर है और फिर वहां से वापस चालीस किलोमीटर मानिकपुर स्टेशन पर आया और बसंती को वहीं पास में ही एक पहचान के मिश्र जी के यहां खड़ी कर दिया।

टिकिट खिड़की से देखा एक गाड़ी खड़ी थी। टिकिट लिया और जाकर उसमें बैठ गया। वह गाड़ी पवन एक्सप्रेस थी जो शायद मेरे ही इंतजार में रही है। वह मेरे बैठते ही चल पड़ी थी।

ट्रेन में ही प्रदीप का फोन आया। प्रदीप डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय के घर पर ही था।

मैंने डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय जी से बताया कि, 'मैं सारनाथ एक्सप्रेस से पहले पवन एक्सप्रेस से आ रहा हूं!'

सुनकर उनकी खुशी मोबाइल फोन पर भी समझ में आ रही थी।

मुझे गर्व है डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय जी पर कि, वह अपनी मां की स्मृति में, माता राजपती देवी स्मृति साहित्य सम्मान महिला रचनाकारों को देकर, मां के साथ बिताए दिनों की याद करके बहुत ही भावुक हो जाते हैं और उपस्थित जनसमूह को भी भावविभोर कर देते हैं।

मुझे कार्यक्रम स्थल ज्वाला देवी सरस्वती विद्या मंदिर मम्फोर्डगंज पहुंचने में कोई दिक्कत नहीं हुई।

वहां पहुंचकर मैं अपने आपको धन्य माना और जीवन को सार्थक समझा। क्योंकि बहुत से उच्च कोटि के साहित्यकारों में जिनमें

बहुतायत महिला रचनाकारों के दर्शन मुझे किसी तीर्थ से कम नहीं लग रहे थे। और मुझे अदृश्य सरस्वती में स्नान करने जैसा लग रहा था।

मैं उस प्रयागराज की पावन धरा में, जहां गंगा यमुना और अदृश्य सरस्वती का संगम है। लोग पूछते हैं कि, 'आप गंगा नहा कर आए!'

मैं आज 21 जुलाई 24, गुरु पूर्णिमा को अपने साहित्यिक गुरु डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय का सानिध्य प्राप्त किया और सरस्वती का प्रत्यक्ष दर्शन और स्नान किया है जो; सबको संभव कहां होता है!

युगों युगों से पुराणों और वेदों में प्रयागराज को सरस्वती का निवास स्थान कहा गया है। मैं सरस्वती की लहरों में गोते लगा रहा था।

वहां पर उपस्थित सैकड़ों की तादाद में महिला रचनाकारों, साहित्यकारों से मिलने का हृदयेश अवसर मिला और बहुत से पुरुष साहित्यकारों से मिलने का शुभ अवसर मिला।

अपनी बहन जया मोहन से मिलकर मैं भी और वो भी बहुत खुश हुए और गीता चौबे गूंज बेंगलुरु से मिलने का अवसर मिला जो संचार माध्यम से मिलती थीं और आज आमने-सामने मिलकर बहुत खुशी हुई, उनके पति भी बहुत मिलनसार व्यक्तित्व के धनी लगे।

इस संस्मरण में इतने सारे लोगों का नाम कहना बहुत कठिन है। यह इतनी कठिन तपस्या करने के बाद मैंने प्राप्त किया है जो ऐतिहासिक यादगार के रूप में याद किया जाता रहेगा।

डॉ. राम लखन चौरसिया ने पुस्तक प्रदर्शनी का कार्य संभाला था। जिस प्रदर्शिनी में मेरी भी पुस्तकें सामिल की गई थीं।

मैंने देखा इतनी अच्छी बाल रचनाओं वाली डॉ भगवान प्रसाद उपाध्याय की और मेरी पुस्तक सूखे पत्तों का पानी को लोग उठाते और देखते, पन्ने पलटते फिर रख देते, वह पुस्तकें खरीदने के लिए हिम्मत नहीं जुटा पाए।

डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय की पुस्तक तोते का स्कूल और परी और पीहू को भी लोग नहीं ले सके!

कार्यक्रम शुरू किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध रचनाकार बहन जया मोहन ने किया। मुख्य अतिथि मुनेश्वर मिश्र सहित छः विद्वान मंच पर आसीन थे।

सबसे पहले सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया फिर दीप प्रज्ज्वलित करके ज्वाला देवी सरस्वती विद्या मंदिर की बहनों ने गीत गाए।

लेखिका जया मोहन एवं और बहुत सी देश भर से आई महिला रचनाकारों को अंगवस्त्र, माला एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय स्तर का था।

मेरी पुस्तक भखाराम नहीं रहे का लोकार्पण किया गया और भी कई रचनाकारों जैसे जया मोहन और डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय जैसे लेखकों की पुस्तकों का तालियों की गड़गड़ाहट के बीच विमोचन किया गया।

और रचनाकारों के साथ मुझे भी सारस्वत सम्मान से नवाजा गया।

डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय के संचालन में कार्यक्रम बहुत ही अच्छा रहा; जितनी भी सराहना की जाए कम होगी!

साहित्यकारों के लिए जलपान और भोजन की व्यवस्था बहुत ही उत्तम थी। मैंने भी डॉ. सुभाष चन्द्रा एवं नीलाक्षी के साथ भोजन किया।

कार्यक्रम में ज्वाला देवी सरस्वती विद्या मंदिर मम्फोर्डगंज का बहुत ही अच्छा सहयोग था।

विद्यालय प्रबंधन के साथियों, बहनों शिक्षिकाओं का बहुत बढ़िया सराहनीय योगदान रहा था। उन्होंने मंगलमय स्वागत गीत और सरस्वती वंदना भी गाया।

कार्यक्रम में मैं सम्मान पाकर धन्य हो गया। यह मेरे जीवन का कभी नहीं भूलने वाला संस्मरणीय यादगार पल बन गया है।

मैं आयोजक मंडल में डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय और डॉ. पवनेश उपाध्याय पवन को साधुवाद देना चाहूंगा। और उनके द्वारा मुझ नाचीज को भी सम्मानित किया गया जो, मेरे लिए बहुत ही यादगार, कभी भी नहीं भूलने वाला संस्मरणीय पल होगा।

डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय जो मानव रूप में साक्षात देवता कहूं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

मैं जीवन के अपने अनुभव में डा. भगवान प्रसाद उपाध्याय की जितनी तारीफ करूं कम होगी वही सूर्य को दीपक दिखाना होगा।

मैं लौटकर घर आया और लोगों ने वही प्रश्न दोहराया कि, "प्रयागराज गए थे गंगा स्नान किया?"

उनके लिए मेरा एक ही जवाब है, "सर्व पुण्य सलिला सरस्वती का स्नान मैंने किया है!" शायद ही कोई मेरे इस जवाब को समझा होगा!

बहुत से आयोजन मैंने देखे हैं लेकिन 21 जुलाई 24 गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर यह राजपती देवी स्मृति साहित्य सम्मान जो हनुमान प्रसाद उपाध्याय पुस्तकालय द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय के संचालन में ऐतिहासिक यादगार बन गया।

इतने कष्टों के बावजूद मैं भी पहुंच गया। अगर नहीं पहुंच पाता तो इस परम सुख से वंचित रहकर पछतावा में जलता रहता।

वास्तव में जिस निष्ठा से मैं गया, उस निष्ठा और पूजा का फल मुझे मिला जो जीवन पर्यन्त याद रहेगा और इस संस्मरण के माध्यम से दस्तावेज के रूप में, सदा सुरक्षित, संवलित रहेगा!

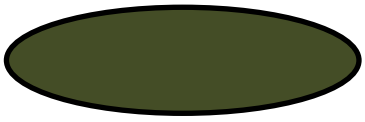

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

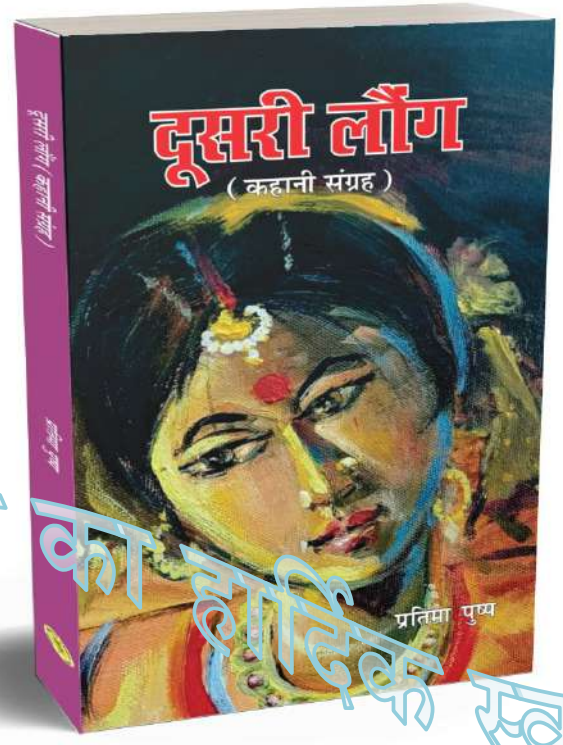

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : दूसरी लौंग (कहानी सांग्रह)
Author प्रतिमा 'पुष्प'
ISBN : : 978-81-963524-2-4
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 134
Price : 250/-
Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

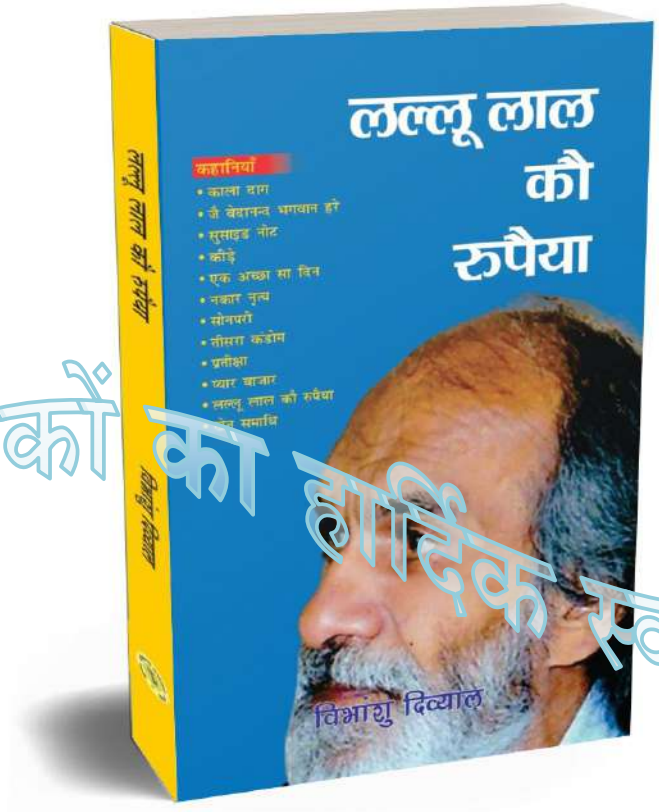

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : लल्लू लाल कौ रुपैया (कहानी सांग्रह)
Author विभांशु दिव्याल
ISBN : : 978-81-964179-3-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 190
Price : 350/-
Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

दो लघुकथाएँ : वंदना सहाय

1. ध्वनि-प्रदूषण

प्रोफेसर स्वर्णलता ने जब ध्वनि-प्रदूषण के दुष्परिणामों पर व्याख्यान दिया, तो सारा सभा-भवन तालियों की गूँज से भर उठा। लोग एक बार फिर से ध्वनि-प्रदूषण के दुष्परिणामों के प्रति जागृत हो उठे थे।

सभा खत्म होते-होते शाम से रात हो गई। प्रोफेसर स्वर्णलता अपने घर लौटीं।

दरवाज़ा खुलते ही घर का सन्नाटा उन पर उचाट नज़रें डाल कर शांत हो गया।

अब फिर, रोज की तरह रात के आते ही सारे घर में शांति ने पहरा देना शुरू कर दिया था। दूर-दूर तक कोई आवाज़ नहीं...।

जबरन बंद की गई आँखों से बिस्तर पर पड़े-पड़े, वे याद करने लगतीं है- अपने स्वर्गवासी पति और प्रवासी बेटे को।

गुजरते रात के साथ बढ़ती बेचैनी उनके मन को आलोड़ित करने लगती है और उन्हें लगता है कि उनके कान ढूँढ रहे हैं- चंद शब्दों को सुनने के लिए।

2. वर्चुअल वेडिंग

बूढ़े दम्पति आज बड़े खुश थे। कारण यह था कि उनकी पोती की शादी ठीक हो गयी थी।बेटे-बहू विदेश में रहते थे और पोती की शादी वहीं से होने वाली थी।

बरसों बाद उनका मन किसी पंछी की तरह चहचहा उठा था। उन्हें लगा, जैसे कि उनके जीवन में दिनचर्या से अलग भी कुछ हो सकता है। पर, मन की यह खुशी उसी तरह गायब हो गयी जैसे जाड़े के दिनों में सूरज की गर्मी से ओस की बूँन्दें गायब हो जाया करतीं हैं।

हुआ यूँ कि जब पिता ने फोन लगा कर शादी की तिथि और वहाँ आने के बारे में पूछा तो बेटे ने आवाज में बिना किसी उतार-चढ़ाव के कहा कि शादी के लिए वहाँ आने की जरूरत ही क्या है। ख़्वाहमख़्वाह पैसे और समय की बर्बादी होगी। क्या उन लोगों ने 'वर्चुअल वेडिंग सेरेमनी' के बारे में नहीं सुना, जिसमें वे घर पर ही बैठ अपने मोबाइल पर यहाँ होती हुई शादी को देख सकते हैं। वह शादी की 'लाइव स्ट्रीम' करेगा, जिसे वे वहीं से बैठ 'वर्चुअली इंन्जाएँ' कर लेंगे।

बूढ़े दम्पति की अनुभूतियों को काठ मार गया। वे फोन पर अपने बेटे-बहू को कह ही नहीं पाए कि जिस आनंदातिरेक की अनुभूति उन्हें सशरीर वहाँ उपस्थित हो पोती-दामाद के सिर पर हाथ रख उन्हें आशीर्वाद देने में होती, वह इस 'लाइव स्ट्रीम' में कहाँ?

हत्या

यहीं कहीं
एक नदी बहती है
देखना किसी पूर्णिमा के दिन
चांदनी में लहरें
कितने बल से मचलती है
जैसे छूना चाहती है चांद को

यहीं कहीं
एक फूल महकता है
देखना किसी वसंत के दिन
सुबह में खुशबुएं
कितने उमंग से बहकते हैं
जैसे समेटना चाहते हों वसंत को

यहीं कहीं
एक वन गहराता है
देखना किसी वर्षा के दिन
पानी में पेड़
कितने जोश से बढ़ते हैं
जैसे बांधना चाहते हों वर्षा को

यहीं कहीं
एक चूल्हा जलता है
देखना किसी भूख के दिन
भूख में चूल्हा
कितने मरोड़ में बैठता है
जैसे मिटाना चाहता हो भूख को

यहीं कहीं
एक कविता बोलती है
देखना किसी हत्या के दिन
हत्या में कविता
कितनी आवृति में कचोटता है
जैसे जकड़ना चाहता हो हत्या को.

मोतीलाल दास डोंगाकाटा, नंदपुर मनोहरपुर - **833104,**
झारखंड मो.**7978537176**

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

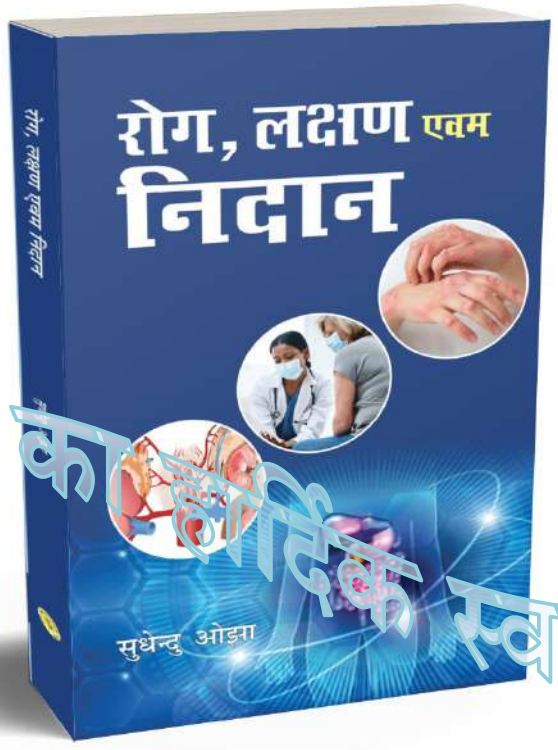

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : रोग, लक्षण एवम निदान
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : 978-81-958985-7-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 190
Price : 150/-
Genre Prose : गद्य (चिकित्सा)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **प्रतापगढ़ न्यूज़ (उपन्यास)**
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : **978-81-964179-7-0**
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 154
Price : 200/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

इंद्रधनुषी सतरंगी
झिलमिल हो नभ पंथ
कनक थाल में मेघ सजा हो
हो जीवन उद्गार प्रिय।

सुरमई शाम
आँगन में दीप
नूपुर की रुनझुन से ,
हो जीवन उद्गार प्रिय।

अंतर्मन भर पुलक
अरुण का सूर्य कलश
पाँव में महावर हो , हो जीवन उद्गार प्रिय।

अलि गूँजित मधुवन
सुधि से सुरभित स्नेह
स्पंदन ले अंक में ,
हो जीवन उद्गार प्रिय।

चिर अनमोल बंधन
प्रेम की परिधि
सागर की मोती सा, हो जीवन उद्गार प्रिय।

अंबर में विद्युत
उर में है बादल
साँसों के सौरभ-सा,
हो जीवन उद्गार प्रिय।

मधुरता अलक्षित
स्वर्ग सा श्रृंगार
संगीत की झंकार से
हो जीवन उद्गार प्रिय।

पवन हौले मृदुल पावस का पलक डोल
तारों की चाँदनी-सा,
हो जीवन उद्गार प्रिय।

बबिता सिंह
हाजीपुर वैशाली
बिहार

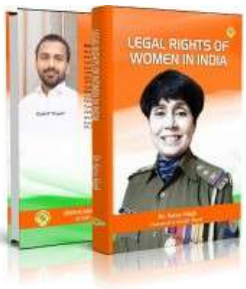

Legal Rights of Women in India

By Dr. Satya Singh

Price : Rs. 250/-

Pages :120

Paperback

यह FLIPKART पर उपलब्ध है .....

गूगल-पे (9868108713) माध्यम से मंगाने पर कूरियर चार्ज का भुगतान प्रकाशक द्वारा किया जाएगा।

सौभाग्य प्रकाशन

कार्यालय : 495/2, द्वितीय तल, गणेश नगर-2, शकरपुर, नई दिल्ली-110092

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

समाजवाद का हमशक्ल

पूरन सरमा

वह हमारे विभाग के सभी कमरों में दिन में कम से कम दो बार नियमित रूप से आता है। उसकी उम्र यही कोई 22–23 वर्ष के करीब है। वह पिछले तीन महीने से आजकल सस्पेंड चल रहा है। हमारे दफ्तर के अफसरों ने उसकी चपरासी की नौकरी इस अपराध में छीनी है, क्योंकि वह दिन भर कमरों में जाकर ''काम करो भाई काम करो '' कहा करता था।

उसके इस व्यवहार में अभी भी कोई फर्क नहीं आया है। अब भी वह सभी कमरों में जाकर जोरों से कहता है –''बात कम करो भाई लोगो, काम ज्यादा करो, देश पर बहुत संकट है। ऐसे समाजवाद कैसे आएगा।''

वह प्रत्येक बाबू की टेबिल पर झुक्कर पूछता है – 'बाबूजी, आज आपने कितना काम किया है ?''

''आज आपने उस साथी का अधूरा कार्य पूरा किया या नहीं, किया तो कर दीजिए साब।''

''देखिए ! उसके बच्चे बीमार है। उसका मेडिकल बिज जरा जल्दी निकाल दीजिए।''

''आप तो बाबूजी दिन भर चाय पीते है। दीजिये, आधी चाय मुझे पिलाइये। झूठी है तो क्या हुआ आप इन्सान तो हैं हीं।

''बाबूजी, आप उसे इस तरह क्यों डांट रहे है। वह भी आप ही की तरह है। उसके खून का रंग भी आपके खून की तरह लाल है।''

एक दिन उससे मेरा भी मुलाकात हुई। आते ही बोला – 'बाबूजी, आपकी मोटरसाइकिल दे दीजिए।

मैंने कहा – ''भाई वह तो खराब है, अभी जाते समय ठीक करवाऊंगा। इस पर वह उबल पड़ा – 'हां–हां, ठीक है – में समझ गया, आय नहीं देना चाहते। लेकिन मोटरसाइकिल पर आपका अकेले ही हक नहीं बनता है। आपकी मोटरसाइकिल सबकी है। भला सोचिए बाबूजी ऐसे समाजवाद कैसे आएगा?''

मैंने उसे समझाया कि मैं समाजवाद के आने में कंहा आड़े आ रहा हूँ, तो उसके प्रत्युत्तर में उसने एक घण्टे का पूरा भाषण झाड़ दिया। उसने बाबू से लेकर अफसर की कमजोरियों को उघाड़ कर रख दिया। मैं भयभीत सा उसकी आल्हा सुक्ता रहा। उसे नहीं सुनना भी एक मुश्किल मोल लेना होता है।

अब जब से वह सस्पेंड हुआ है, वह हाथ में एक डण्डा और रखने लगा है। छोटा सा वह डण्डा दफ्तर में किसी की भी मेज पर कभी भी जा बजता है। काम करता हुआ या गप्प लगाया हुआ बाबू समझ जाता है कि वह आ गया है।

वैसे नाम तो उसका चन्दन है लेकिन दफ्तर में लोगों ने उसका नाम समाजवाद रख दिया है।

वह अपने दोनों बाजुओं में सदैव एक झोला लटकाए रखता है। उसके झोले में उसके सस्पेंड होने का आदेश है, कुछ अन्य मुडे–तुडे कागज तथा वामपंथी मोर्चे के पम्पलेट जैसे पर्चे। उसका चेहरा हड्डियों से भरा हुआ तथा तनाव लिए हुए रहता है। उसके चेहरे पर नित एक नया निशान देखने को मिलता है। पर वह बेपरवादी से मलहम आदि लगाता रहता है या फिर वे पाव यों ही कुछ दिन में सुख जाते हैं।

सस्पेंड होने के बाद तो उसका चेहरा कई बार दुंच गया है। दफ्तर के बाबू या चपरासी मिलकर कभी भी उसकी इन हरकतों से परेशान होकर उसे पीट देते है। इसीलिए तो वह अपने पास डण्डा भी रखने लगा है।

वह पिछले तीन महीने से हमारे विभाग में सेक्रेटरी साहब से मिलने की फिराक में है, लेकिन उनकी पी0ए0 उसे मिलने ही नहीं देती है। वह सेक्रेटरी साहब से यह पूछना चाहता है कि उसे सस्पेंड क्यों किया गया है। सस्पेंड कर दिया है तो फिर पिछले दो महीने की बकाया तनख्वाह उसे क्यों नहीं दी जाती?

वैसे सेक्रेटरी साहब से न मिल पाने का तो उसको केवल भ्रम ही है। वरना सेक्रेटरी साहब सारी स्थिति से स्वयं परिचित हैं। वे स्वयं ही चन्दन उर्फ समाजवाद से नहीं मिलना चाहते।

किसी ने उससे कह दिया कि वह अपनी मांगो को लेकर भूख हड़ताल पर बैठ जाए। उसका कहना है कि जायज मांग के लिए भूख हड़ताल क्यों की जाये। अपने ही देश में भूखा रहना पाप है। दफ्तर का फर्ज है कि वह मेरा काम करे। देखता हूँ कितने दिन तक नहीं करेंगे। सच कहता हूँ जल्दी ही क्रांति होने वाली है, पूंजीपतियों को समाप्त कर दिया जायेगा। तब मेरी ही तो सरकार आएगी। लाल झण्डे की सरकार,

मजदूरों की सरकार, तब तो समाजवाद आएगा न। इतना कह कर वह तालियां पीटकर जोरों से हंसने लगता है और अपना डण्डा घुमाते हुए दफ्तर के किसी कमरे में घुस जाता है।

चन्दन उर्फ समाजवाद को गुस्सा कुछ अधिक ही आता है। तब ही तो उसने एक दिन अपने दफ्तर के बाबू के सिर में डण्डा जमाकर लहुलुहान कर दिया था। उस दिन सारे बाबू लोग इसके विरोध में दफ्तर से बाहर आ गए थे। उनका कहना था कि उनकी सुरक्षा की व्यवस्था की जावे। अकेला चन्दन उर्फ समाजवाद दफ्तर में कोई कौतुक खड़ा करके हड़ताल करा देता है।

जब लोग हड़ताल कर देते है तो चन्दन उर्फ समाजवाद को बहुत दुःख होता वह जोरो से चिल्लाता है – 'देशवासियों, ये लोग हरामखोर हैं। काम नहीं करना चाहते। ये लोग देश के दुश्मन हैं और समाजवाद को नहीं आने देना चाहते। ये सब पूंजीपति हैं और समाजवाद से डरते हैं।''

उसके इस तरह चिल्लाने पर दफ्तर के बिजिलेंस फोर्स के तीन चार आदमी उसे पकड़कर बाहर धकेलते हैं। लेकिन यह थोड़ी ही देर बाद बीड़ी फुंकता हुआ वहीं–कहीं आसपास घूमता नजर आता है।

एक दिन कोई विरोधी दल का नेता–कर्मचारी संघ की बैठक को सम्बो. धित कर रहा था, वह बड़ी तन्मयता से उसे सुन रहा था। बीच–बीच में शोर होने पर वह सबको शांत रहने की अपील करता था। एक बार ऐसी स्थिति आई कि उसके ना करने पर भी उसके पास बैठे कर्मचारियों के चुप न होने पर उसने भीड़ पर ताबड़ू–तोड़ डण्डे बरसाना शुरू कर दिया। इस पर भीड़ ने उसे बुरी तरह मारा और पुलिस उसे पकड़ कर ले गई।

बाद में पुलिस ने उसे छोड़ दिया। उसे कोई हाफमेड कहता है तो कोई क्रेक। कुछ लोग उसे वामपंथी विचारधारा से पीड़ित नक्सली करार देते है। कुछ लोग उस पर सहानुभूति प्रकट करते हुए गंभीर मुद्रा में कहते पाये जाते हैं –''आदमी कितना बढ़िया था। इस शहर के कम्युनिष्ट कार्यकर्ताओं ने इसके विचार दूषित कर दिए हैं। वह अप. ने–आपको नहीं सभाल पाया, तभी तो पगलाया फिरता है। उसे समझने की कोई तैयार नहीं है।

पिछले कुछ दिनों पूर्व चन्दन उर्फ समाजवाद मेरे पास आया और बोला– ''बाबूजी चालीस रूपये दे दीजिए। कल से खाना नहीं खाया हूँ। हमें चाय पीनी हैं, समाजवाद नहीं आने तक तो ऐसे ही चलेगा। ''मैंने उसे चालीस रूपये देकर विदा किया। इसके थोड़ी देर बाद सुनने में आया कि चन्दन उर्फ समाजवाद ने चाय वाले के बर्तन उठाकर फेंक दिए हैं और उसे होटलवालों ने मिलकर खूब पीटा है। इस देश में चन्दन उर्फ समाजवाद कभी भी पिट जाता है।

एक दिन मैंने हिम्मत करके उसे अपने पास बुलाया और समझाते हुए कहा देखो– ''चन्दन, यदि तुम ये सारी हरकतें बंद करने का वचन दो तो तुम्हारी नौकरी पुनः बहाल की जा सकती है।''

वह बोला–''क्या बात करते हैं आप। मैंने व्यक्तिगत लाभ के लिए कभी कुछ नहीं किया है। मैं तो अपने सभी भाइयों के हित को लेकर चलता हूँ। नौकरी तो इन्हें लेनी ही होगी। समाजवाद आया और सब कुछ ठीक हो जाएगा।'' इतना कहकर खींसे निपोरता हुआ वह दफ्तर की सीढ़ियों की तरह भाग गया।

इसके दूसरे दिन चन्दन उर्फ समाजवाद दफ्तर में देखने को नहीं मिला। बाद मालूम हुआ कि उसे किसी ने खाने में कुछ मिलाकर खिला दिया, जिससे उसके पडोसी उसे सरकारी अस्पताल में भर्ती करवा आए है। यहां तक सुना कि यदि यहां ठीक हो गया तो उसे इसके बाद मेंटल हॉस्पिटल में भर्ती करवा दिया जावेगा। मेरी आंखों में बार–बार समाजवाद का वह हमशक्ल घूम रहा था।

वह जिंदगी ही क्या?

जिसने न सीखा हो टक्करों से
उस शख्स को कोई गिरा
नहीं सकता ,
जिसने चलना सीखा हो
ठोकरों से I
सीख उन पत्थरों से जो
घिसता है निरंतर लहरों से
नहीं खिसकता एक इंच भी
अडिग रहता है दृढ़ता से
जिसका इरादा हो खड़े रहना
नहीं डरता थपेड़ों से,
कौन दे सकता टक्कर उसे
जो डरता नहीं तूफ़ानों से,
उस शख्स को कोई गिरा
नहीं सकता
जिसने चलना सीखा हो
ठोकरें से I
कामयाबी जो मिली तूझे
अहसान मान उन चोटों का
कृतज्ञ हो उन सदमों का
जो मिला तुझे धोखों से
मिलता न मिसाइल मैन हमें
जिसका जीवन भरा न होता
ठोकरों से
गर खाई न होती ठोकर
उसने
न मिलता विश्व का अनुपम
उपहार भारत को,
उस शख्स को कोई गिरा
नहीं सकता
जिसने चलना सीखा हो
ठोकरों से ....

निर्मला कुमारी
1A/8 यमुना नगर , नैनी,
प्रयागराज उत्तर प्रदेश

चित्र मे डॉ रामदरश मिश्र जी, उनके और मेरे बीच मे उनकी धर्मपत्नी सरस्वती जी, मै शशिबिन्दु नारायण मिश्र, मेरी दाईं ओर हैं उनकी सबसे छोटी सुपुत्री प्रतिष्ठित लेखिका डॉ स्मिता मिश्र जी तथा एकदम बाईं ओर हैं सुमित शुक्ल जी

शताब्दिसाहित्यकार डॉ रामदरश मिश्र

शशिबिन्दुनारायण मिश्र

रचनाएँ जीवन के उद्देश्य को सँवारती हैं, व्यापकता और सार्थकता प्रदान करती हैं, पर जो रचनाएँ शासन द्वारा, सरकारों द्वारा या बाज़ार द्वारा नियंत्रित होती हैं, वे जीवन के उद्देश्य को कभी भी सँवार नहीं पाती हैं,विस्तार नहीं दे पाती हैं। एक खतरा साहित्य के लिए यह भी है कि छपास की अतिशय भूख पत्र-पत्रिकाओं मे या पुस्तक के रूप मे, ऐसे जो रचनाकार हैं, जिन्हें अपनी ही रचना मे अपने द्वारा प्रयुक्त शब्द के बारे मे भी ठीक-ठीक जानकारी नहीं होती है, उनकी पुस्तकें छप जाती हैं, ताज्जुब तो यह है कि कुछ साहित्यकार कहे जाने वाले भले मानुष मुख्य-अतिथि बनकर प्रशंसा के पुल भी बाँध आते हैं। यह भी साहित्य के लिए एक खतरा है। पर यह भी सही है कि नयी पीढ़ी मे नये भाव-बोध के साथ अच्छा लिखा भी जा रहा है और उनकी उचित प्रशंसा करने वाले ईमानदार समीक्षक-रचनाकार आज भी देखने मे आते हैं, संक्रमण के दौर मे यह साहित्य के लिए अत्यन्त शुभ भी है।

रामदरश मिश्र ने अपने पूरे जीवन मे कभी किसी की झूठी या मुँह-देखी प्रशंसा नहीं की और न तो अपने पूरे जीवन मे अपने से श्रेष्ठ या किसी बड़े रचनाकार से झूठी प्रशंसा की चाह रखी । जिनके गम्भीर चिंतन, मनस्विता, साधुता, मनुष्यता से प्रभावित रहे, उनके प्रति रामदरश जी सदैव कृतज्ञ रहे, यथा - पं. गणेश दत्त मिश्र

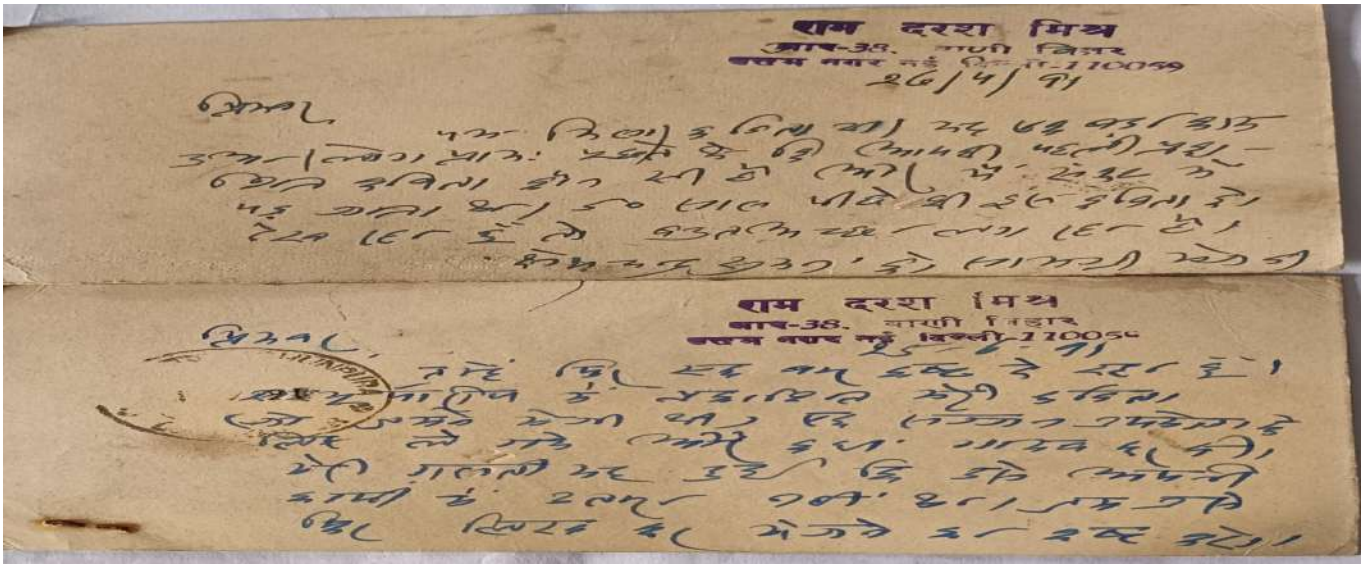

'मदनेश', रामगोपाल शुक्ल, बिकाऊ पंडित और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि। रामदरश जी ने खुद ही लिखा है -"निश्चित ही याद रहने के लिए ऐसे ही लोग रह जाते हैं जो अनजाने ही अपनी प्रतिभा और व्यक्तित्व का इतना प्रभाव छोड़ जाते हैं कि उन्हें भुलाया नहीं जा सकता है।"

छात्र जीवन मे कक्षा 4 मे पढ़ते हुए पहली कविता लिखकर गाँव के बगल के कवि 'मदनेश' जी से मार्गदर्शन के साथ आशीर्वाद की बात रही हो या एम. ए. हिन्दी पढ़ाई के बाद रिसर्च के दिनों मे मंच से आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की उपस्थिति मे कविता पाठ का अवसर हो। इन सब घटनाओं ने रामदरश मिश्र के जीवन को बदलने मे, गति देने मे महती भूमिका निभाई है। रामदरश मिश्र ने अपने प्रारम्भिक काव्य-गुरु के रूप मे पं. गणेश दत्त मिश्र 'मदनेश' को सदैव स्मरण किया है, 'साहित्य का जीवन' शीर्षक संस्मरण के बहाने अपनी श्रद्धा निवेदित करते हुए वे लिखते हैं-"मदनेश' जी सनेही स्कूल के कवि थे, संस्कृत साहित्य के भी प्रकाण्ड पंडित थे, छंदों मे रचनाएँ करते थे, सदैव मस्त और निरुद्वेग रहते थे।" 'मदनेश' जी की विद्वता के पीछे क्या था उसके सम्बन्ध मे रामदरश मिश्र जी का कथन है - "अपना सौंदर्य बोध तृप्त करने के लिए .....के साथ एक रूमानी लगाव स्थापित कर लेते ..... उस लगाव के पीछे भोगवाद नहीं, बल्कि भावनात्मक स्निग्धता और उदारता से भरा मानवीय व्यवहार है।" उच्च शिक्षा की पढ़ाई के दौरान और उसके बाद आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी को

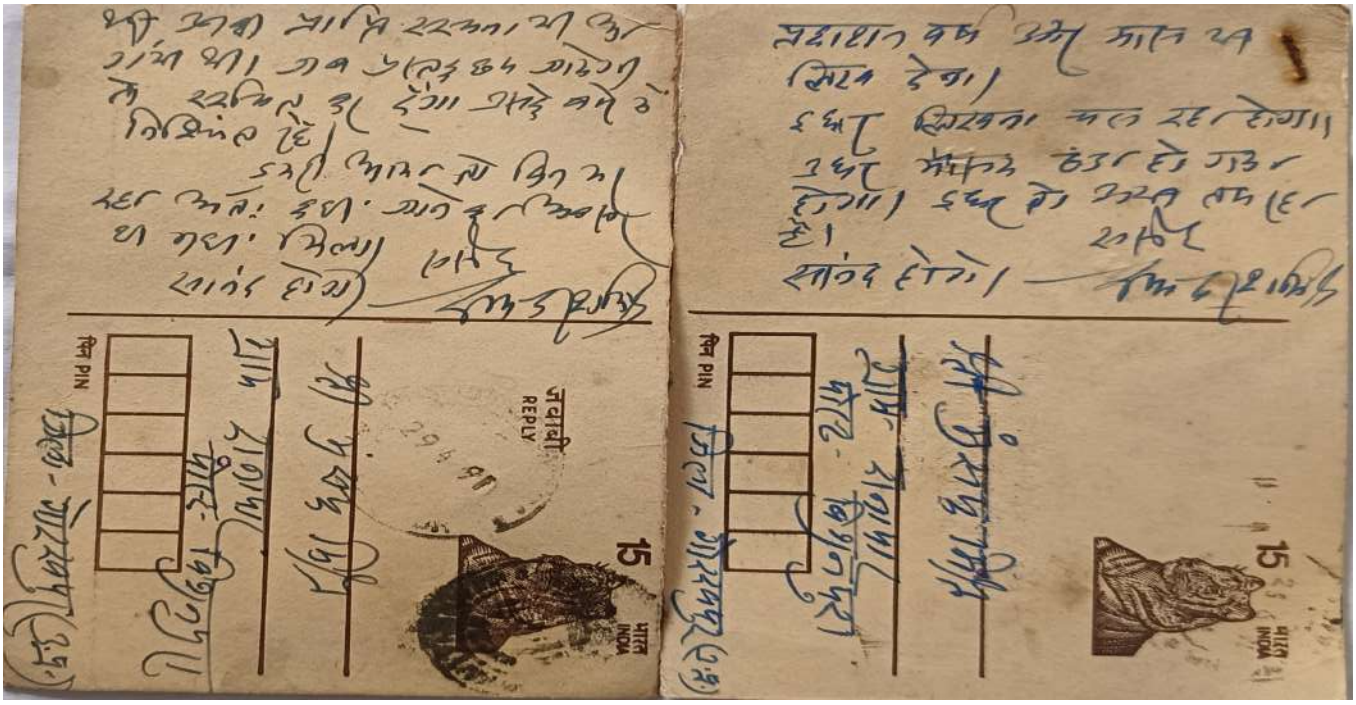

अपना आदर्श गुरु मानते हुए 'सर्जना ही सत्य है' शीर्षक का संस्मरण लिखकर उन्हें खूब आदर दिया है। रामदरश जी बताते हैं कि बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय मे जब उन्होंने पहली बार मंच से तन्मय होकर सस्वर गीत पढ़ा था तो -आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी अगली कतार मे श्रोता के रूप मे बैठे थे और रामदरश मिश्र द्वारा उच्च कोटि का भावपूर्ण गीत पढ़ने की अदा को गीत के लय के साथ सिर हिलाते हुए भावविभोर होकर सुन रहे थे। बाद मे आचार्य द्विवेदी ने रामदरश मिश्र की पीठ थपथपाई थी और साहित्य मे बहुत ऊँचाई प्राप्त करने का आशीर्वाद दिया था।

हर रचनाकार की कोई विशेष रचना उसके लिए विशेष पहचान बन जाती है। संसार के सभी बड़े रचनाकारों के साथ ऐसा होता है।

रामदरश मिश्र जी से दर्जनों बार व्यक्तिगत रूप मे मिलने, उन्हें सुनने और उनसे मार्गदर्शन / आशीर्वाद पाने का मुझे अवसर मिला है। गोरखपुर विश्वविद्यालय के दीक्षा भवन मे 23 दिसम्बर 1993 को आकाशवाणी गोरखपुर की ओर से आयोजित अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन मे मंच से रामदरश जी को निकट से सुनने का भी अवसर मिला है,मंच पर देश के अनेक दिग्गज कवि मौजूद थे। मंच पर आकाशवाणी गोरखपुर के तत्कालीन केन्द्र निदेशक नयी कविता के विशिष्ट हस्ताक्षर डॉ उदयभान मिश्र ने उक्त कवि सम्मेलन की रूपरेखा और उसकी गोरखपुर मे महत्ता पर विस्तृत प्रकाश डाला था। मंच का सफल और शानदार संचालन तत्कालीन सांसद और हिन्दी के उस समय के बड़े कवि बालकवि वैरागी ने किया था। किसी बड़े काव्य-मंच का वैसा सफल और शानदार मंच-संचालन अब तक नहीं सुनने को मिला। रामदरश मिश्र जी अपने जीवन के कुछ यादगार कवि-सम्मेलनों मे गोरखपुर के उस कवि-सम्मेलन को भी हमेशा याद करते हैं। जून 2020 मे जब मै दिल्ली गया था तो परिवार मे उनकी धर्मपत्नी आदरणीया सरस्वती जी, उनके दूसरे सुपुत्र शशांक जी और छोटी सुपुत्री डॉ स्मिता जी भी मिलीं, दिन भर हम लोग साथ-साथ रहे। गाँव-घर की ढेर सारी बातें होती रही। डॉ रामदरश मिश्र का यह कहना कि तुम्हारी उपस्थिति से लग रहा है कि मै अपने गाँव की मिट्टी को छू रहा हूँ। मुझे बड़ा अच्छा लगा। डॉ मिश्र की धर्मपत्नी सरस्वती जी का यह कहना कि -" बेटा ! मेरे यहाँ ऐसा किसी दिन नहीं होता है कि 'मदनेश' जी की चर्चा न होती हो। कवि जी (रामदरश मिश्र जी) ने 'मदनेश' जी पर कहानी भी लिखी है, संस्मरण भी लिखा है, अपनी आत्मकथा मे भी पूरा जिक्र किया है और अनेक साक्षात्कारों के अवसरों पर भी हर बार आदर से 'मदनेश' जी को स्मरण किया है, ख़ास तौर पर प्रकाश मनु द्वारा लिये गये इंटरव्यू मे। प्रकाश मनु ने भी रामदरश जी से कई प्रश्न 'मदनेश' जी पर केंद्रित होकर पूछे। आदरणीया सरस्वती जी ने 88 वर्ष की उम्र मे भी दोपहर के भोजन मे स्वयं 'अदौरी' (कोहड़ौरी) की बहुत ही स्वादिष्ट सब्जी बनायीं और परस कर स्वयं खिलाई भी। उनके द्वारा दिया गया ममत्व यादगार बन गया है।

इस मुलाकात मे आदरणीय डॉ रामदरश मिश्र ने चर्चा क्रम मे गोरखपुर वाले उक्त कवि-सम्मेलन मे बालकवि बैरागी के संचालन की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि - मेरी उपस्थिति मे किसी बड़े काव्य-मंच का इतना उत्कृष्ट और यादगार संचालन किसी ने नहीं किया। सचमुच मे बालकवि बैरागी ने अपने शानदार संचालन में रामदरश मिश्र के लिए ऐसा वातावरण सृजित कर दिया था कि हजारों की संख्या मे उपस्थित श्रोता 'पिन ड्राप साइलेंट' की स्थिति मे थे। रामदरश जी ने अत्यन्त छोटी-छोटी तीन अतुकान्त कविताएँ (नयी कविता छंद की) पढ़ीं। तीनों कविताएँ गोरखपुर आने पर ही उन्होंने रची थीं। पहली कविता मुझे अब भी ज्यों की त्यों याद है (आप सब भी पढ़ें) --"चिड़िया उड़ती हुई कहीं से आयी / बहुत देर तक इधर-उधर भटकती हुई / अपना घोंसला खोजती रही / फिर थककर जली हुई ठूठ डाल पर बैठ गयी / सोचने लगी क्या आज जंगल मे कोई आदमी आया था?" कवि भविष्यद्रष्टा होता है। उन्होंने इस कविता मे मानवता के पतन को कितने सहज रूप मे और सलीके से रेखांकित किया है। आज हम सब मानवता के पतन को चारों ओर देख-सुन रहे ही हैं। रामदरश जी की कविता पर बालकवि बैरागी सहित अन्य कवि भी मंच पर खड़े होकर देर तक तालियाँ बजाते रहे। अगली कतार मे बैठे विश्वविद्यालय के अनेक सीनियर प्रोफ़ेसर्स भी खड़े होकर तालियाँ बजाते रहे, पीछे के और ऊपर-नीचे बालकनी मे बैठे हजारों श्रोताओं ने भी। मंच सहित समस्त श्रोताओं ने उसी कविता को रामदरश जी से दोबारा पढ़वाकर संतुष्टि पायी थी। बालकवि बैरागी ने अपनी अत्यन्त लोकप्रिय कविता 'अंधकूप" बहुत भावपूर्ण और रोचक ढंग से पढ़ी थी।

मुझे याद है मंच पर रामस्वरूप सिंदूर, रवीन्द्र भ्रमर, राजेन्द्र राजन, माधव मधुकर और गोरखपुर से एकमात्र कवि जगदीश 'अतृप्त' प्रभृति देश के बड़े कवि / गीतकार मंचस्थ थे। रामदरश जी ने मंच पर सीधे कविता पढ़ी थी और कविता पूरी होने पर अपने आसन पर चुपचाप बैठ गये। तीनों कविताएँ पाँच या छः मिनट मे समाप्त हो गयी थीं। कविता के अतिरिक्त मंच पर उन्होंने एक शब्द भी नहीं बोला। कवि सम्मेलन शुरू होने से पहले उन्होंने मंच पर बैठते ही श्रोताओं की नब्ज टटोल ली थी, मंच की गणित को भी भलीभाँति समझ लिया था। स्वयं उनके भीतर का चरम अनुशासन और मंच का अनुशासन उनमे परिलक्षित हो रहा था। अब ऐसा भला कहाँ देखने-सुनने को मिलता है किसी मंच पर।

हिन्दी गद्य-पद्य की समस्त विधाओं के सिद्ध रचनाकार, शताधिक ग्रन्थों के सर्जक, शताब्दिसाहित्यकार डॉ रामदरश मिश्र की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ग़ज़लों मे से एक है -"बनाया है मैने ये घर धीरे-धीरे"।

इसी ग़ज़ल के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शेर की एक पंक्ति 'जहाँ लोग पहुँचे छलांगें लगाकर' को मैने इस आलेख मे शीर्षक दिया है। रामदरश मिश्र पर एक आलेख लिखने का मन बहुत दिनों से था, जो अब पूरा हो रहा

है। रामदरश मिश्र जी 15 अगस्त 2024 को 100 वर्ष पूरे कर स्वस्थ, सद्गृहस्थ जीवन जीवन जीते हुए अपने जीवन के 101 वें वर्ष मे प्रवेश करेंगे । पं. विद्यानिवास मिश्र से शब्द उधार लेकर यदि हम कहें तो रामदरश मिश्र के गाँव डुमरी की अमराई मेरे गाँव रानापार की अमराई को छूती है। रामदरश मिश्र जी हमवतन हैं यह हम सबके लिए सौभाग्य की बात है, पर समूचे हिन्दी साहित्य के लिए भी यह गौरवशाली क्षण है कि वह सौ वर्ष स्वाभिमान के साथ स्वस्थ-प्रसन्न- रचनारत रहते हुए पूरे कर रहे हैं। यह समूचे हिन्दी साहित्य के लिए बेहद दुर्लभ संयोग है। रामदरश मिश्र की उक्त ग़ज़ल एक तरह से उनके जीवन का आत्मकथ्य है। उन्हें जीवन मे जो कुछ भी मिला है, वह बहुत धीरे-धीरे और अतिशय संघर्षों के बाद मिला है। उक्त ग़ज़ल समग्र रूप मे इस प्रकार है --

"बनाया है मैने ये घर धीरे-धीरे,
खुले मेरे ख़्वाबों के पर धीरे-धीरे।
किसी को गिराया न खुद को उछाला,
कटा ज़िन्दगी का सफर धीरे-धीरे।
जहाँ आप पहुँचे छलांगें लगाकर,
वहाँ मै भी पहुँचा मगर धीरे-धीरे।
पहाड़ों की कोई चुनौती नहीं थी,
उठाता गया यूँ ही सर धीरे-धीरे।
गिरा मै कहीं तो अकेले मे रोया,
गया दर्द से घाव भर धीरे-धीरे।
मिली क्या न मुझको ये दुनिया तुम्हारी,
मिली है मुहब्बत मगर धीरे-धीरे।"

प्राचीन काल से ही 'धीरे-धीरे' भारतीय संस्कृति का आधार रहा है। यह ग़ज़ल रामदरश मिश्र के जीवन का यथार्थ है। रामदरश मिश्र हिन्दी साहित्य मे निश्चित रूप से सज्जन और ईमानदार रचनाकार के रूप मे प्रतिष्ठित हैं। कोई भी रचनाकार जब बहुसंख्यक ईमानदार, संघर्षशील जन की पीड़ा को अपनी पीड़ा बना लेता है और उसे सार्थक शब्द देता है, तो वे शब्द सबको अपने लगने लगते हैं, वास्तव मे वही बड़ा रचनाकार होता है।

"आज की हड़बड़ी और आपाधापी के आक्रमण के विरुद्ध सबसे बड़ा सुरक्षा कवच 'धीरे-धीरे' ही है। 'धीरे-धीरे' एक-एक कदम सम्हाल कर उठाने वाला अलंघ्य ऊँचाइयों को आसानी से प्राप्त कर लेता है। दाएँ-बाएँ दोनों ओर संतुलन बनाए रखना, 'गला काट स्पर्धा' और 'शार्ट-कट' की धूर्तता के सहारे हड़बड़ी मे सबकुछ पा लेने वालों पर मन्द-मन्द मुस्कराते हुए चुपचाप अपना काम करते जाना रामदरश मिश्र की सहज विशेषता है। इसलिए उनको साहित्य प्रसव के लिए कुक्कुरों की तरह इधर-उधर मुँह मारने की जरूरत नहीं पड़ती है। मिश्र जी एक सहृदय- भावुक -कर्त्तव्यनिष्ठ अध्यापक, सुनागरिक और विश्वसनीय मित्र हैं। ..... लेखक होने के नाम पर अनैतिक होने का खुला लाइसेंस वे नहीं चाहते।..... 'धीरे-धीरे' उनके जीवन और कर्म की अन्त:सलिला है,जो सबको जुड़ाती है और सबके ताप हर लेती है।"1

हमारे यहाँ जल्दी के काम को शैतान का काम माना जाता है । संत कबीरदास की एक साखी है-

"धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा,ऋतु आये फल होय।।"

रामदरश मिश्र ने कबीर की इस साखी को जीवन मे उतार लिया है। आज की पीढ़ी मे धैर्य अर्थात् धीरे-धीरे नहीं के बराबर है। समय और धीरे-धीरे की गम्भीरता को समझना और जीवन मे उतारना आसान नहीं है। डॉ रामदरश मिश्र ने इसे समझा भी है और जीवन मे उतारा भी है। संस्कृत मे भी कहा गया है कि -"सहसा विदधीत न क्रियाम्।" अर्थात् अचानक,आवेश, हड़बड़ी, जल्दीबाजी मे कोई कार्य नहीं करना चाहिए। अब तो साहित्य मे भी यह हड़बड़ी खूब दिखाई दे रही है, साहित्य-सेवी लोग भी इस अधीरता के खूब शिकार हैं। जल्दी से जल्दी किताब छपवाना, उसके लोकार्पण के बहाने मुख्य अतिथि के कद के अनुरूप चर्चा करवाना और स्वयं चर्चा मे बनने की व्यग्रता देखते ही बनती है, भले ही रचना अर्थहीन हो, दो कौड़ी की हो।

"जीवन के किसी भी क्षेत्र मे शिखर-स्तर के लोगों की जिन्दगी जनता की ज़िन्दगी नहीं होती।जिस प्रकार आज के बड़े-बड़े सम्राटों के कार्य-कलाप इतिहास के लिए प्रासंगिक नहीं रह गये हैं और हमे साधारण जनता के जीवन तथा उसके दु:ख-दर्द को महत्त्व देने लगे हैं वैसे ही साहित्य के क्षेत्र मे भी आयातित संवेदना के धनी महानगरों मे अनेक आधुनिक सुविधाओं के बीच संघर्ष-रहित जीवन व्यतीत करने वाले नामी-गिरामी साहित्यकारों की ज़िन्दगी भी हमारे लिए प्रेरक और प्रासंगिक नहीं रह गयी है। उनकी तुलना मे अभावों से जूझते हुए अपनी अपराजेय जिजीविषा के बल पर अपना मार्ग बनाने वाले लोक-जीवन की ऊष्मा से दीप्त सामान्य साहित्यकारों की ज़िन्दगी का महत्त्व हमारे लिए अधिक है। .... गाँव की गंध से रामदरश मिश्र के मन और प्राण निर्मित हुए हैं। गाँव की अक्षय गंधा , अक्षय रूपवती, अक्षय रसवती प्रकृति से उनकी सौन्दर्य चेतना को आधार मिला है।"2

जो लोग भी मूलतः गाँव से हैं या जिनकी आत्मा गाँव से जुड़ती है, उन्हें डॉ रामदरश मिश्र की आत्मकथा सहित उनकी अनेक कहानियों / उपन्यासों को पढ़ने से लगता है कि वह हमारी / आपकी या हमारे-आपके गाँव या आसपास की कहानी है।

रामदरश मिश्र के समग्र साहित्य की जमीन उनका गाँव ही है, वहीं से उनके साहित्य का आदिस्रोत फूटता है और यह क्रमशः आगे बढ़ता जाता है। उनके साहित्य की बुनियाद उनका गाँव और आसपास का वातावरण है । "रामदरश मिश्र के सारे सर्जनात्मक लेखन मे अपने कछार अञ्चल की धरती की पकड़ है। मूल्य दृष्टि की जड़ें उनके गाँव मे ही हैं जिसे उन्होंने अपने जीवन के प्रारम्भिक काल मे भरपूर जिया था। गाँव को भी वे लगातार उसके परिवर्तनशील रूप मे पकड़ने की

कोशिश करते रहे हैं।"3

डॉ रामदरश मिश्र का जन्म गोरखपुर के जिस कछार मे हुआ है,उसी कछार मे मेरा भी हुआ है। उनका गाँव डुमरी मेरे गाँव रानापार से लगभग मिला हुआ है। रामदरश मिश्र जी के पिता रामचन्द्र मिश्र मेरे प्रपितामह मदनेश जी के पास अक्सर सुबह-शाम आते रहते थे। रामदरश मिश्र जब पहली बार कक्षा 4 मे पढ़ते हुए अपनी पहली कविता लिखकर मार्गदर्शन के लिए 'मदनेश' जी के पास गये थे तो 'मदनेश' जी ने उनका परिचय पाकर उनसे यही कहा था कि -"अच्छा-अच्छा ! तुम चन्नर भाई के बेटे हो न ! "

डुमरी की शत-प्रतिशत जरूरतें रानापार से और रानापार की भी अधिकांश जरूरतें डुमरी से पूरी होती हैं। स्नातक की पढ़ाई से लेकर उम्र के 100 वर्ष पूरे होने तक अनेक शहरों मे रामदरश जी सपरिवार रहे हैं, लेकिन उनकी बहुत सी कविताएँ , कहानियाँ , उपन्यास उनके जमीन और घर से जुड़ी हुए हैं। उनकी एक कविता है -'परकटी धूप' , उसकी कुछ पंक्तियाँ देखिए --"कहीं से छूटकर / गिर पड़ी है एक मुट्ठी धूप / परकटे पंछी सी चुपचाप / मेरी दीवार के ऊपर / और वहीं पड़ी-पड़ी तड़प रही है।" रामदरश मिश्र का बचपन गाँव के खुले और उन्मुक्त वातावरण मे बीता था। पढ़ाई के बाद नौकरी से लेकर बाद के शहरी जीवन के वातावरण मे वह खुलापन और उन्मुक्तता उन्हें कदापि नहीं मिल सकी। कवि उक्त कविता के बहाने अपने परिवेश मे वही खुलापन और उन्मुक्तता खोज रहा है।

"रामदरश मिश्र जी को ग्रामीण संस्कृति स्फूर्ति देती है। वे मनुष्य को अपराजेय का बोध कराने वाले प्रतिबद्ध कवि हैं ।..... इनकी लेखनी समाज के पुनरुत्थान का प्रमुख मार्ग है।गाँव की मिट्टी से जुड़ा यह कवि बार-बार बताता है कि मनुष्य की यात्रा पराजय स्वीकार करने वाली नहीं है वह अपराजेय है। रामदरश मिश्र कवि होने को अपने सामाजिक दायित्व की भरपाई नहीं मानते,इस कारण ही इनकी रचनाओं की भाषा ईमानदार है।....रामदरश मिश्र ने कविता की कई विधाओं को रचा है, रचाया है, गीत, ग़ज़ल, और मुक्त कविता। उनकी बड़ी कविताएँ प्रबन्ध की दृष्टि से उतनी ही गठी हुई हैं जितनी उनकी छोटी कविताएँ सघन।"4

रामदरश मिश्र के मझले बड़े भाई रामनवल मिश्र, जो उनसे दो साल उम्र मे बड़े थे, अक्सर कहते थे -"हम लोग अभावग्रस्त गाँव के अभावग्रस्त परिवार के बेटे थे। न जाने कितनी विपत्तियों / आपदाओं को हम सबने बचपन मे जीया है, लेकिन हम लोग इन आपदाओं से कभी पराभूत नहीं हुए।" प्राइमरी स्कूल मे समय से शुल्क न जमा करने के कारण रामदरश जी पढ़ाई के दौरान विद्यानिवास मिश्र से साल-दो साल पीछे हो गये थे।

रामदरश मिश्र उन आपदाओं को भीतर ही भीतर मस्ती से जीते रहे । रामदरश जी बचपन से ही संवेदनशील रहे हैं। जो कमजोर है, पीड़ित है, शोषित है, उसके प्रति उनके मन मे गहरा लगाव रहा है। व्यक्ति के बचपन मे कितना कुछ छिपा होता है, जिसे लोग देख नहीं पाते हैं, उसकी अनंत सम्भावनाओं की उपेक्षा हो जाती है। रामदरश मिश्र के साथ जीवन भर ऐसा हुआ। बहुत बार वे उपेक्षा के शिकार हुए, बावजूद इसके उन्हें वह सबकुछ मिला लेकिन 'धीरे-धीरे', जिसके वे सच्चे अर्थों मे हकदार थे। जिन्होंने रामदरश मिश्र के भीतर की अपार सम्भावनाओं को शुरू से अंत तक पहचाना, रामदरश जी उनके जीवन भर ऋणी रहे, ऐसे अतिविशिष्ट चरित्रों को उन्होंने कविताओं , कहानियों , संस्मरणों , उपन्यासों और अपनी आत्मकथा मे बहुत बार आदर से याद किया है। रामदरश मिश्र अपनी सज्जनता, सीधेपन के कारण बहुत बार जाँलों मे फँसे, पर समय ने उन्हें समय-समय पर बाहर भी निकाला, शायद रचनाओं मे और व्यक्तित्व मे सौ फीसदी ईमानदारी के कारण।

रामदरश मिश्र अपनी लम्बी रचना यात्रा मे किसी वाद, किसी छोटे-बड़े साहित्यिक गुट अथवा किसी आंदोलन के झण्डे के पिछलग्गू कभी नहीं बने, लेकिन अपने समय और समाज की यथार्थता और चेतना से कभी असम्पृक्त भी नहीं हुए। रामदरश मिश्र के समकालीन अनेक बड़े आलोचकों ने गोल बनाकर उन्हें हमेशा हाशिए पर धकेलने की कोशिशें की,कारण कि वे न कभी किसी वाद के शिकार हुए,न किसी गोल मे गोलबंद हुए और न तो किसी के पिछलग्गू बने । हमेशा मौलिकता को जीवन का हिस्सा बनाया। अनुभव कभी उधार नहीं लिया। 1991 मे गोरखपुर मे 'अभिव्यक्ति' साहित्यिक- सांस्कृतिक संस्था के उद्घाटन अवसर पर मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए उनका बीज वक्तव्य था --"अनुभव कभी उधार नहीं लिया जाता।" उक्त 'अभिव्यक्ति' साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था आज भी गोरखपुर मे अपने उद्देश्य के अनुरूप गतिशील है,जिसका मै महासचिव और संयोजक हूँ तथा मेरे आत्मीय और विशिष्ट सहयोगी / मित्र जयप्रकाश नायक उसके अध्यक्ष हैं।

गुट तैयार करने वाले आलोचकों की घिनौनी हरकतें रामदरश मिश्र जी को कभी हतोत्साहित नहीं कर सकी। रामदरश मिश्र ने जिन्हें दिल्ली मे पहले प्रोत्साहित किया, सहयोग किया , स्थापित हो जाने के बाद उन्हीं महास्वार्थी, संकीर्ण मानसिकता के तथाकथित महान् आलोचकों ने ही रामदरश जी को हाशिए पर रखने की पुरजोर कोशिशें की। रामदरश मिश्र जी को इसके लिए अन्तिम दशक मे साहित्य अकादमी को एक तीखा पत्र भी लिखना पड़ा था,वह पत्र अख़बारों का हिस्सा भी बना था। मैने उस पत्र को मूल रूप मे पढ़ा है।

मार्च 1991 मे रामदरश जी जब गोरखपुर आये थे, तो गाँव डुमरी भी गये थे, गोरखपुर मे तो भेंट हुई,पर विश्वविद्यालय की वार्षिक परीक्षाओं के चलते मै गाँव न जा सका था। रामदरश मिश्र जी की 'चाँद' शीर्षक की पहली कविता गोरखपुर से प्रकाशित होने वाली 'सरयूपारीण' पत्रिका के फरवरी 1941 अंक मे छपी थी। उस कविता की प्रारम्भिक दो पंक्तियाँ मुझे याद आ रही हैं (आप भी पढ़ें)--

"रजनी के इस शांत प्रहर मे कहो चंद्र!क्यों घूम रहे ?
नील गगन के अञ्चल को कमल वदन से चूम रहे।।" रामदरश जी की शुरूआती कविताओं मे छायावादी काव्यधारा का प्रभाव साफ़ झलक रहा है लेकिन समय यात्रा मे बदलता हुआ यथार्थ उनके अनुभव और दृष्टि मे समाकर उनकी रचनाओं मे उतरता रहा है।

सरयूपारीण पत्रिका का वह अंक मेरे पास था। रामदरश जी को इसकी जानकारी हुई तो वह उसे प्राप्त करना चाहते थे। कई बार इसके लिए उन्होंने मुझसे पत्र-व्यवहार भी किया। पत्र-व्यवहार मेरे बचपन के 'मुंसफ' (मुंसिफ) नाम से हुआ है। बचपन मे गाँव और घर पर मुझे लोग 'मुंसिफ' नाम से ही जानते थे, अध्यापक होने के पहले तक गाँव मे लोग मेरे वास्तविक नाम से अपरिचित ही रहे, बचपन का वही मेरा पुकार नाम रहा , मुंसफ (मुंसिफ) नामकरण के पीछे का वृत्तांत पूर्व मे 'मदनेश' जी के संस्मरण मे उल्लिखित कर चुका हूँ, वह संस्मरण भी 'मदनेश' जी की 134 वीं जयंती के अवसर पर 'संपर्क भाषा भारती' के दिसम्बर 2023 अंक मे प्रकाशित हो चुका है। रामदरश मिश्र जी के मुझसे दर्जनों बार पत्र-व्यवहार हुए हैं। एक पोस्टकार्ड-पत्र यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है। जो द्रष्टव्य है --

रामदरश मिश्र की ईमानदारी, सज्जनता और स्वाभिमान उनकी विशिष्ट पहचान बन चुकी है। वैसे रामदरश जी तीन दर्जन से अधिक गीत-ग़ज़ल- काव्य संग्रहों के रचयिता हैं और लगभग पाँच दर्जन गद्य की विविध विधाओं मे उनकी प्रकाशित रचनाएँ हैं। डॉ मिश्र ने विभिन्न विधाओं के साथ उर्दू विधा ग़ज़ल को भी अपनी अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनाया है। "'बाजार को निकले हैं लोग' डॉ रामदरश मिश्र का प्रथम ग़ज़ल संग्रह है, जो कि 1986 मे प्रकाशित हुआ था। 'बाजार को निकले हैं लोग' संग्रह की ग़ज़लों मे रामदरश मिश्र ने युगीन विसंगतियों एवं अवाम की तकलीफों को व्यक्त किया है साथ ही आज के मनुष्य के एकाकीपन की पीड़ा, स्वार्थी शहरी संस्कृति मे व्याप्त घुटन और गाँव की स्निग्ध पुकार उनकी ग़ज़लों मे सुनाई पड़ती है। ..... मिश्र जी सफल गीतकार हैं, मात्राओं की जगह लय पर विशेष ध्यान देते हैं। आपने अपने ग़ज़ल-संग्रह मे कई उर्दू-बहरों का सफलतापूर्वक निर्वाह किया है।"5

डॉ रामदरश मिश्र का पाँचवाँ उपन्यास 'अपने लोग' 1976 मे प्रकाशित हुआ था । प्रकाशित होते ही उन्होंने सबसे पहले 'अपने लोग' उपन्यास अपने पूज्य गुरुदेव आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी को पठनार्थ / समीक्षार्थ उपलब्ध कराया। उपन्यास पढ़कर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने डॉ रामदरश मिश्र जी को 26.06.1976 को पत्र लिखा था,जिसकी कुछ पंक्तियाँ यहाँ दी जा रही हैं (पढ़िए)---"प्रियवर ! 'अपने लोग' पढ़ गया हूँ। गोरखपुर को बहाना बनाकर तुमने इस समूचे पूर्वाञ्चल को जीवन्त रूप मे चित्रित कर दिया है। इसके पात्र बिल्कुल परिचित जान पड़ते हैं । संज्ञा जैसे पात्र की सृष्टि करके तुमने मानवी रूप मे एक ऐसी देवी को चित्रित किया है जिसे साधारणतः यथार्थवादी लोग भूल जाया करते हैं। ..... सन् 60 के आस-पास की चारित्रिक शिथिलता को इतने यथार्थ और जीवन्त रूप मे शायद अब तक चित्रित नहीं किया गया। तुमने निस्संदेह एक बड़े अभाव की पूर्ति की है। मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। मेरी बधाई स्वीकार करो।" शुभेच्छु

हजारी प्रसाद द्विवेदी

'अपने लोग' उपन्यास शिल्प और संवेदना के स्तर पर पूर्ववर्ती उपन्यासों से इतर अपनी निजी पहचान बनाता है। 'अपने लोग' शीर्षक व्यंग्यात्मक है। जो अपने समझे जाते हैं, वे काफी स्वार्थी और कुटिल हैं। इसमे लेखक ने समाज के पूरे यथार्थ को उकेरते हुए शिक्षा और राजनीति के क्षेत्र की स्वार्थपरायणता के साथ ही सांस्कृतिक अपकर्षण को भी समेटने का सार्थक प्रयास किया है।

अंत मे डॉ रामदरश मिश्र को समर्पित इस कविता से अपनी बात और आलेख समाप्त करता हूँ --

"बुरा न मानिए जितने सीधे हैं / उतने ही मुश्किल हैं आप रामदरश जी / जितने सीधे हैं उतने ही जरा टेढ़े ... ऊबड़-खाबड़ गूढ़-निगूढ़ / , ##########

कहाँ से आते हैं ये अकूत खजाने गुरुदेव ! / एक सीधे-सादे आदमी मे / कहाँ से आता है इतना दम ? /अपनी शर्तों पर जीने की ताकत? / कहाँ से यह निपट देहाती नदी के से मोहक कटावों वाली भाषा / जो बगैर किसी कोशिश के हम हड़बड़िए / लोगों की हड़बोंग पकड़ लेती है / सीधी-सादी बातों मे दे जाती है अंदर तक का पता ,

/

मैली बैंचों के चौगिर्द / एक भरी-पूरी दुनिया रचती बातें /

बातों मे आप होते हैं तो पता नहीं कितने युग / एक लड़ी मे बँधकर पास आ जाते हैं / कालिदास बन जाते हैं हमारे समकालीन / ठहाका लगाते आचार्य द्विवेदी हमें हिन्दी पढ़ाने लगते हैं। / हालाँकि जानता हूँ -तजुर्बे से.... /

बहुत सीधा होता है जो आदमी / वह मिलता है अक्सर देर से / मगर मिलता है तो छोड़कर जाता नहीं है / चाहे दुनिया चाहे, जमाना चाहे / तब नहीं .... कब्भी नहीं कब्भी नहीं ।"6

संदर्भितालेख सूची --

1-'गहरी नैतिकता की ऊर्जा' - डॉ रामदेव शुक्ल
2-'सहचर है समय' - आचार्य रामचन्द्र तिवारी
3- 'रामदरश मिश्र : एक परिचय - डॉ स्मिता मिश्र
4-'नदी एक रोशनी की' - पं. विद्यानिवास मिश्र
5-'ग़ज़लकार रामदरश मिश्र' - सुभाष भदौरिया
6-'हमारी दुनिया मे एक सीधा आदमी' - प्रकाश मनु